शास्त्रविज्ञान ग्रंथमाला—१

हिंदी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा



लेखक

डा० कैलाशचंद्र भाटिया

पी-एच० डी०, डी० लिट्०

हिंदी विभाग,

मु० विश्वविद्यालय, अलीगढ़



नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०२७ वि०
११०० प्रतियाँ





मूल्य : [illegible] रुपए

मुद्रक
शंभुनाथ वाजपेयी
नागरी मुद्रण, वाराणसी

विश्वविश्रुत भाषाविद्
नेशनल प्रोफेसर
तथा
अध्यक्ष
साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या
की
सेवा में
सादर समर्पित

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा अपनी शास्त्रविज्ञान ग्रंथमाला में भाषा एवं शास्त्र-विषयक अनुशीलनपरक ग्रथों का प्रकाशन करती आई है। इस ग्रंथमाला में हिंदी व्याकरण, व्यंजना और नवीन कविता, हिंदी शब्दानुशासन, रसमीमांसा, अर्थतत्व की भूमिका, लक्षणा और उसका हिंदी काव्य में प्रसार, सूत्रशैली और अपभ्रंश व्याकरण एवं हिंदी भाषा पर फारसी अंग्रेजी का प्रभाव जैसे गंभीर ग्रंथो का प्रकाशन किया जा चुका है। इस ग्रंथमाला मे प्रकाशित होनेवाला यह नवाँ पुष्प है।

प्रस्तुत शोधप्रबंध में हिंदी भाषा मे 'अक्षर तथा शब्द की सीमा' पर शास्त्रीय दृष्टि से पहली बार इतने विस्तार से चर्चा की गई है। संस्कृत में 'अक्षर' पर बड़ा विशद विवेचन किया गया है, विशेष रूप से प्रातिशाख्यों तथा आदि ग्रंथों में इसकी चर्चा है। छंदशास्त्र से भी संबद्ध होने के कारण काव्यशास्त्रीय ग्रथों मे भी इसपर विचार किया गया है। 'कविकल्पलता' में इसका बड़ा स्पष्ट विवेचन है। आज हिंदी की प्रकृति पर्याप्त भिन्न हो चुकी है, अतएव आवश्यकता थी कि हिंदी के परिनिष्ठित उच्चारण के अनुसार हिंदी शब्दावली का आक्षरिक विवेचन प्रस्तुत किया जाय। डा० भाटिया ने प्रस्तुत ग्रंथ में इस अभाव की पूर्ति की है। इस शोधप्रबंध पर डा० भाटिया को १९६४ में डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की गई और १९६४ मे स्वीकृत सभी शोधप्रबंधों में सर्वोच्चम होने के उपलक्ष्य में 'सी० बी० अग्रवाल स्वर्णपदक' आगरा विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया। हमें विश्वास है, इन सिद्धांतों से हिंदी टंकण, मुद्रण तथा शीघ्रलिपि में सहायता मिलेगी। आशा है हिंदी जगत् इन सिद्धांतों का स्वागत करेगा और अपने सुझाव भेजकर हिंदी के परिनिष्ठित उच्चारण स्थिर करने की दिशा में योग देगा। अगर इस दिशा में निर्विवाद रूप से कुछ सिद्धांत स्थिर हो सके तो भविष्य में नागरी-प्रचारिणी सभा यह प्रयत्न करेगी कि सभा से प्रकाशित होनेवाले कोशों में शब्दों के उच्चारण संकेत भी रहें जिससे देश विदेश के अहिंदी भाषाभाषियों को उच्चारण सीखने में सहायता मिले।

रथयात्रा, २०२७ वि०

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मंत्री

प्राक्कथन

डा० कैलाशचंद्र भाटिया के 'हिंदी में अक्षर तथा शब्द की सीमा' शीर्षक प्रबंध को मैंने बड़ी रुचि से पढ़ा। डा० भाटिया हिंदी भाषा की प्रकृति पर कई वर्षों से बड़ा अच्छा अध्ययन कर रहे हैं। इसके लिये इन्होंने भाषाविज्ञान की प्राचीन और अर्वाचीन पद्धतियों का बड़ी गहराई से अध्ययन किया है और सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण करने में समर्थ हुए हैं। हिंदी की ध्वनियों तथा हिंदी अक्षर और हिंदी शब्द के गठन पर वह साधिकार मत प्रकट करने के सर्वथा योग्य हैं। उनके इस अयध्यन का फल इस प्रबंध में अच्छी तरह प्रकट हो रहा है। विषय की गंभीरता और उसके सुबोध प्रतिपादन के लिये हिंदी भाषा के विद्यार्थियों और विद्वानों को डा० भाटिया का विशेष कृतज्ञ होना चाहिए। इन्होंने समय समय पर मुझसे परामर्श लिया है और मैं इनके अध्ययन से प्रभावित हुआ हूँ। हिंदी संसार के सामने ऐसा उत्तम ग्रंथ उपस्थित करने के लिये डा० भाटिया हम सभी के साधुवाद के पात्र हैं।

३ बैंक रोड, इलाहाबाद।
५ जून, १९७० ई० :

बाबूराम सक्सेना
भू० पू० अध्यक्ष,
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

अपनी बात

अपने पिछले शोध कार्य 'हिंदी में अँग्रेजी आगत शब्दों का भाषातात्त्विक अध्ययन' के समय ही मैंने हिंदी तथा अँग्रेजी के आक्षरिक विन्यास का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करने के लिए 'हिंदी के आक्षरिक स्वरूप' पर कार्य किया था। इस अध्ययन का बीज सन् १९५६ मे पूना के ग्रीष्मकालीन तथा शरत्कालीन भाषा विज्ञान के सत्रों में पड़ गया था जहाँ अनेक विश्व प्रसिद्ध भाषाशास्त्रियों के निर्देशन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् १९५७ के समर स्कूल अव् लिंग्विस्टिक्स, देहरादून में मुझको डॉ० बाबूराम सक्सेना तथा डॉ० धीरेंद्र वर्मा जी के निकट संपर्क में आने का सौभाग्य मिला। यहीं पर डॉ० बाबूराम जी सक्सेना के साथ एक दिन काफी देर तक 'अक्षर-विभाजन' पर चर्चा चलती रही। वस्तुत जून, १९५७ मे डॉक्टर साहब के साथ विचार विमर्श से जो सामग्री मिली उसी का परिणाम यह प्रस्तुत प्रबंध है, तत्पश्चात् यह कार्य लगभग एक वर्ष तक यों ही चलता रहा। सन् १९५९ में राजर्षि टंडन जी की सेवा में अभिनंदन ग्रंथ प्रस्तुत करने की योजना प्रादेशिक हिंदी साहित्य संमेलन, देहली के तत्त्वावधान में बनी। इस अभिनंदन ग्रंथ के 'भाषा-विज्ञान' खंड के संपादन का भार डॉ० सक्सेना को सौंपा गया। इसी खंड के सह-संपादक भाई डॉ० भोलानाथ तिवारी ने मुझे 'हिंदी का आक्षरिक विन्यास' शीर्षक पर शोधपरक निबंध लिखने का कार्य सौंपा। लगभग एक वर्ष तक डॉ० विश्वनाथप्रसाद जी के निर्देशन में किए गए कार्य को समेटकर मैंने 'हिंदी अक्षर' शीर्षक से राजर्षि अभिनंदन ग्रंथ के लिये प्रस्तुत किया। आगे यह कार्य डॉ० विश्वनाथप्रसाद जी के निर्देशन में चलता रहा। अब वे हमारे बीच नहीं रहे। अगर आज वे होते तो इसको प्रकाशित देखकर उन्हें कितनी प्रसन्नता होती!

इधर मराठी में इस विषय पर डॉ० एम० एल० आप्टे ने लंदन विश्वविद्यालय से कार्य किया था, जो अभी तक अप्रकाशित है। आप्टे जी से (जो अभी तक टेक्सास तथा विसकोंसिन विश्वविद्यालय में थे) पत्रों के माध्यम से विषय की रूपरेखा, व्यापकता और आवश्यकता पर बातचीत चलती रही। विस्कोंसिन विश्वविद्यालय, मेडिसन, में प्रो० हॉगन द्वारा अक्षर के शास्त्रीय पक्ष पर एक विद्वत्तापूर्ण लेख रोमन यकबसन अभिनंदन ग्रंथ में प्रकाशित हुआ जिसकी प्रति-

मुद्रित प्रति ही उन्होंने नहीं भेजी वरन् इस संबंध में अपने आवश्यक सुझाव भी प्रेषित किए। डॉ० विलियम ब्राइट के पत्रों से भी निरंतर प्रेरणा मिलती रही।

राजर्षि अभिनंदन ग्रंथ में प्रकाशित निबंध पर डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा, डॉ० धीरेंद्र वर्मा, डॉ० हरदेव बाहरी आदि गुरुजन के आशीर्वादात्मक सुझाव मिलते रहे। अनेक मित्रों ने भी देश विदेश से समय समय पर सुझाव भेजे जिनमें शिकागो विश्वविद्यालय के प्रो० द्वारिकेश, टेक्सास विश्वविद्यालय के हिंदी प्राध्यापक श्री रामप्रकाश दीक्षित, आगरा विश्वविद्यालय के डा० अशोक केलकर, डा० मुरारीलाल उप्रेतिः, डा० लक्ष्मीनारायण मित्तल तथा सागर विश्वविद्यालय के प्रो० रमेशचंद्र मेहरोत्रा (अब रायपुर वि० वि० में) उल्लेखनीय हैं।

आगरा विश्वविद्यालय के शीतकालीन सत्र सन् १९६६ में प्रयोगशाला में भी डा० गणेशसुंदरम् के निर्देशन में प्रयोगात्मक कार्य करने का सौभाग्य मिला। भाषा विश्लेषण के लिए अक्षर-विचार अपरिहार्य होते हुए भी यांत्रिक ध्वनिविद् उसकी सत्ता स्वीकार करने में हिचकिचाते थे क्योंकि वे रेकार्डों से भी अक्षर विभाग की सीमा नहीं खोज पाते। उनकी दृष्टि में 'अक्षर' विभाजन संभव नहीं। इस बात का खंडन बहुत समय पूर्व ही श्री यस्पर्सन महोदय ने किया और स्टेट्सन ने अपनी खोजों से अक्षर के अस्तित्व को सिद्ध किया। यंत्र अधिक सहायक सिद्ध नहीं हुए और इस दिशा में क० मुं० हिंदी विद्यापीठ, आगरा की प्रयोगशाला के प्रयोग की बात बराबर उठती रही। अक्षर-विभाजन में यंत्र सहायता नहीं करते, पर हाँ, शब्द में मुखरता के शिखर ज्ञात करने में सहायता देते हैं। इस दृष्टि से इस दिशा में प्रयोगशाला के प्रोफेसर इंचार्ज डा० रमानाथ सहाय की सहायता से प्रयोगशाला श्री राव के सहयोग से मैंने कुछ अटपटे तथा विवादास्पद शब्दों के उच्चारणों के चित्र काइमोग्राफ़ पर लिए। अंत्य स्थिति में व्यंजनांत और स्वरांत अक्षरों की स्थिति जानने के लिये मैंने विशेष प्रयोग किए। इन प्रयोगों में से कुछ का प्रयोग मैंने इस अध्ययन में यत्र तत्र किया है। इस दिशा में आगे स्पेक्टोग्राम पर पिलानी के टेकनोलोजिकल विश्वविद्यालय में भी प्रयोग किये गये।

अरबी फ़ारसी के शब्दों के आक्षरिक विन्यास का पुनर्निरीक्षण का कार्य मैंने डा० मसूद हुसैन, श्री तथा श्रीमती मुहम्मद हसन की सहायता से किया तथा अंत में उस अध्याय को उर्दू विभाग के अध्यक्ष तथा प्रोफ़ेसर सुरूर ने बड़े ध्यान से सुनकर कई अत्यंत उपयोगी सुझाव दिये।

प्रत्ययोंवाले अध्याय में डा० मुरारीलाल उप्रेतिः ने विशेष सहायता दी। समय समय पर उठनेवाली समस्याओं का समाधान विभागीय साथी डा० अंबा-

प्रसाद 'सुमन' ने बड़ी सहृदयता से किया। भाई डा० विश्वनाथ शुक्ल भी सहायता करते रहे।

अध्ययन को आगे बढ़ाने में समय समय पर जो प्रेरणा हिंदी-सस्कृत विभाग के अध्यक्ष एव भू० पू० डीन, फैकल्टी अव् आर्ट्‌स डा० हरवंशलाल शर्मा तथा क० मु० हिदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के भू० पू० संचालक डा० सत्येंद्र जी द्वारा मिली वह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। डा० गोवर्धननाथ शुक्ल ने तो शोध-प्रबंध समाप्त करने की तिथि ही निश्चित कर मुझे रात दिन काम करने के लिये प्रेरित किया।

मै अपने उन सब मित्रो तथा परिवार के सदस्यो के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होने अध्ययन को प्रस्तुत करने में अनेकरूपेण सहायता प्रदान की। जिन तिथियो मे शब्दो की चिटें तथा आवृत्तिपरक अध्ययनार्थ चिटे बनाने का कार्य चल रहा था, शायद ही कोई अतिथि बचा हो जिससे चिटें न बनवाई गई हो। प्रिय शिष्य श्री मिश्रीलाल जब कभी घर पर दर्शनार्थ आए तो बिना किसी रफ चार्ट को लिए वापिस नही गये और उनका ही परिश्रम अध्ययन के चार्टों मे परिलक्षित हो रहा है।

प्रस्तुत शोधप्रबंध के शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशन में विभागीय अध्यक्ष आदरणीय प्रो० हरवंशलाल जी शर्मा ने विशेष रुचि ली है जिनके प्रति मै आभार प्रकट करता हूँ। वयोवृद्ध भाषाविद् डा० बाबूराम सक्सेना ने अत्यधिक व्यस्त रहते हुए पुस्तक का प्राक्कथन लिखकर मुझे प्रोत्साहित किया है। टाइप, चिह्न, ब्लाकादि की जटिलताओ के कारण मुद्रण कठिन होते हुए भी सभा के प्रधानमत्री श्री सुधाकर पाडेय जी ने अत्यधिक रुचि एव उत्साह के साथ इस शोध-प्रबध को नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी से प्रकाशित कर वस्तुतः मुझे ही गौरवान्वित किया है। प्रकाशन मत्री आदरणीय करुणापति त्रिपाठी के प्रति भी मैं हृदय से आभारी हूँ। जिस तेजी से हिदी मुद्रण मे टाइप तथा चिह्नो की वृद्धि हो रही है, वह दिन दूर नहीं जब हिंदी मे सभी ग्रंथ, विशेष रूप से भाषाशास्त्रीय ग्रंथ मुद्रण की दृष्टि से शुद्ध प्रकाशित हो सकेंगे। अंत मे सभा के उन सभी अधिकारियो तथा कर्मचारियो के प्रति मै हृदय से आभारी हूँ जिन्होने बड़ी सहृदयता से मुद्रण की समस्याओं का समाधान किया।

कैलाशचंद्र भाटिया

रथयात्रा, सं० २०२७ (दिनाक ५ जुलाई, १९७०)
नंदन, मैरिस रोड, अलीगढ़।

विषय-सूची

अध्याय १

अध्याय २

अध्याय ३

अध्याय ४

आक्षरिक साँचे

अध्याय ५

अध्याय : ६ :

अध्याय : ७ :

अध्याय : ८ :

अध्याय : ९ :

चित्र सूची

रेखाचित्र

काइमोग्राफिक

संकेत-चिह्न

:	=	दीर्घता-स्वर अथवा व्यंजन (काइमोग्राफ़िक चित्रों में)
...	=	व्यंजन के सम्मुख अल्प दीर्घता का द्योतक
꠰	=	आक्षरिक व्यंजन, जैसे न꠰, ल꠰ ।
/ /	=	ध्वनिग्राम
[ ]	=	संस्वन
—	=	अक्षर-सीमा, एक शब्द के मध्य, जैसे, न-वे-ली । नोट: दो शब्दो के मध्य यही समास का चिह्न भी बन जाता है। स्पष्टता के लिए कई स्थानों पर आवश्यकता से अधिक लंबा लग गया है।
+	=	संगमावस्था में संक्रमण का चिह्न नोट : चार्टों मे यही चिह्न स्वर तथा व्यंजन के सम्मिलन का है।
꠰	=	बलाघात-प्रधान, किसी भी अक्षर से पूर्व उसके ऊपर जैसे 'हा-थी ॥
꠰	=	बलाघात-अप्रधान, किसी भी अक्षर से पूर्व उसके नीचे, ˌटप्-'का ।
अ	=	स्वर
अँ	=	अनुनासिक ह्रस्व स्वर
आँ	=	अनुनासिक दीर्घ स्वर
ह	=	व्यंजन
हह	=	व्यंजन-गुच्छ

अध्याय १

भूमिका

१.० हिंदी-प्रदेश तथा हिंदी का परिनिष्ठित रूप

१.०.० हिंदी-प्रदेश

शब्दार्थ की दृष्टि से हिंदी का अर्थ है 'हिंद का'। इस अर्थ मे तो हिंदी शब्द का प्रयोग भारत मे बोली जानेवाली किसी भी आर्य अथवा द्रविड़ कुल की भाषा के लिए हो सकता है, किंतु व्यवहार मे हिंदी उस बड़े भूमिभाग की भाषा मानी जाती है जिसकी सीमा पश्चिम मे जैसलमेर, उत्तरपश्चिम मे अंबाला, उत्तर मे शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी छोर तक के पहाड़ी प्रदेश, पूरब मे भागलपुर, दक्षिणपूर्व मे रायपुर तथा दक्षिणपश्चिम मे खंडवा तक पहुँचती है। इस भूभाग के निवासियों के साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं, शिक्षा-दीक्षा तथा बोलचाल आदि की भाषा हिंदी है। शिष्ट बोलचाल के अतिरिक्त स्कूली शिक्षा की भाषा भी एकमात्र खडीबोली हिंदी ही है। इस विशाल भूभाग मे से राजस्थानी भाषाओं, बिहारी क्षेत्र की भाषाओं एवं पहाडी क्षेत्र की भाषाओं को निकालकर हिंदी भाषा की सीमाएँ रह जाती है—उत्तर मे तराई, पश्चिम मे पंजाब के अंबाला और हिसार के जिले तथा पूर्व मे फैजाबाद, प्रतापगढ़ और इलाहाबाद के जिले, दक्षिण की सीमा मे कोई परिवर्तन नही होता और यह रायपुर तथा खंडवा पर ही जाकर ठहरती है।[1] इस सीमित क्षेत्र मे भी पश्चिमी हिंदी के मुख्य केंद्र है देहली, आगरा, मथुरा, अलीगढ, मेरठ और मुरादाबाद आदि। आज इस प्रदेश की भाषा ही धीरे-धीरे राजभाषा के पद पर पहुँचकर अपने शाब्दिक अर्थ 'हिंद की भाषा' को भी सिद्ध करती है।

१.०.१ हिंदी का परिनिष्ठित रूप

इतने विशाल प्रदेश मे समझी जानेवाली हिंदी का कौनसा रूप परिनिष्ठित माना जाय? सौभाग्य से यह प्रश्न विवादास्पद नही, क्योंकि पूर्वी क्षेत्रों के भाषा-शास्त्री[2] भी पश्चिमी हिंदी के रूप को ही परिनिष्ठित मानते है।

---

१. ये सीमाएँ डा० धीरेंद्र वर्मा के हिंदी भाषा के इतिहास' पर आधारित हैं।

२. 'हिंदी के ध्वनिग्राम' शीर्षक लेख में डॉ० उदयनारायण तिवारी ने अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है—'यहाँ जो ध्वनिग्राम दिए जा रहे हैं उनका

पश्चिमी हिंदी के तीन बड़े केंद्र मेरठ, दिल्ली और आगरे की बोली पर ही आज की हिंदी का परिनिष्ठित रूप आधारित है और दूसरी ओर हिंदी के पोषक और उसके लिखित रूप को विकसित करनेवाले व्यक्ति अधिकाशतः पूरब के थे—सर्वश्री भारतेंदु, महावीरप्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, प्रसाद, रामचंद्र शुक्ल आदि। हिंदी के परिनिष्ठित रूप को जहाँ हिंदी का विशाल प्रदेश प्रभावित करता है वहाँ मुग़ल काल (और कहीं कहीं अब तक) में प्रयुक्त उर्दू का परिनिष्ठित रूप भी कम प्रभावित नहीं करता। लेखक ने आगरे में भाषातत्वमंडल के तत्वावधान में 'हिंदी का परिनिष्ठित रूप' पर एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया था। मंडल के मान्य सभापति तथा भाषाविद् डॉ० विश्वनाथ प्रसाद[1] के विचार भी उल्लेखनीय है :—

'विकास के साथ भाषा में जो व्यापकता की प्रक्रिया होती है उसमे एक और आवश्यक तत्त्व समाहित हो जाता है और वह तत्व है भाषा की केंद्राभिमुखी प्रवृत्ति, जिससे व्यापकता के साथ साथ भाषा मे एकरूपता बनी रहती है। शिष्ट प्रयोग अर्थात् शिष्टों का प्रयोग ही केंद्रीकरण का आदर्श माना जाता है। इसी आधार पर इंगलैंड मे स्टैंडर्ड इंगलिश या रिसीव्ड इंगलिश का मर्यादित रूप अंगीकृत किया गया। भाषा के विकास के साथ-साथ उसमें सामाजिक स्तर और देशगत भेदों के द्वारा नवीन रूपों की समस्या खड़ी हो जाती है। इस प्रकार जब विकास के साथ साथ भाषा का प्रसार दूर-दूर तक हो जाता है तो उसके परिनिष्ठित, शिष्ट या साधु रूप को निश्चित करने के लिये मध्यम मार्ग का ही अनुसरण करना पड़ता है। इसमें 'समझने की सीमा' या 'बोधगम्यता की मर्यादा' विशेष सहायता देती है।"

हिंदी का परिनिष्ठित रूप जिन केंद्रों की ओर अभिमुख रहता है वे हैं—आगरा, मथुरा और देहली।[2]

आधार वस्तुतः प्रयाग के पश्चिम के हिंदी क्षेत्रों से आए हुए उन लोगों के उच्चारण हैं जो घर तथा घर के बाहर प्रायः परिनिष्ठित हिंदी का व्यवहार करते हैं।

—भाषाशास्त्र की रूपरेखा, १९६२, पृ० ११७

१. भारतीय साहित्य, अक्टूबर, १९५७, पृ० ७६२

२. इस संबंध में नवम हिंदी साहित्य संमेलन, बबई के अध्यक्ष पं० जगन्नाथ चतुर्वेदी के विचार द्रष्टव्य हैं—"पश्चिमी हिंदी का लिंग ही परिनिष्ठित हिंदी में मान्य है। 'प्रांतीयता' का प्रेम छोड़कर दिल्ली, मथुरा, आगरे के प्रयोगों का अनुकरण सबको करना चाहिए क्योंकि मेरी समझ में यहीं

लेखक का यह सौभाग्य है कि वह जन्म तथा प्रारंभिक शिक्षा की दृष्टि से मथुरा से संबंधित है, उच्च शिक्षा के लिये कई वर्ष आगरा भी रहा और आज अलीगढ में है। इस पश्चिमी क्षेत्र के उच्चारण के आधार पर ही इस अध्ययन को प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. १ अक्षर

'अक्षर' शब्द संस्कृत में कई अर्थों में चलता है। पतंजलि ने महाभाष्य में कई व्युत्पत्तियाँ दी हैं—

अथ किमिदमक्षरमिति
अक्षरं न क्षरं विद्यात्।
न क्षीयते न क्षरतीति वाक्षरम्।

इस प्रकार अक्षर का अर्थ हुआ—'जो घटता नहीं उसको अक्षर समझा जाय। जिसका उच्चारण हम करते हैं वह ध्वनि, यद्यपि विनाशी है तो भी उस ध्वनि के द्वारा सूचित किया जानेवाला स्फोट रूप अक्षर नित्य अर्थात् अविनाशी ही है। उपर्युक्त दोनों व्युत्पत्तियों के मूल में दो धातुएँ हैं।

√क्षि
√क्षर् > दोनों से ही अविनाशी अर्थ सिद्ध होता है।

अश्नोतेर्वा सरोऽक्षरम्

'अश्' धातु में 'सर' प्रत्यय लगाने से अक्षर सिद्ध होता है जिसका अर्थ है 'जो व्याप्त करता है वह'।

यास्क[2] ने अक्षर की दो व्युत्पत्तियाँ दी हैं—
क्षरं न क्षरति न क्षीयते[ ] वस्त्रोऽक्ष इति वा

के प्रयोग शुद्ध और माननीय है। × × × दिल्ली, मथुरा, आगरा इन तीनों में मतभेद हो तो आगरे को प्रधानता देनी चाहिए।

१. पतंजलि, व्याकरणमहाभाष्य, भाग १ खंड १, आह्निकम् २, शकाब्द १८८१, पृ० १३८।

२. सिद्धेश्वर वर्मा-द एटिमोलोजीज़ आव् यास्क, होशियारपुर, १९५३, पृ० ३३ ह्विच् इज़ नाट पेरिश।

दैट व्हिच् सर्वज़ ऐज़ ऐन एक्सिस आइ० ई० द मैनस्टे अव् स्पीच। ए मीअरली फ़िलासोफिकल व्यू आव् द इंपेरिशेबिलिटी अव् साउंड कुड नॉट गिव टू द मैन इन द स्ट्रीम अव् कन्सेप्ट।

अक्षर—ए वर्ड लाइक 'अक्ष' मे हैव फ़र्दर कोऑपरेटेड इन ब्रिंगिंग एबाउट द पिक्यूलिअर सेन्स आव् 'अक्षर'।

पहली व्युत्पत्ति—अ + √क्षर्
दूसरी „ —अक्ष — + र
इनके अतिरिक्त भी व्युत्पतियाँ द्रष्टव्य है :—
अ + √क्षि
√अश् + सर

यास्क तथा अन्य प्राचीन वैयाकरणों के इन विचारों पर टिप्पणी देते हुए डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा ने लिखा है—

"प्रतीत होता है कि तब भी दो दृष्टिकोणों से 'अक्षर' की कल्पना की जा रही थी। पहला दृष्टिकोण निषेधात्मक था, अर्थात् वाक्यप्रवाह का वह अंश, जिसका क्षरण नहीं होता। आधुनिक कुछ विचारकों का भी यही मत है कि श्रोता को प्रायः अक्षर ही अधिक सुनाई देते हैं। × × × वैदिक स्वर प्रक्रिया से निषेधात्मक अर्थ का समर्थन नहीं होता इसी लिये यास्क के दूसरे निर्वचन पर विचार करना पड़ता है। इस दूसरे निर्वचन में 'अक्षर का मूलभूत' 'अक्ष' बताया गया है, अर्थात् धुरी जो रथचक्र का आधार है। भाषणप्रवाह का आधार होने पर इसे 'अक्षर' कहा गया है।"[1]

अक्षर का अर्थ 'जो तोड़ा या खंडित न किया जा सके' प्रचलित होने के कारण पहले 'भाषा' या 'वाक्' के लिये अक्षर का प्रयोग किया जाता था, तत्पश्चात् शब्दांश के लिये स्थिर हुआ।

वर्ण को अखंड्य मानकर उसके लिये भी अक्षर का प्रयोग किया जाने लगा। सामान्य लोगों में आज भी यही अर्थ प्रचलित है और इसी आधार पर इन वर्णों के प्रतीक लिपिचिह्नों के लिये 'अक्षर' का प्रयोग किया जाने लगा।

आगे जब शब्द के भी टुकड़े किए गए तो 'अक्षर' अँग्रेजी शब्द 'सिलेब्ल' के अर्थ में सीमित हो गया। ऋक्, वाजसनेयी, तैतरीय आदि प्रातिशाख्या तथा शिक्षा ग्रंथो में 'अक्षर' का यही अर्थ है जिस पर विचार किया जाएगा।

'अक्षर' का यही भाव अँग्रेजी शब्द सिलेब्लि के मूल में ग्रीक शब्द[2] Sullabe में है, जिसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है—

Sullabe = Syl + lambano (take)

जिसका अर्थ हुआ 'एक में बँधा या रखा हुआ'।

---

१. डा० सिद्धेश्वर वर्मा—अक्षर, भाषा, सितंबर १९६२, पृ० ६२।
तथा शिवसागर त्रिपाठी—अक्षर, राजस्थान वि० वि० स्टडीज़, १९६७।

२. दैट विच होल्डज़ टुगेदर।
दैट ह्विच इज हेल्ड टुगेदर एस्प० सेवरल लेटर्स फॉर्मिंग वन् साउंड, ए सिलेबिल—लिडिल एंड स्कोट्स-ग्रीक इंगलिश लेक्सीकन, आक्सफोर्ड, पृ० ६४२।

संस्कृत 'अक्षर' तथा ग्रीक 'सिलबे' के मूल अर्थ चाहे भिन्न हों पर उन अर्थों में 'भावैक्य' मिलता है, आगे चलकर प्रातिशाख्यो ने जो 'अक्षर' की व्याख्याएँ प्रस्तुत की है, वे ग्रीक के 'सिलबे' के बहुत निकट है। ग्रीक शब्द ही यूरोप की भाषाओ मे परिवर्तित रूप मे व्याप्त है, फ्रेंच मे Syllcbe तथा जर्मन में Silbe है।

१. २ 'अक्षर' की परिभाषा

'अक्षर' के संबंध में सबसे अधिक स्पष्ट विवेचन प्राचीन शास्त्रों में से ऋक्प्रातिशाख्य[1] में किया गया है—

'अक्षर'—कोरा स्वर, स्वर तथा व्यंजन, अनुस्वार के साथ स्वर या व्यंजन तथा अनुस्वार के साथ स्वर रूप में हो सकता है।

प्रथम व्यंजन का आगे के स्वर और अंत्य व्यंजन का संबंध पूर्व स्वर से होता है।

अथर्ववेद प्रातिशाख्य[2] तथा वाजसनेयी प्रातिशाख्य[3] दोनों ही ग्रंथों में अक्षर के निर्माण में स्वर के महत्व को प्रतिपादित करते हुए स्वर को ही अक्षर कहा गया है:—

'स्वरोऽक्षरम्'

प्रातिशाख्यों एवं शिक्षा ग्रंथों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि 'अक्षर उस एक ध्वनि या ध्वनिसमुदाय (वर्ण या वर्णसमूह) को कह सकते हैं जो एक आघात या झटके में बोला जाता है और जिसमें एक स्वर या स्वरवत् व्यंजन रहता है। उसी स्वर के पूर्वांग या परांग बनकर अनेक व्यंजन रह सकते हैं।

---

१. ऋक् प्रातिशाख्य, सं० मंगलदेव शास्त्री सन् १९३१, पृ० ४९३-४९४।
सव्यंजनः सानुस्वारः शुद्धो वापि स्वरोऽक्षरम् (८, ३२), व्यंजनान्युत्तरस्यैव स्वरस्यान्त्यं तु पूर्वभाक् (८, ३३) विसर्जनीयानुस्वारौ भजेते पूर्वमक्षरम् (८।३४), संयोगादिश्च वैकं च (८, ३५), सहक्रम्यः परक्रमे क्रमेण सहक्रम्यो वर्णः पूर्वमक्षरं वा भजते परक्रमे सति (८, ३६), गुर्वक्षरम् (८, ३७), लघुह्रस्वं न चेत्संयोग उत्तरः (८,३८), अनुस्वारश्च (८, ३९), संयोगं विद्याद्व्यञ्जनसंगमम् (८, ४०), गुरु दीर्घम् (८, ४१), गरीयस्तु यदि सव्यंजनं भवेत (८, ४२) लघु सव्यंजनं ह्रस्वम् (८,४३), लघीयो व्यंजनादृते, (८, ४४)

२. अथर्ववेद-प्रातिशाख्य (९३)
ह्निटने—जर्नल अव् अमेरिकन ओरियंटल सोसायटी, ७वां भाग, पृ० ३८९ ९०

३. वाजसनेयी प्रातिशाख्य (१, ९९)
वी० पी० शर्मा —मद्रास विश्वविद्यालय, सन् १९३४, पृ० ३८।

अक्षर में स्वर ही प्रमुख होता है और एक प्रकार से यही अक्षर का मेरुदंड है। स्वर ही अक्षरस्पंदन को घोषित करता है। अक्षर से स्वर को न तो पृथक् ही किया जा सकता है और न बिना स्वर या स्वरवत् व्यंजन के अक्षर का निर्माण ही संभव है। डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा[1] अक्षर का आवश्यक तत्त्व स्वर को मानते हुए नारदशिक्षा से उद्धरण देते हुए कहते है कि व्यंजन किसी भी भाषा में मोतियों के तुल्य है जब कि स्वर उस डोरी के तुल्य हैं जिनमें सभी मोती पिरोए होते हैं। स्वर तो स्वयं शासन करता है (स्वयं राजते)। नारदशिक्षा मे स्वर को शक्तिसंपन्न सम्राट् और व्यंजन को निर्बल राजा के तुल्य माना है।

प्राचीन शास्त्रो में 'स्वर' का इतना अधिक महत्व प्रतिपादित किया गया है कि व्यंजन[2] को स्वर के अधीन बना दिया गया। त्रिभाष्यरत्न में तो यहाँ तक कह डाला गया है कि व्यंजन अपने आप में खडा भी नहीं हो सकता (व्यंजनम् केवलम् अवस्थातुं न शक्नोति किम् तु सापेक्षम्, स्वरः तु निरपेक्षः)। 'अक्षर' में व्यंजन का क्या स्थान है, इस पर पृथक् से विचार किया जाएगा। यहाँ तो यही विवेच्य है कि 'अक्षर' के साथ स्वर का महत्त्व इतना अधिक बढ गया कि अक्षर स्वर का पर्यायवाची ही बन गया और संभवतः इसी आधार पर स्वर के दो भेद किए गए—

१—समानाक्षर
२—संध्यक्षर

'अक्षर' में स्वर का महत्व ट्रब्ट्स्कोय और थ्रैक्स[3] ने भी उसी प्रकार स्वीकार किया है जैसा हमारे यहाँ शिक्षाग्रंथों में किया गया है।

---

१. डा० सिद्धेश्वर वर्मा, क्रिटिकल स्टडीज़ इन द फोनेटिक आब्जर्वेशन्स ऑव् इंडियन ग्रामेरियन्स, १९२९, पृ० ५५।
कान्सॉनेंट्स आर लाइक पर्ल्ज़ इन ए नेकलेस, बट द थ्रेड व्हिच सपोर्ट्स देम इज़ द वावेल।

२. व्यजनम् स्वरागम्, तैतरीय प्राति० (२१, १)।

३. दस द वावेल इज फोनोलाजिकली डिफाइंड बाई द फैक्ट देट इट फार्म्स ए सिलेबिल आर द न्यूक्लस आव द सिलेबिल ए क्राइटेरियन फार विच वेस्टर्न ऐंटिक्युटी प्रोवाइड्ज़ पैरेलल्स इनडीड द स्टेटमेंट आव् त्रिभाष्यरत्न इज़ आलमोस्ट एक्जैक्टली डुपलीकेटेड बाई दैट आव डियोनसिअस थ्रैक्स —डब्ल्यू० एस० एलेन, फोनेटिक्स इन एन्शियंट इंडिया, पृ० ८०, सन् १९५३।

यह निर्विवाद है कि अक्षर के निर्माण मे 'स्वर' का अत्यधिक महत्व है पर दोनो को पर्यायवाची समझकर जिस शब्द मे जितने स्वर हो उतने ही अक्षर मानना एक बडी भूल है। जिन भाषाओ मे सध्यक्षर स्वर[1] का महत्वपूर्ण स्थान है वहाँ यह सिद्धात असफल सिद्ध होगा। साथ ही कुछ भाषाओ मे व्यजन भी अक्षर के निर्माण मे सहायक सिद्ध होते है, ऐसी स्थिति मे 'स्वर' ही अक्षर है, सिद्धात पुराना पड जाता है।

संसार की अनेक भाषाओ मे अक्षर के निर्माण में व्यंजनों का महत्वपूर्ण योग है। व्यजन भी अक्षराधार या शीर्ष रूप में मिलते है। हमारे यहाँ ही संस्कृत की ऋ, ॠ, लृ, ॡ ऐसी ध्वनियाँ है जिनका आक्षरिक महत्व है। यही कारण है कि उनको स्वरो मे संमिलित किया जाता है। आज इन ध्वनियों को स्वरवत् उच्चारण करने में हम असमर्थ है। अँग्रेजी[2] मे 'ल्' तथा 'न्' का आक्षरिक महत्त्व है। जापानी मे[3] 'स्' आक्षरिक है। अफ्रीकी[4] भाषाओं में भी अनेक व्यजन इस कोटि में आते है। चैक भाषा मे तो स्वरशून्य शब्दशृंखला संभव है। चैक भाषा[5] मे 'र्' ध्वनि आक्षरिक है।

उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि 'अक्षर' के निर्माण मे बहुधा स्वर और कभी-कभी व्यजन सहायक सिद्ध होते है। इस तथ्य को इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि स्वर भी व्यजनवत् प्रयुक्त हो सकते है और व्यंजनों का भी स्वरवत् प्रयोग किया जा सकता है, या वे ध्वनियाँ जो 'अक्षर' का शीर्ष बना सके आक्षरिक है और जो इनसे इतर है वे अनाक्षरिक है। अमेरिकन भाषाशास्त्री पाइक[6] ने आक्षरिक (सिलेबिक) तथा अनाक्षरिक (नान सिलेबिक)

---

१ अँग्रेजी में संध्यक्षर स्वरों की बहुलता है। सध्यक्षर स्वर दो स्वरो के योग से बनता है जिनमें से एक ही स्वर आक्षरिक होता है दूसरा नहीं। यही समस्या हिंदी के साथ भी है। अतएव जितने स्वर हों उतने अक्षर होंगे, यह सिद्धांत मान्य नही।

२. डेनियल जोन्स, ऐन आउट लाइन आव् इंगलिश फोनेटिक्स, नि० १०१, सन् १९५६, पृ० २४।

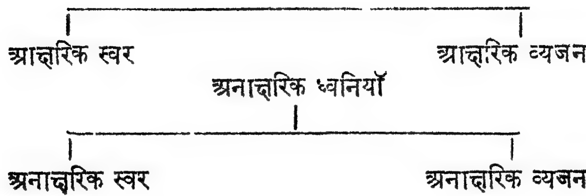
३. डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा, क्रिटिकल स्टडीज इन फोनेटिक आब्ज, १९२९, पृ० ५५।

४. प्रो० गोलोकविहारी धल, ध्वनिविज्ञान, १९५८, पृ० २०९।

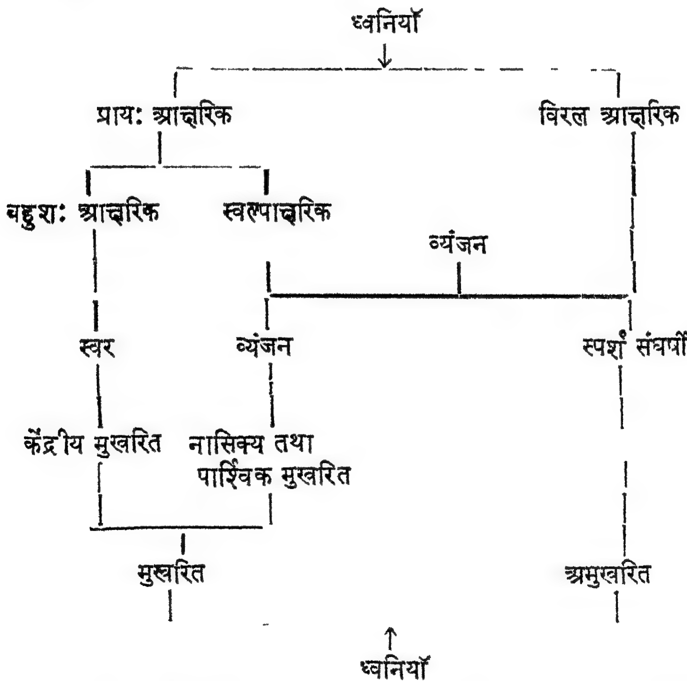
५. मामबर्ग, बर्टिल, फोनेटिक्स, डोवर पब्लिकेशन्स, न्यूयार्क १९६३, पृ० ६५।

६. पाइक, के० एल०, फोनेटिक्स, सन् १९५८, पृ० १४५।

शब्दावली का ही प्रयोग किया है। आक्षरिक ध्वनियाँ स्वर तथा व्यजन दोनों हो सकती है और अनाक्षरिक ध्वनियाँ भी, स्वर तथा व्यजन, दोनो हो सकती है।



इसी तथ्य को एक और स्थान पर पाइक[1] महोदय ने इस प्रकार एक रेखाचित्र से स्पष्ट किया है।



'अक्षर' के विवेचन के साथ स्टेट्सन महोदय का नाम अनायास ही आ जाता है। स्टेट्सन महोदय ने अनेक यात्रिक प्रयोगो से इस समस्या पर गहराई से अध्ययन किया है। आपके विचार मे 'अक्षर एक गत्यात्मक इकाई'[2] है। अक्षर

१. पाइक—फ़ोनेटिक्स, सन् १९५८, पृ० १४४।

२. 'सिलेबिल इज ए मोटर यूनिट'।

एक गतिमात्र है जिसकी गति वक्ष की मासपेशियो का श्वास स्पंदन ही है जिसके द्वारा फेफडो मे वायुसंकोचन उत्पन्न होता है, फलस्वरूप वायु के उत्प्रेषण से अक्षर का निर्माण होता है। इस प्रकार अक्षर हवा के उस एक झटके या झोके से उत्पन्न ध्वनिसमूह या ध्वनिइकाई है जो वक्ष की मासपेशिया के सकोचन से फेफडो के बाहर निकलती है। इसी कारण इसे 'श्वासस्पंद' से उद्भूत कहा जाता है। इस रूप मे अक्षरनिर्माण की तीन सीढियाँ है —

प्रारंभ
आक्षरिक स्पंद
अंत

अक्षर मे स्वर का महत्त्व स्टेट्सन भी स्वीकार करते है। व्यंजन तो किसी अक्षर को मुक्त या निरोधित (अथवा मुक्त तथा निरोधित) करने की विशिष्ट क्षमता रखते है।

स्टेट्सन महोदय ने भाषा मे 'अक्षर' का वही महत्व स्वीकार किया है जो सगीत मे तान का और नृत्य मे पगसंचालन का है।

हेफनर[2] महोदय आक्षरिक तथा अनाक्षरिक ध्वनियो को स्वीकार करते हुए 'अक्षर' के निर्माण मे सस्वनता का महत्त्व प्रतिपादित करते है। शब्द मे जो भाग सबसे अधिक 'सस्वन' होता है वही अक्षर का आधार है। उदाहरणार्थ आपने अंग्रेजी शब्द 'रैट्' लिया है जिसका आरभ 'र्' ध्वनि से होता है और श्वासस्पंद 'ऐ'

स्टेट्सन महोदय ने 'सिलेबिल .फ़ुट' पर भी विचार करते हुए लिखा है— "द '.फ़ुट' इज द स्मालेस्ट यूनिट ग्रूप इन्कारपोरेटिंग द सिलेबिल्ज इट इज ड्यू टु ऐन एब्डोमिनल पल्स ह्विच इन्टीग्रेट्स ए सिंगल स्ट्रेस्ड सिलेबिल ऑर ए .फ्यू सिलेबिल्स ग्रुप्ड एबाउट ए सिंगल स्ट्रेस्ड सिलेबिल। आर० एच० स्टेट्सन, मोटर फ़ोनेटिक्स, १९५१।

१. स्टेट्सन ने अपनी पुस्तक 'मोटर 'फोनेटिक्स' के पृ० ८ पर निम्नलिखित तुलनात्मक चार्ट प्रस्तुत किया है—

आर्टिक्यूलेट लैंग्वेज	म्यूज़िक	डान्सिंग
सिलेबिल	नोट	स्टेप
.फ़ुट	फिगर	ग्रुप आव् स्टेप्स
ब्रेथ ग्रूप	मोटिफ़	एवोल्यूशन
फ्रेज़	फ्रेज	एक्सप्रेसिव पैटर्न

२. हेफ़नर, जनरल फ़ोनेटिक्स, पृ० ७२ - ७३।

के उच्चारण में स्पंदित होता हुआ अंत में 'ट्' ध्वनि से निरोधित हुआ है। अधिक सस्वन होने के कारण ही स्वर 'ऍ' आक्षरिक है।

हेफ़नर[1] महोदय ने अक्षर का आधार सस्वनता (सोनोरिटी) मानते हुए अल्पतम सस्वनता से उच्चतम सस्वनतावाली ध्वनियों को (फ्लेचर, सीवर्ज, यस्पर्सन आदि के प्रयोगों के आधार पर) इस प्रकार कोटिबद्ध किया है—

अल्पतम	सस्वन	अघोष स्पर्श तथा संघर्षी	प्, त्, क्, फ्, श्, ह्
अल्पतर	सस्वन	सघोष स्पर्श तथा संघर्षी	ब्, ड्, ग्, व्, ज, .झ्
अल्प	सस्वन	नासिक्य	म्, न्, ङ्,
		पार्श्विक	ल्
(व्यंजनों की			र्
ओर से उच्चतम)	सस्वन	लुंठित	
(स्वरों की			
ओर से निम्नतम)	सस्वन		उ, इ
अधिक सस्वन			ओ, ए
अत्यधिक सस्वन			ऑ, ऍ, आ

इनमें से भी सर्वाधिक सस्वन 'आ' स्वर है।

हॉकेट[2] महोदय ने अक्षर में 'शीर्ष' पर बल दिया है। आक्षरिक ध्वनि ही 'शीर्ष' बना सकती है। शीर्ष से पूर्व और पर गह्वर होते हैं। पूर्व गह्वर को आपने 'ऑनसेट' और पर गह्वर को 'कोडा' नाम दिया है, उदाहरणार्थ हैट् शब्द में 'ह्' ऑनसेट है 'ऐ' शीर्ष है और 'ट्' कोडा है।

'शीर्ष' का महत्व प्रतिपादित करते हुए आपने इसके निर्माण में चार तत्त्व स्वीकार किए हैं—

१—स्वर
२—तान या सुर
३—स्वर तथा बलाघात
४—स्वर तथा मात्रा

१. वही।

२. केनियन महोदय का भी यही विचार है।

३. हॉकेट, सी० एफ०, ए मेनुअल आव् .फोनोलॉजी, १९५५, पृ० ५६, सिलेबिल ऐंड जंक्चर, 'पीक इज द न्यूक्लस् अव् द सिलेबिल ऐंड दैट एनी अदर सिलेबिल एलिमेंट प्रजेंट इन वन आर एनादर इंसटेंस इज ए सैटेलाइट।

यकबसन[1] महोदय ने भी अक्षर में स्वर का महत्त्व माना है। एक अक्षर से स्वर न हट सकता है और न दो बार आ सकता है।

जर्मन विद्वान् पी० मैजरेथ का कथन था कि नीचे का जबड़ा हर 'अक्षर' में एक बार हिलता है, पर उनका यह सिद्धात मान्य नही ठहरा।

फ्रेंच विद्वान् सॉस्यूर ने भी अक्षर का सबंध मुँह के खुलने और बंद होने से माना है।[2] आपने ध्वनियो के अधिक या कम मुँह खुलने के अनुसार छह वर्ग बनाए है। २, ३, ४ प्रकार से मुँह खुलनेवाले ध्वनिग्राम क्रमशः नासिक्य, लुंठित, पार्श्विक तथा अर्द्धस्वर दोनो ओर जा सकते है, अर्थात् आक्षरिक भी हो सकते है और अनाक्षरिक भी। आपने अक्षर का आधार सस्वनता माननेवालो पर करारी चोट की है। आपका मत है कि 'इ' और 'उ' जो बहुत अधिक सस्वन है, क्या हमेशा 'अक्षर' बनाने मे समर्थ होते है? और फिर सस्वनता का अंत कहाँ, जबकि संघर्षी अघोष ध्वनि 'स्' भी आक्षरिक है जैसे 'स्ट्' मे।

प्रो० फर्थ ने 'अक्षर' को एक 'स्पंदन' माना है[3] और प्रो० ग्लीसन भी सपूर्ण वाग्धारा को स्पदनमय मानते हुए लिखते है—

"स्पीच इज, देअरफोर, मार्क्ड बाई ए सीरीज ऑव् शॉर्ट पल्सेज प्रोड्यूस्ड बाई द मोशन आव् द इंटरकास्टल मसिल्ज। दीज़ पल्सेज़ आर द फोनेटिक सिलेबिल्ज।'[4]

'अक्षर' का विशेष गुणधर्म इसकी प्रतीति (प्रामिनेस) है।[5] प्रामिनेस

---

१. यकबसन, आर—फंडामेंटल्स ऑव् लैंग्वेज, १९५६, पृ० २०।

२. सास्यूर, एफ० डी०, कोर्स इन जनरल लिंग्विस्टिक्स, १९६०, पृ० ५७–५९।

३. फर्थ, जे० आर०, साउंड्स ऐंड प्रोसोडीज़, टी० पी० एस०, १९४८, पृ० १२८-१५२।

४. ग्लीसन, एच० ए०, ऐन इंट्रोडक्शन टु डेस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स, १९६१ पृ० २५६।

५. डा० सिद्धेश्वर वर्मा, अक्षर, भाषा, वही, 'इस प्रतीति के अंश स्वराघात और बलाघात मात्रा हैं, उनके निरतर आरोह अवरोह के कारण अक्षर एक सश्लेषात्मक तरल (सिंथेटिक फ्ल्यूड) का आकार रखता है। प्रतीतिभेद इन्हीं अंशों से हुआ करते हैं।" डा० वर्मा प्रतीति में प्रमुखतः मुखरता, श्वास-बल और मात्रा मानते हैं। आपका मुखरता से आशय ध्वनि की आंतरिक मुखरता से है।

—वही, फोनेटिक, आब०, सन् १९२९।

पर ओ-कॉनर[1] महोदय ने बल दिया है। अक्षर का शीर्ष जिन तत्वों से अधिक प्रमुख बन जाता है, वे है—सस्वनता, मात्रा, बलाघात और सुर, जिनमें से कोई अकेला या एकाधिक हो सकते हैं। इनसे ही शीर्ष की प्रतीति होती है और शीर्ष से इतर कोटियाँ गौण रह जाती है। शीर्ष के इन तत्वों की ओर डेनियल जोंस[2] महोदय ने ध्यान आकर्षित किया है।

'अक्षर' में बलाघात का महत्त्व ब्लूमफील्ड[3] महोदय ने माना है।

अब तक की विभिन्न परिभाषाओं में एक समानता है। जहाँ भारतीय मनीषी अक्षर में 'स्वर' को प्रधानता देते हैं वहाँ पाश्चात्य विद्वानों ने अक्षररचना में शीर्ष या शिखर अथवा चोटी, (पीक, क्रेस्ट, न्यूक्लस), को महत्व दिया है। श्रवण गुण की दृष्टि से शीर्ष ध्वनि आक्षरिक होती है और अपनी पड़ोसी ध्वनियों से अधिक मुखर तथा प्रमुख होती है।

हॉगन महोदय ने अक्षर के संबंध में अब तक किए गए कार्य का सूक्ष्म पर्यालोचन करते हुए एक विचारशील निबंध प्रस्तुत किया है। आपने भाषा-शास्त्रियों के अक्षरसंबंधी सिद्धांतों का विवेचन कर यह निष्कर्ष निकाला है :—

दैहिक दृष्टि से जो हृत्स्पन्दन (चेस्ट पल्स) है वही ध्वन्यात्मक दृष्टि से सस्वनता है।

आपके मतानुसार 'पुनरावर्तक ध्वनिग्रामीय अनुक्रमों की लघुतम इकाई ही अक्षर है।[4]

अलवर निक्विस्ट[5] ने बड़े स्पष्ट शब्दों में अक्षर पर तीन दृष्टियों से विचार किया है—

---

१. ओ कॉनर, जे० डी० ऐंड ट्रिम—वावेल कांसोनेंट ऐंड सिलेबिल, वर्ड, १६५३, पृ० १०३-१२२।

२. डेनियल जोंस—ऐन आउट लाइन आव् इंगलिश फोनेटिक्स, १६५६, पृ० २१५-२१८।

३. ब्लूमफील्ड, लैंग्वेज, १६५६, पृ० १२५।

४. दैट द सिलेबिल बी डिफाइंड ऐज द स्मॉलेस्ट यूनिट आव रिकरेंट फ़ोनेमेकि सिक्वेसेज़। वी बिल देन हैव टु इंक्ल्यूड नाट ऑनली द सेगमेंटल फ़ोनेमोज़, बट आलसो द प्रोसेडिक वन्स लाइक स्ट्रेस, टोन, लेंग्थ ऐंड जक्चर। हॉगन, द सिलेबिल इन लिंग्विस्टिक डिस्क्रिपशन, एफ० आर० जे० १६५६, पृ० २१६।

५. अलवर निक्विस्ट—ए नोट आन द सिलेब लो मैत्र फ़ोनेटिक, जुलाई, दिसं० १६६२, पृ० २७-२८।

१—उच्चारण की दृष्टि से—बहुत कुछ स्टेट्सन तथा हेफनर के विचारों के अनुकूल।

२—ध्वन्यात्मक दृष्टि से—तीव्रता, शीर्ष तथा ध्वनिग्रामो मे पारस्परिक संबंध पर आधारित।

३—श्रवणात्मक दृष्टि से—श्रोता वास्तविक रूप से शब्द को जितने खंडों में सुनता है।

केंद्रक रूप स्वर इकाई से युक्त ध्वनिग्रामो के संयोजन का वह न्यूनतम साँचा अक्षर है जो पूर्वापर किसी एक व्यंजन ध्वनि अथवा स्वीकृत व्यंजन गुच्छों से युक्त हो। यह परिभाषा ही हमारे आगामी अध्ययन का आधार होगी। केन्द्रक ही किसी परिभाषा मे शीर्ष (पीक) है, किसी मे चोटी (क्रेस्ट) और किसी में शिखर (Culmınatıou)।

अक्षरविभाजन (शब्दांतर्गत)

१. ३ अक्षर की सीमा का निर्धारण करना आसान कार्य नही है।[1] यात्रिक सहायता से भी यह ज्ञात करना तो आसान है कि किसी शब्द मे कितने अक्षर है पर यह पता लगाना कि कहाँ एक अक्षर समाप्त हो रहा है और कहाँ दूसरा प्रारंभ, दुष्कर कार्य है। कुछ व्यक्ति इसी आधार पर अक्षर की सत्ता अस्वीकार करते हैं। उनका कथन है कि जब यंत्र भी अक्षरसीमा निर्धारण करने मे असमर्थ है तो उसका क्या आवश्यकता है। इन आलोचकों को यस्पर्सन[2] महोदय ने करारा उत्तर दिया कि यदि हम किसी घाटी की सीमा निर्धारण करने में असमर्थ है तो क्या चोटी की मान्यता भी अस्वीकार कर देंगे।

अक्षरसीमा का बिल्कुल निश्चित करना कठिन है पर कौन सी अनाक्षरिक ध्वनि किस आक्षरिक ध्वनि के साथ मिलकर उच्चरित हो रही हैं यह कानों को स्पष्टत: पता चल जाता है, चाहे यंत्र असफल रहे। हाँ, यह बात अवश्य है कि कुछ उच्चारण व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर विवादास्पद हो सकते है। कुछ स्थानो पर पर्याप्त मतभेद भी हो सकता है, ऐसे विवादास्पद स्थलो पर शिष्टों द्वारा प्रयुक्त शब्दों के उच्चारण ही परिनिष्ठित समझे जाएँगे। अब समय आ गया है कि हिंदी के शब्दों का आक्षरिक विन्यास भी कोशो मे दिखाया जाए जिससे हिंदीतर पाठकों को ठीक उच्चारण करने मे सुविधा हो।

१. डेनियल जोंस, एन् आउटलाइन् आव् इंगिलश फ़ोनेटिक्स, नि० २१२, पृ० ५५।

२. हेफनर आर० एम० एस०, जनरल फ़ोनेटिक्स, १९५२, पृ० ७३-७४।

जब प्रमुखता, सस्वनता और मुखरता अक्षर का शिखर बनाते हैं तो अल्पतम मुखरता रूपी घाटी ही उस अक्षर की सीमा है और इस स्थल की दोनो ध्वनियाँ दो और अक्षरो मे विभाजित हो जाएँगी। बी० हाल[1] द्वारा फोनेटिका मे यही व्यक्त है।

अक्षरसीमा की इस समस्या को हॉगन[2] महोदय ने भी कुछ इस प्रकार ही हल किया है। शब्द मे केंद्रक (न्युक्लस) से इतर जो शेष रह जाता है उसको पार्श्व (मार्जिन) कह सकते है। पार्श्व (मार्जिन) के भाग केंद्रक से पूर्व या पर स्थिर हो सकते है। मुखरता की अल्पता और भाषा की ध्वनि प्रक्रिया के अनुसार सीमाकन किया जा सकता है।

अक्षरसीमा पर बड़ा स्पष्ट और व्यावहारिक दृष्टिकोण डॉ० बाबूराम सक्सेना[3] ने अपनाया है। डॉ० सक्सेना के विचार इस प्रकार हैं—

'कुत्ता', कुप्पा, छक्का, बट्टा आदि के त्, प्, क्, ट् का अंतिम अवयव (स्फोट) दूसरे अक्षर के साथ जाता है और प्रथम अवयव (प्राप्ति) प्रथम अक्षर के साथ, द्वितीय अवयव क्षणिक अवस्थिति (मौन) इन दोनो को अलग अलग कर देती है। वाक्यों का परस्पर पृथक्करण हम दो वाक्यों के बीच के मौन से ही तो करते हैं। इसी आदर्श पर वाक्याशो का भी विभाजन होना चाहिए। वाक्य के भीतर भी थोडा बहुत रुकना होता है यद्यपि वह वाक्याश के रुकने से, आपेक्षिक दृष्टि से, कम होता है और इसी प्रकार दो अक्षरों के बीच मे भी अलगाति-अल्प रुकना पडता है। इस रुकने का स्थान उन दो अक्षरो के बीच की मौन स्थिति (स्पर्श वर्णों का द्वितीय अवयव) या श्रव्यता की अल्पता होती है। स्वरत्व की अधिक मात्रा स्वरों में; उससे कम अंत:स्थों मे, फिर सघर्षी वर्णों में और कम से कम स्पर्श वर्णों में होती है। इस प्रकार प्रवाह मे आई हुई ध्वनियो का विभाजन किया जा सकता है। भाषण मे हमे निरंतर स्वरत्व का उत्थान और पतन सुनाई पडता है, इसमे स्वरत्व की अल्पता उसी प्रकार दिखाई देती है जैसे दो पहाडियों के बीच

---

१. ह्वेन टू साउंड्स आव् ए ग्रुप आर सेपेरेटड बाई वन आर मोर साउंड्स लेस सोनोरस दैन आइदर आव् दैम द टू साउंड्स आर सेड टु बिलोंग टु डिफरेंट सिलेबिल्स।
बी० हाल — फोनेटिका, ७, १९६१, पृ० २४०–२४५।

२. हॉगन, सिलेबिल, वही, पृ० २१७-२१९।

३. डा० बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, पंचम संस्करण, पृ० ७३-७४।

को बगड (तराई)। जैसे बगड दो पहाडियो के अलग अलग अस्तित्व को जताती है उसी प्रकार स्वरत्व की अल्पता दो अक्षरो की सीमा निर्धारित करती है। जैसे दो बगडो के बीच के भाग को हम पहाडी कहते है, उसी प्रकार दो अल्प स्वरत्व वाली ध्वनियो के बीच के ध्वनिसमूह को हम अक्षर कहते है।"

यदि हम किसी ध्वनि समूह की दो ध्वनियो के बीच में उन दोनो से कम स्वरत्व रखनेवाली ध्वनि के होने के कारण पृथकता का अनुभव करते है तब हम निश्चयपूर्वक कह सकते है कि वे दो ध्वनियाँ अलग अलग दो अक्षरों की हैं।"

इतना ध्यान रखना चाहिए कि स्वरत्व की मात्रा का ज्ञान अन्य ध्वनियो की तुलना की अपेक्षा पर निर्भर रहता है।'

१.४ अक्षर के प्रकार

प्रधानतः अक्षर दो प्रकार के होते हैं :

१—संवृत्ताक्षर—जिस अक्षर के अंत में व्यंजन ध्वनि होती है जैसे, आग्, सील्, होश्।

२—विवृत्ताक्षर—जिस अक्षर के अंत में स्वर ध्वनि हो, जैसे–जा, ला, दे, न–

प्रो० फर्थ[1] ने पाँच भेद किए हैं :—

व्यंजन स्वर। (ह्रस्व)—विवृत

व्यंजन **स्वरस्वर** (दीर्घता)—मध्यम विवृत

व्यंजन स्वर व्यंजन—मध्यम संवृत

व्यंजन, **स्वर स्वर** (दीर्घता) व्यंजन—दीर्घ संवृत

व्यंजन स्वर व्यंजन व्यंजन—दीर्घ संवृत

ऋक् प्रातिशाख्य[2] मे तौल की दृष्टि से इस प्रकार भेद मिलते है :—

१—लघु—ह्रस्व स्वर युक्त अक्षर

ह्रस्व स्वर तथा व्यंजनयुक्त अक्षर

२—गुरु—दीर्घ स्वर

व्यंजन गुच्छ—आदि अथवा अंत मे

१ फर्थ, जे० आर०-साउंडज ऐंड प्रोसोडीज, टी० पी० एस० १९४८ पृ० १२८-१५२।

२. ऋक् प्रातिशाख्य--८।३७, ८।३८, ८।४१, ८।४२, ८।४३, ८।४४

३—गरीयस–दीर्घ स्वर + व्यंजन

४—लघीयो–बिना व्यजन का अक्षर

१. ५ अक्षर तथा अन्य पारिभाषिक शब्द

१. ५. १ अक्षर व ध्वनि

एक या एक से अधिक ध्वनियो की अव्यवहित इकाई जिसका उच्चारण एक झटके मे किया जा सके अक्षर है।

एक ध्वनि एक अक्षर भी हो सकती है यदि वह ध्वनि स्वर या स्वरवत् आक्षरिक ध्वनि है, जैसे— आ

दो ध्वनि – पा

तीन ध्वनि – कम्

चार ध्वनि – क्रम्

पाँच ध्वनि – प्रश्न्

छह ध्वनि – स्वास्थ्य

कभी कभी ऐसा भी संभव है कि ध्वनियो और अक्षरों की संख्या बराबर रहे–जैसे

दो ध्वनि	दो अक्षर	आ–ओ
तीन ध्वनि	तीन अक्षर	आ–इ–ए

१. ५. २ अक्षर व ध्वनिग्राम (स्वनिम)

अक्षर में एक या एक से अधिक ध्वनिग्राम आ सकते हैं। अक्षर का प्रारंभ ध्वनिग्राम के एक संस्वन से हो सकता है और अन्त दूसरे संस्वन से। उदाहरणार्थ हिदी अक्षर का प्रारंभ ड ध्वनिग्राम के [ड] संस्वन से हो सकता है जबकि अन्त्य उसके दूसरे संस्वन [ड] से होता है।

संध्यक्षर स्वर ध्वन्यात्मक स्तर पर दो स्वरो का योग होता है पर ध्वनिग्रामीय स्तर पर वह एक इकाई है।

ध्वनिग्रामीय अक्षर की परिभाषा देते हुए पाइक[1] महोदय ने लिखा है कि भाषा के गठन के अनुसार पुनर्व्यवस्थित ध्वन्यात्मक अक्षर ध्वनिग्रामीय अक्षर बन जाता है।

किसी भी भाषा का ध्वनिग्रामीय अध्ययन प्रस्तुत करने में आक्षरिक अध्ययन बहुत सहायता प्रदान करता है[2]। जब हम किसी भी ध्वनिग्राम के वितरण का विवरण

१. पाइक, के० एल०—फोनेमिक्स, १९५४, पृ० ६५ तथा ९० ।

२. हागन महोदय ने स्वीकार किया है। वही लेख, पृ० २१६ ।

शब्द की आदि, मध्य और अन्त्य स्थितियाँ के देते हैं तो निश्चित रूप से उसकी पृष्ठभूमि मे 'अक्षर' की सज्ञा होता है। ध्वनिग्रामीय अध्ययन का आधार ही अक्षर है।

१. ५. ३ अक्षर व संक्रमण (संगम)

अक्षर व सक्रमण का पारस्परिक घनिष्ठ सबध है जिस पर विस्तृत चर्चा आगे की गई है। हैरिस[1] महोदय ने तो आक्षरिक विभाजन की समस्त चर्चा सक्रमण के साथ ही की है :

अंग्रेजी शब्द a name (a—neym)
an aim (an—eym)

उपर्युक्त उदाहरणो मे ध्वनिग्राम वही हैं फिर भी आक्षरिक विभाजन मे जो अतर है उसके पीछे सक्रमण की स्थिति है।

निम्नलिखित उदाहरणो में भी यही स्थिति है :

a nice man
an ice man

१. ५ ४. अक्षर तथा रूपमात्र (पदिम)

'अक्षरसमुदाय' पदम्'
—वाजसनेयी प्रातिशाख्य। ८, ४६।

'अक्षर का समुदाय ही पद है।' यह परिभाषा अब पर्याप्त सत्य नही।

'रूपमात्र' और 'अक्षर' एक ही नही हैं, वैसे यह सभव हो सकता है कि एक अक्षर एक रूपमात्र भी हो, जैसे—चल्, गा, ला, अब् आदि।

यह भी हो सकता है कि जिस शब्द मे जितने अक्षर हो उतने ही रूपमात्र भी हो, जैसे—

अ-चल्/दो अक्षर हैं और
{अ—} { चल् } दो रूपमात्र भी हैं।
एक अक्षर मे दो रूपमात्र भी सभव हैं :
थी—एक अक्षर
{था}+{ई} स्त्रीलिग प्रत्यय—दो रूपमात्र

एक रूपमात्र मे कई अक्षर भी सभव हो सकते हैं। प्रो० ग्लीसन[2] ने एक अँग्रेजी उदाहरण दिया है :—

---

१. हेरिस, जेड० एस०—स्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स, पृ० ८२।

२. ग्लीनस, एच० ए०—एन इंट्रोडक्शन टु डिस्क्रिपटिव लिंग्विस्टिक्स, १९६१ पृ० ५३.

Connecticut--Kənetıkıt इस शब्द मे चार अक्षर समाहित हैं।

{टोक्रा} एक रूपमात्र।

टोक्-रा दो अक्षर है।

इस पर भी विस्तृत विवेचन अपेक्षित है जो आगे किया जाएगा।

१. ५. ५ अक्षर व शब्द

एक अक्षर एक शब्द भी हो सकता है पर एक शब्द एक अक्षर या अधिक अक्षरो का समूह होता है। शब्द सीमा और अक्षर सोमा पर विस्तृत विवेचन किया जाएगा।

अक्षर और शब्द का संबंध

एकाक्षरी	शब्द	जैसे	गा,	आग्,	अस्त्
द्वयक्षरी	शब्द	जैसे	पाया	शिखर	हानि
त्र्यक्षरी	शब्द	जैसे	जवाहर्	पुरस्कार	
चतुरक्षरी	शब्द	जैसे	हरियाली		

अगर अक्षर एक 'स्पन्द' है तो शब्द स्पन्दो का समूह मात्र कहा जा सकता है।

'लेट अस रिगार्ड द सिलेबिल एज़ पल्स ऑर बीट ऐंड ए वर्ड ऑर पीस एज़ ए सोर्ट अव् बार लेंग्थ...।' फर्थ।

१. ६. १ अध्ययन की आवश्यकता

'जैसा लिखा जाय, वैसा ही पढ़ा जाय और जैसा उच्चरित हो वैसा ही लिखा जाय' किसी भाषा का सबसे बड़ा गुण है। इस दृष्टि से संस्कृत भाषा शत-प्रतिशत ध्वन्यात्मक कही जा सकती है। वैदिक सस्कृत मे तो उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि स्वरो से युक्त प्रत्येक अक्षर का उच्चारण निश्चित था। काल के प्रवाह से हिंदी तक आते-आते शब्दो के लिखित रूप और उनके उच्चारणों मे भेद हो गया। हिंदी भाषा-भाषी के लिए प्रत्येक शब्द का उच्चारण और उसका आक्षरिक स्वरूप अभ्यास से सहज एव सुलभ है, पर अहिंदी भाषा-भाषी के लिए उसमे कठिनाई है। आक्षरिक सीमा तथा बलाघात का ठीक प्रयोग उनके लिए समस्या है। हिंदी के फैलते हुए रूप को देखते हुए यह नितात आवश्यक हो गया है कि उसके शब्दो के उच्चारण एवं लिखित रूपो में एकरूपता हो, साथ ही अहिन्दी क्षेत्र के जिज्ञासुओ एवं हिंदी-प्रेमियो के लिए वह कोशो तथा पुस्तको के माध्यम से सुलभ हो।

हिंदी भाषा मे आक्षारिक विन्यास पर अभी तक कोई पूरा कार्य न था। हिंदी के व्याकरणों[1], भाषा विज्ञान की पुस्तकों[2], तथा कुछ शोध निबंधों[3] में यत्र तत्र इस विषय पर सामग्री मिलती है।

इस राष्ट्रीय महत्व के कार्य की आवश्यकता का अनुभव मैने आज से चौदह वर्ष पूर्व किया था। इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता का अनुभव इधर कई विद्वानो ने किया। ज्यों ज्यों मैने देखा कि मेरे विषय से संबधित समस्याओं पर लोगो मे रुचि बढ रही है, मेरी अपने अध्ययन मे रुचि बढती गई। इधर १९६२ ई० मे श्रद्धेय डा० बाबू राम सक्सेना[4] का 'ध्वनि अनुरूप वर्तनी की समया' शीर्षक निबंध प्रकाशित हुआ, इससे मुझे आतरिक प्रेरणा मिली कि क्यो न मै इस अध्ययन को शीघ्रातिशीघ्र पूरा कर डालूँ।

हमारे यहाँ प्राचीन शास्त्रो मे अनेक ऐसे उल्लेख मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि हमारे यहाँ शुद्ध उच्चारण का कितना महत्व था। यह तो सर्व विदित हे कि इद्रशत्रु मे प्रथम अक्षर पर उदात्त हो तो बहुव्रीहि समास होगा और अर्थ होगा 'इंद्र हे शत्रु जिसका' और यदि अतिम अक्षर उदात्त होगा तो तत्पुरुष समास की दृष्टि से अर्थ होगा 'इंद्र का शत्रु'। इस प्रकार सुरभेद से अर्थ-भेद हो जाता था।

एक एक अक्षर के शुद्ध उच्चारण का महत्व था। पाणिनीय शिक्षा[6] मे एक स्थान पर आया है—

अवाक्षरम् अनायुष्यम् विस्वरम् व्याधिपीडितम्।
अक्षता (र?) शास्त्ररूपेण वज्रम् (?) पतति मस्तके॥ ५३॥

---

१. कामता प्रसाद गुरु – हिंदी व्याकरण, नि० ४०।
बेसिक ग्रामर–शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पृ० १२–१३।

२. श्यामसुंदरदास–भाषा रहस्य, स० १९६२, पृ० २३६, २४०।

३. उर्दू–डा० मसूद हुसैन—ए फोनेटिक ऐंड फोनोलोजिकल स्टडी अव् द वर्ड इन उर्दू।
हिंदी–प्रो० रमेशचद्र मेहरोत्रा, इंडियन लिंग्विस्टिक्स—टर्नर वोल्यूम।

४. श्री राजेंद्र द्विवेदी—ध्वनि अनुरूप लेखन, भाषा, नवंबर १९६१।
डा० हरदेव बाहरी—हिंदी कोशो में उच्चारण संकेतों की आवश्यकता, वही।

५. भाषा, वसंत १९६२, पृ० ७५।

६. पाणिनीय शिक्षा–सं० मनमोहन घोष, कलकत्ता वि० वि०।

जब (किसी मत्र मे) कोई अक्षर कम हो तो जीवन क्षय हो सकता है और जब अक्षर उचित सुर के साथ न पढा जाय तो इससे पढनेवाला व्याधि से पीड़ित हो सकता है और जब कोई अक्षर अशुद्ध हो उच्चरित किया जाय तो वह उच्चरित रूप दूसरे के सिर पर वज्र की तरह पड़ता है।

फिर क्यो न पाणिनि के देश मे पाणिनि का इस परपरा का निर्वाह किया जाय और हिंदी भाषा जैसी वैज्ञानिक तथा विकासशील भाषा का ऐसा कोश तैयार किया जाय जो सब दृष्टियो से पूर्ण हो।

मेरा यह अध्ययन भी इस महासागर मे चचु प्रवेश है और उस विशाल राष्ट्रीय महत्व के महायज्ञ मे एक आहुति।

१. ६. २ अध्ययन का क्षेत्र :

इस अध्ययन के प्रस्तुत करने से पूर्व मे इस विषय पर ही राजर्षि अभिनंदन ग्रंथ में एक शोध निबध लिख चुका था जिसको सामग्री सकलन का आधार मैंने बेसिक कक्षाओ मे पढ़ाई जानेवाली ५वी कक्षा तक की पाठ्य पुस्तको की शब्दा-वली को रक्खा था। इन पुस्तकों के आधार पर लगभग १०,००० चिटे विश्लेषणार्थ मे उस समय ही बना चुका था। इन पुस्तको क अतिरिक्त इधर फिर धीरे धीरे बोलचाल की शब्दावली, अरबी, फारसी, अंग्रेजी के गृहीत शब्द, केंद्रीय सरकार द्वारा प्रकाशित २,००० शब्दो की 'बेसिक शब्दावली' आदि स इस भाडार मे लगभग १०,००० शब्द और बढा लिये गये। कोशो का प्रयोग जानबूझकर छोड़ दिया गया है क्योंकि एक तो इसस निरर्थक शब्दावली की भरमार हो जाती है दूसरे बहुत से उपयोगी बोलचाल के तथा अभी अभी प्रचलित शब्द रह जाते हैं। आवृत्तिपरक अध्ययन के लिये मैने भू० स्व० प्रधान मंत्री का व 'राष्ट्र क नाम संदेश' चुना है जो उन्होने २२ अक्टूबर की रात्रि को चीन के आक्रमण के तुरंत बाद आकाशवाणी से दिया था।

इस प्रकार इस अध्ययन मे लगभग २०,००० शब्दावली का प्रयोग किया गया है। इतने विशाल भू-भाग मे जो भाषा बोली तथा समझी जाती है, जो निरंतर विकासमान है, (राजभाषा हेतु) जिसमे प्रतिदिन सहस्रो शब्दो का निर्माण हो रहा है जिसमे दूसरी भाषाओ से शतशः शब्दो को समाहित किया जा रहा है उस भाषा के एक पक्ष को लेकर यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पर इस अध्ययन की पूर्णता का दावा करना दुराग्रह मात्र होगा। यदि मै कुछ सामान्य सिद्धात ही इस अध्ययन के परिणामस्वरूप प्रस्तुत करने मे समर्थ हो सका तो अपने प्रयास को सफल समझूँगा।

अध्याय २

हिंदी का ध्वनिग्रामीय अध्ययन

और

अक्षर

हिंदी का ध्वनिग्रामीय अध्ययन और अक्षर

२ पिछले अध्याय में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि 'अक्षर' मे स्वर का अत्यधिक मुखरता तथा सस्वनता के कारण महत्त्व है। इसीलिए स्वर को आक्षरिक ध्वनि कहा गया है। आक्षरिक ध्वनि स्वर ही हो, ऐसा नही। व्यंजन भी आक्षरिक हो सकते हैं। इस दृष्टि से अक्षर के निर्माण मे व्यंजनो का भी महत्त्व है। व्यंजन यदि आक्षरिक नही भी हो तो भी अक्षर का प्रारंभ तथा अंत व्यंजन से हो सकता है। व्यंजन से अंत होने वाले अक्षर 'संवृताक्षर' कहलाते हैं।

'अक्षर' मे स्वर निरनुनासिक तथा अनुनासिक दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इस दृष्टि से अनुनासिकता का भी अक्षर मे विशेष महत्त्व है।

बलाघात का भी अक्षर में महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि बलाघात का सीधा संबंध अक्षर से है। किसी भी शब्द मे बलाघात उस शब्द के अक्षर पर ही तो पड़ता है।

२.१ हिंदी के स्वर :

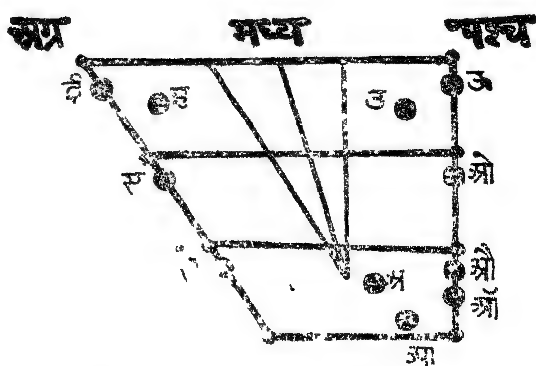
२.१.१ मूल स्वर :

२.१.१.१ ह्रस्व स्वर—/अ/, /इ/, /उ/।

२.१.१.२ दीर्घ स्वर—/आ/, /ई/, /ऊ/, /ए/, /ऐ/, /ओ/, /औ/।

२.१.१.३ विशेष स्वर—/ऑ/ विशेष रूप से अंग्रेजी के आगत शब्दो मे प्रयुक्त।

मूल स्वरों का चार्ट :



नोट : [ऐ] और [औ] स्वरो का उच्चारण मूल स्वर तथा संध्यक्षर स्वर के रूप मे होता है।

२ १ १ मूल स्वरों की ध्वनिग्रामीय (स्वनिम) व्यवस्था :

संख्या	स्वनिम	प्रधान संस्वन	स्वर का विवरण तथा वितरण	उदाहरण ध्वनिग्रामीय ध्वन्यात्मक स्वनिमात्मक		अर्थ
१.	।ई।	[ई]	अग्र संवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य अन्त्य ईख् लील् लाली	। कील् ।	[कील]	लोहे की मेख या खूटी
२.	।इ।	[इ]	अग्र सवृत ह्रस्व स्वर (ई) की अपेक्षाकृत निम्नस्थानीय है । आदि मध्य अन्त्य इन किस पति[1]	। किल । । किन ।	। कील्] [किन्]	निश्चय किस का बहुवचन
३.	।ए।	[ए]	अग्र अर्द्धसंवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य अन्त्य एक् बेल् ले	। केला ।	[केला]	एक प्रकार का फल
४.	।ऍ।	[ऐ]	अग्र अर्द्धविवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य अन्त्य ऐब् बैल् है	।कैलास[2]। । कैला ।	[कैलास] [कैलास]	हिमालय की एक चोटी एक देवी विशेष

१. अंतिम स्थिति में (इ) और (उ) कुछ बोलियों में तो फुसफुसाहट वाले हो गये हैं पर परिनिष्ठित हिंदी में उच्चरित रूप में ये स्वर अन्त्य स्थिति में दीर्घ हो जाते हैं। यदि बोलचाल में हम ध्यान से सुने तो प्रीति, व्याधि, रात्रि, प्रभु, बुद्धि, गुरु के स्थान पर हमें प्रीती, व्याधी, रात्री, प्रभू, भक्ती, बुद्धी तथा गुरू सुनाई पड़ते है।'
यही बात उर्दू के संबंध में डॉ० मसूद हुसैन ने कही है।
इस प्रवृत्ति की ओर ध्यान डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा ने भी अपने इंडियन लिंग्विस्टिक्स के बागची वोल्यूम वाले लेख में आकर्षित किया है।

२. इस शब्द में 'ऐ' का संस्कृत में उच्चारण संध्यक्षरीय है। हिंदी में यह ध्वनि शुद्ध स्वर की तरह ही अधिक उच्चरित होती है।

५. ।अ। [अ।] अर्द्ध विवृत मध्य ह्रस्व स्वर ।कल्। [कल] आनेवाला या
मध्य स्थिति अन्त्य[1] बीता हुआ दिन
कल्

[अ] यह संस्वन [अ] की अपेक्षाकृत ।अब। [अब] इस समय
अधिक विवृतावस्था मे है
प्रायः आदि स्थिति मे, जैसे,
अब्

---

१. अन्त्य स्थिति के उच्चारण के सबंध में पर्याप्त मत वैभिन्य है :
प्राचीन परिपाटी के व्याकरण तो सर्वत्र (अ) की स्थिति स्वीकार करते हैं कुछ भाषाविद् ऐसे हैं जो कि कुछ स्थितियों में (अ) के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और कुछ में नही, जैसे—डा० बाबूराम सक्सेना : सयुक्त व्यंजनों के अंत मे (अ) की स्थिति को स्वीकार करते है :

'शब्दान्त में आने वाले ह्रस्व स्वरों (अ, इ, उ) में 'अ' का उच्चारण केवल संयुक्त व्यंजनो के साथ सुरक्षित रह गया है, जैसे—क्षेत्र, कृष्ण, भक्त आदि ।

भाषा विज्ञान विशेषाक, साहित्य सन्देश पृ० ५३ ।

आप का यह मत अभी तक है 'हिन्दी के परिनिष्ठित (मानक) रूप में शब्दों के अन्त का अकार उच्चरित नहीं होता, केवल संयोग (संयुक्त व्यंजन) के उपरान्त सुनाई पड़ता है, विशेषकर तत्सम शब्दों में यथा राम, बात, किताब, हार आदि में अन्तिम 'अ' का उच्चारण नही है किन्तु कृष्ण, प्रद्युम्न आदि में है ।'

भाषा, वर्ष १, अंक ३, बसत १९६२, पृष्ठ ७६ ।

मैंने इस समस्या पर गंभीरता से विचार किया है और इस क्षेत्र में अनुसन्धान में प्रवृत्त अपने मित्रों, गुरुओ (देश तथा विदेश में) से भी परामर्श लिया है । कुछ प्राप्त पत्रो के अश यहाँ दे रहा हूँ :

डा० विश्वनाथ प्रसाद—'इन उदाहरणो । प्रश्न, अवश्य, स्वास्थ्य । के अन्त्य सयुक्त वर्णों के बाद जो एक हल्की स्वरवत् ध्वनि सुनाई पड़ती है वह वस्तुतः स्वर नहीं मानी जा सकती । मै तो उसे केवल रागमात्र मानूँगा जिसे ə या p या ɪ या ɪ द्वारा द्योतित किया जा सकता है ।'

डा० भोलानाथ तिवारी—'हाँ, आप का प्रश्न कदाचित् अन्त्य संयुक्त व्यंजनों में 'अ' के प्रयोग के बारे में है । मैंने इस पर सोचा, कुछ लोगों से

भी पूछा है। मैं समझता हूँ कि अन्त्य 'अ' उच्चरित नहीं होता है।'
ताशकन्द विश्वविद्यालय से प्राप्त २१. ४. ६३ का पत्र।

श्री रमेश चन्द्र मेहरोत्रा–हिन्दी सिलेबिक स्ट्रक्चर, टर्नर वोल्यूम, १९५६, पृष्ठ २३२।

डा० मुरारी लाल उप्रेति:–द प्रेजेन्स अव् [ə] आफ्टर C/2 फोलोइंग कान्सोनेंट कलस्टर्ज़) विच वी सस्पेक्ट इज फ्यूटाइल बिकाज इट इज ए रिलीज ऑर ग्लोजन।

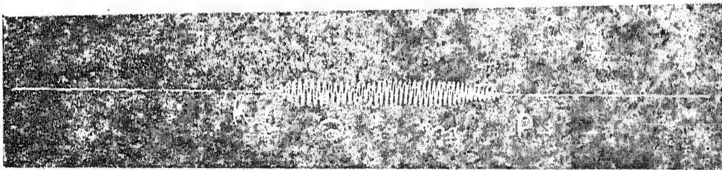
मैंने इस संबंध में विशेष ध्यान से उच्चारणों को सुना है और अपने काइमोग्राफिक उच्चारणों के आधार पर कुछ निष्कर्ष इस प्रकार निकाले हैं :

१. वे शब्द जिनके अंत में समस्थानीय दो व्यंजन ध्वनियाँ गुच्छ रूप में हों। — लम्ब् तथा अन्त्

इनमें अन्त्य 'अ' बिल्कुल नहीं है

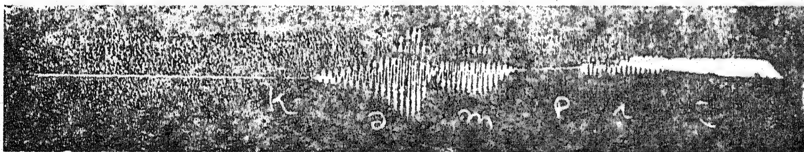
यहाँ पर ही मैं कंप् और अंत् के काइमोग्राफ से लिये गये चित्र भी लगा रहा हूँ, साथ ही 'कंप्' का 'कंपित्' से तथा 'अंत्' का 'अंतिम्' से स्पष्ट अंतर प्रकट करने के लिये उनके चित्र भी छापे जा रहे हैं।

कम्प



क् अ म् प्

कम्पित



क् अ म् प् इ त्

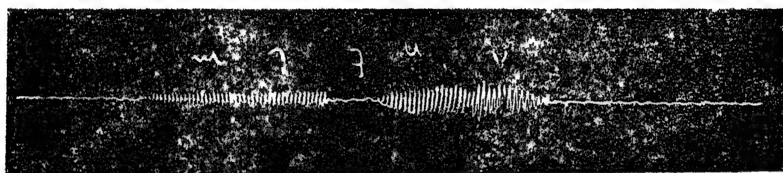
६.	|आ|	[आ]	मध्य विवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य अन्त्य आम् काम् खा	|काल|	[काल्]	समय
७.	|ऑ|	[ऑ]	पश्च अर्द्ध विवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य ऑल् बॉल् |खेल में प्रयुक्त तथा फुटबॉल|	|कॉल|	[कॉल्]	पुकार अँग्रेजी आगत शब्द 'टेलीफोन' में प्रयुक्त

अन्त



अ न् त्

अन्तिम



अ न् त् इ म्

नोट :—इस सबंध में स्पैक्टोग्राफ़िक चित्रों के लिए लेखक का 'अक्षरात' 'अ' शीर्षक लेख द्रष्टव्य है।

२, वे शब्द जिनके अंत में भिन्न-स्थानीय व्यंजन ध्वनियों का गुच्छ हो।	क्षुद्र अंत्य	'अ' उन उच्चारणों में सुनाई पड़ता है जहाँ गति धीमी होती है। अन्यथा 'अ' का अस्तित्व नहीं है।
३. वे शब्द जिनके अंत में अर्द्धस्वर के साथ व्यंजन गुच्छ हो।	कार्य	अंत्य 'अ' कुछ न कुछ अवश्य सुनाई पड़ता है। हो सकता है अर्द्ध स्वर के कारण कुछ स्वरत्व सुनाई पड़ता हो।

८.	|औ|	[औ]	पश्च अर्द्ध-विवृत-सवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य अंत्य औरत् कौर् नौ	|कौल|	[कौल्]	उत्तम कुल मे उत्पन्न
६.	|ओ|	[ओ]	पश्च अर्द्ध सवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य अंत्य ओर, कोर, जो	|कोल|	[कोल्]	सूअर तथा अलीगढ़ की एक तहसील
१०.	|उ|	[उ]	पश्च सवृत ह्रस्व स्वर आदि मध्य अंत्य उस् बुन् पशु	|कुल|	[कुल्]	सब या कुटुम्ब
११.	|ऊ|	[ऊ]	पश्च सवृत दीर्घ स्वर आदि मध्य अंत्य ऊन्, दूर, भू	|कूल|	[कूल्]	किनारा

स्वर संबंधी टिप्पणी :

१, अ, इ, उ स्वरों के आ, ई, ऊ स्वर क्रमशः केवल दीर्घ रूप ही नहो हे वरन् इनमे ('अ' ओर' आ' मे, 'इ' आर 'ई' मे, 'उ' ओर 'ऊ' मे) उच्चारण स्थान की दृष्टि से भी अंतर हे। इस प्रकार 'इ' तथा 'ई' मात्रा ही नही गुण की दृष्टि से भी पृथक्-पृथक् दो स्वर हैं।

२. प्रत्येक स्वर शब्द के प्रारभ (आदि), मध्य या अत में आ सकता है। केवल ह्रस्व स्वरात शब्दो मे स्वर या तो लुप्त हो जाते हैं या दीर्घ।

२.१.२ संध्यक्षर स्वर :

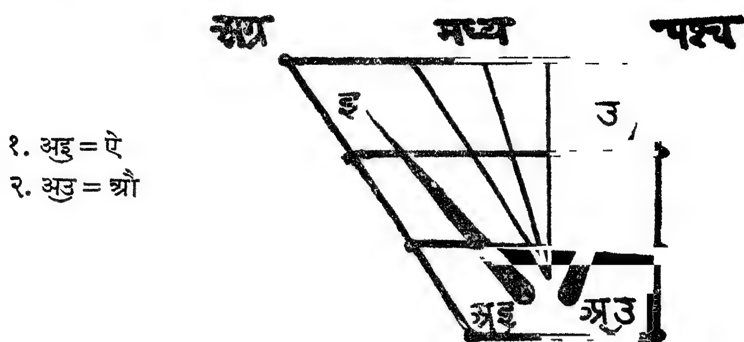
२. १. २.० संध्यक्षर वह स्वर है जिसके उच्चारण करते समय जिह्वा एक स्थिति से दूसरी स्थिति मे इतनी शीघ्रता से हटती है कि उच्चरित स्वर-ध्वनियो का गुच्छ दो अलग-अलग ध्वनियाँ न होकर एक ही स्वर-ध्वनि होता है। उच्चारण के समय जिह्वा जब एक स्वर से दूसरे स्वर पर शीघ्रता से हटती हे तो ध्वनि-गुण मे परिवर्तन स्पष्ट मालूम पड़ता है। जिह्वा के साथ होठों की आकृति में भी कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य होता है।

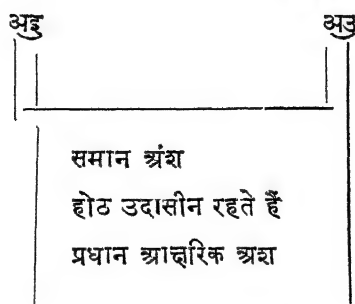
२. १, २. १ अक्षर-निर्माण मे संध्यक्षर :

अक्षर निर्माण मे संध्यक्षर का भी वही महत्त्वपूर्ण स्थान है जो मूल स्वर का होता है। संध्यक्षर में दो स्वरों का एकाकार रूप रहता है जिसमें से एक स्वर मूल स्वर रहता है और दूसरा अश किसी दूसरे स्वर का श्रुति-अंश होता है। इस प्रकार यह एक आक्षरिक ध्वनि है।

२. १. २. २ हिंदी संध्यक्षर स्वर :

१. अइ = ऐ
२. अउ = औ





विपरीत दिशा मे जाने
वाले अंश।
होठो की स्थितियाँ भिन्न हैं :
ई—चौडे होठ
ऊ—गोलाकार होठ

।ऐ–अइ। मध्य अर्द्ध विवृत से अग्र अर्धसवृताभिमुखी सध्यक्षर स्वर ।गैया। [गइआ]
अधिकांशत. अर्द्ध स्वरो से पूर्व उच्चरित होता है या संस्कृत
तत्सम शब्दो मे।

आदि	मध्य
अइयाश	नइया
अइयार	भइया
	दइया

नोट : स्वर-सयोग से भिन्नता : कई = क-ई मे 'अ' तथा 'ई' दोनो स्वर आक्षरिक हैं।

/औ-अउ/ मध्य अर्द्ध विवृत से पश्च अर्द्धविवृत अविवृत्ती संध्यक्षर /कौआ/ [कउआ]
स्वर अधिकांशतः व्यंजनों से पूर्व उच्चरित होता है
या संस्कृत तत्सम शब्दों में ।

आदि	मध्य
अउपचारिक	पउआ
	चउवन्

नोट : स्वर संयोग से भिन्नता : 'गौ' पुराना उच्चारण संध्यक्षर जैसा होते हुए भी आज 'गऊ' ही कहते हैं जिसमें 'अ' तथा 'ऊ' का स्वर-संयोग है । 'जौ' का उच्चारण अब भी संध्यक्षर स्वर के स्थान पर अर्द्ध विवृत अवृत्ताकार दीर्घ स्वर की भाँति होता है अतएव हम उसको 'जौ' ही लिखते हैं ।

२.. १. २. ३ संध्यक्षर और स्वर-संयोग में भेद :

संध्यक्षर में दो स्वर मिलकर एकाकार हो जाते हैं इसीलिए उसको 'ध्वनिग्राम' (स्वनिम) रूप में इकाई माना गया है जब कि स्वर-संयोग में दोनों स्वर पृथक् पृथक् रहते हैं । संध्यक्षर स्वर ध्वनि अपने साथ एक मूल स्वर के अतिरिक्त आगे अथवा पीछे एक बहुत कम मुखर श्रुति को रखती है । यदि दोनों स्वर समान रूप से मुखर हैं तो वह स्वर-संयोग कहलाएगा, जैसे, नाई में ना-ई में 'आ' तथा 'ई' दोनों स्वर ध्वनियाँ मुखर हैं और अक्षर का निर्माण करने में समर्थ हैं ।

२. १. २. ४ संध्यक्षर और अक्षर :

हिंदी में संध्यक्षर स्वर अधिकांशतः अक्षर के मध्य या अंत में आते हैं । आदि स्थिति में 'औपचारिक', 'अइयाश', 'अइयार' जैसे कुछ फारसी तथा संस्कृत के शब्दों को छोड़कर इसका प्रयोग नहीं होता है ।

२. १. ३ 'ऋ' पर टिप्पणी :

हिंदी के लिखित रूप में 'ऋ' का प्रचलन होते हुए भी उसका प्रचलित उच्चारण 'रि' ही अधिक है । यही कारण है कि यहाँ स्वरों में उसको स्थान नहीं दिया गया है । 'ऋ' का उच्चारण आज से बहुत कालपूर्व पालि-काल में ही समाप्त हो गया था । भारत की विभिन्न भाषाओं में इसका 'विकास 'र', रि' तथा 'रु' तीन रूपों में मिलता है । हिंदी के तद्भव शब्दों में अधिकांशतः इसका उच्चारण 'रि' मिलता है । व्यावहारिकता की दृष्टि से सभी भाषाविद् एक मत

हैं जिनमें सर्व श्री डॉ० बाबूराम सक्सेना[1], डॉ० हरदेव बाहरी[2], श्री राजेंद्र द्विवेदी[3] आदि उल्लेखनीय हैं।

२. १ ४ आन्तरिक स्वरों की मात्रा

२. १. ४. ० अक्षर का मूल केंद्र स्वर है। पीछे स्पष्ट किया जा चुका है कि हिंदी में अ, इ, उ, ह्रस्व स्वर हैं और आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अइ, अउ दीर्घ स्वर हैं।

२. १. ४. १ अंत्य स्थिति में दीर्घ स्वर भी (यदि बलाघात नही है) अल्प दीर्घ हो जाते हैं।

२. १. ४. २ सघोष ध्वनियो के पूर्व दीर्घ स्वरो की मात्रा अघोष ध्वनियो से पूर्व दीर्घ स्वरो की मात्रा से दीर्घतर होती है, जैसे,

आ.. ब	आप
आ.. घ	आठ
ई.. द	ईख

१. साहित्य संदेश, भाषाविज्ञान विशेषांक, सन् १९५७, पृष्ठ ५३।

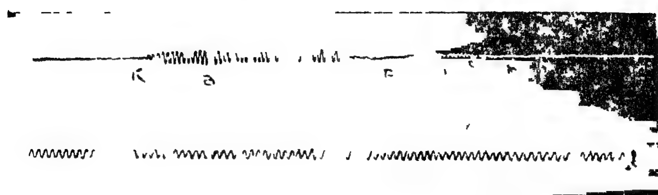
२. 'ऋ' और 'ष' का अपना विशिष्ट उच्चारण नहीं रह गया है।
हिंदी कोशों में उच्चारण संकेतों की आवश्यकता, भाषा, नवंबर १९६१, पृष्ठ ३९।

३. 'ऋ' का उच्चारण आज 'रि' रह गया है और 'ऋ' से शुरू होने वाले ऋतु, ऋचीक, ऋण आदि सभी संस्कृत शब्द हिंदी मे उच्चारण के आधार पर रितु, रिचिक और रिण लिखे जा सकते हैं। इसी प्रकार कृपा को क्रिपा, हृदय को ह्रदय, गृहीत को ग्रहीत (यह तो लिखा भी जाता है) लिखकर भी काम चलाया जा सकता है। काम चलाना ही नहीं इसमें तो ध्वन्यनुरूप लिखने का गुण भी है।
ध्वनि अनुरूप लेखन–भाषा, नवंबर १९६१, पृष्ठ ३०।

नोट : 'ऋ' और 'रि' पर एक शास्त्रीय विवेचनात्मक लेख श्री बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' द्वारा भाषा, जून १९६२ के अंक में प्रकाशित हुआ है जिसमें लेखक ने तर्कों द्वारा 'ऋ' की पुन स्थापना करने की कोशिश की है।
'सारांश यह है कि 'ऋ' और 'रि' में बहुत बड़ा एवं तात्विक अंतर है परंतु उच्चारण की परंपरागत असावधानी के कारण हम दोनो को एक-सा पाते हैं।'

२. १. ४. ३ द्यक्षरात्मक शब्दों मे यदि दोनों अक्षरों के स्वर ह्रस्व हैं तो भी प्रथम अक्षर के ह्रस्व स्वर की मात्रा द्वितीय अक्षर के ह्रस्व स्वर की मात्रा से अधिक होगी, जैसे,

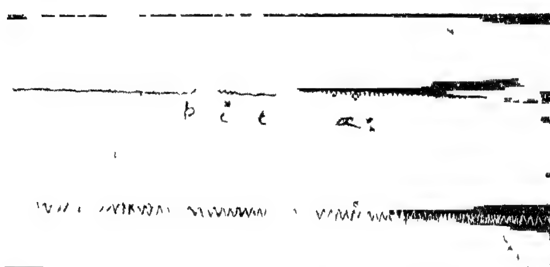
कल्पित = कल्–पित्



क् अ ल् प् इ त्

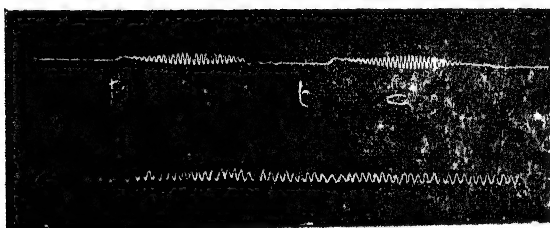
२. १. ४. ४ एक सी स्थिति में दीर्घ स्वर की मात्रा ह्रस्व स्वर की मात्रा के दुगुने से अधिक (सामान्यतः) होती है, उदाहरणार्थ,

पिता



प् इ त् आ

पीता



अ तथा आ प् ई त् आ

पता	पाता
–अ– –आ	–आ– –आ
६ २१	२० २१

२. १. ४. ५. त्र्यक्षरात्मक शब्दो मे यदि प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व हो और शेष दो अक्षरो के स्वर दीर्घ हो तो सामान्यतः प्रथम अक्षर के ह्रस्व स्वर की मात्रा से द्वितीय अक्षर के दीर्घ स्वर की मात्रा दुगने से अधिक रहती है और तृतीय अक्षर की दीर्घ स्वर की मात्रा द्वितीय स्वर की मात्रा से दीर्घतर हो जाती है। सौभाग्य से कुछ वर्ष पूर्व क० मु० हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के एम० ए० (भाषा विज्ञान) के फाइनल कक्षाओ के विद्यार्थियो के साथ प्रयोगात्मक कक्ष मे काम करने का अवसर मिला। तीन विद्यार्थियो ने काइमोग्राफ पर एक ही शब्द को तीन-तीन बार बोलकर उसके स्वरो की मात्रा की नाप का और औसत नाप प्रस्तुत की वह यहाँ नीचे अ, ब, स के रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है। मैने फिर तीनो का औसत निकालकर अंतिम 'मात्रा' प्रस्तुत की है।

पपीता :

	प	पी	ता
	–अ–	–ई–	–आ
अ	८	१७	२२
ब	१०	१७	२२
स	७	१८	१९
	२५	५२	६३

औसत ८.३ सी० एस० १७.३ सी० एस० २१ सी० एस०

पटाका

	प	टा	का
	–अ–	–आ–	–आ
अ	८	१८	२२
ब	८	२२	२५
स	७	१९	२०
	२३	५९	६७

औसत ७.६ सी० एस० १९.६ सी० एस० २२.३ सी० एस०

२.१.५ स्वर संयोग :

२. १. ५. ० हिंदी मे सभी स्वरो का दूसरे स्वरो से कुछ स्थितियों में संयोग भी पाया जाता है। हिंदी की उपभाषाओ और बोलियो मे स्वर संयोगो की संख्या अधिक है।

स्वर-संयोगो के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं,

गई, गऊ, गए,

टाई, नाऊ, जाए, जाओ आदि ।

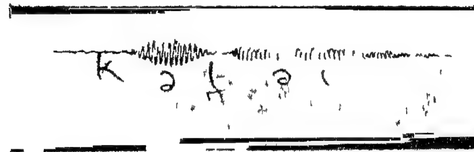
२. १५. १ स्वर-संयोगों की तालिका :

प्रथम स्वर / द्वितीय स्वर

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ
अ		+		+		+	+		
आ		+		+		+	+		+
इ		+					+		+
उऊ		+		+			+		
ए		+		+			+		
ओ		+		+			+		

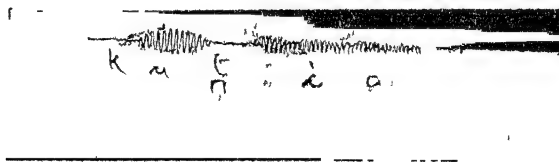
२. १. ५. २ स्वर-संयोगों के काइमोग्राफिक चित्र

अ तथा ई : कतई



क् अ त् अ ई

इ तथा आ : कुतिआ



क् उ त् इ आ

२. १. ५. ३ संध्यक्षर स्वर के साथ संयोग :

संध्यक्षर के साथ भी संयोग मिलता है :

अइ – आ गइआ

अउ – आ हउआ

२. १. ५. ४ तीन स्वरों का संयोग :

तीन स्वरो का सयोग भी पाया जाता है। जिन शब्दो मे तीन स्वरो का संयोग पाया जाता है उनमे 'य' अथवा 'व' श्रुति भी आ जाती है : जैसे,

भइआ —य–श्रुति

कउआ —व–श्रुति

बिना श्रुति रूप के : पिआऊ

गाइए

सोइए

तालिका :

प्रथम स्वर	द्वितीय स्वर	तृतीय स्वर आ	ऊ	ए
इ	आ		+	
अ	इ	+		
	उ	+		
आ	इ			+
ओ	इ			+

२. १. ५. ५ स्वर-सयोग और संक्रमण :

दो शब्दो के मध्य सक्रमण (सगम) की स्थिति मे भी स्वर सयोग संभव है, जैसे,

तू + आ ऊ–आ

आ + ओ आ–ओ

इस स्थिति मे यदि समस्त शब्दावली से उदाहरण जुटाए जायँ तो हर स्वर के बाद कोई दूसरा स्वर आ सकता है जिससे वह शब्द प्रारभ हो रहा है। इस प्रकार स्वर सयोगो की संख्या पूरी १०० हो जायेगी, जैसे,

अ—के साथ संयोग	न + अब जा	अ + अ
	न + आग ला	अ + आ
	न + इधर आ	अ + इ
	न + ईख ला	अ + ई
	न + उल्टा कर	अ + उ
	न + ऊपर जा	अ + ऊ
	न + एक किताब ला	अ + ए
	न + ऐश कर	अ + ऐ
	न + ओला खा	अ + ओ
	न + औरत को दे	अ + औ

२.२ अनुनासिकता :

२.२.० हिंदी मे अनुनासिकता का भी विशेष महत्त्व है। किसी भी स्वर को अनुनासिक तथा निरनुनासिक दोनो ही प्रकार से शब्दो मे प्रयुक्त करते है। दोनो प्रकार के स्वरो का हिंदी मे व्यतिरेकी संबंध है अतएव हिंदी मे अनुनासिकता का ध्वनिग्रामीय (स्वनिमात्मक) महत्त्व है।

२.२.१ अनुस्वार से भेद :

अनुस्वार हंस = पक्षी
अनुनासिकता हँस = हँसना क्रिया का प्रेरणार्थक रूप
अनुस्वार से अनुनासिकता का व्यतिरेकी संबंध
स्थापित हुआ।

२.२.२ नासिक्य व्यंजन से भेद :

वेदांत नासिक्य व्यंजन न् के साथ। } व्यतिरेकी सबंध
दाँत अनुनासिकता के साथ।

२.२.३ शुद्ध स्वर से भेद :

२.२.३.१ आदि स्थिति अ –अगार् –आगे
अँ –अँगार् –आग का भाग
आ –आधी –½ हिस्सा
आँ –आँधी –धूलमय तेज हवा

२.२.३.२ मध्य स्थिति आ –भाग हिस्सा
आँ –भाँग् –मादक पदार्थ
आ –बाट् –मार्ग प्रतीक्षा
आँ– बाँट् –तोलने का पदार्थ
ऐ – पैग –अँग्रेजी शब्द
ऐँ – पैंग –झूलने से संबद्ध
ओ– गोद –माँ की गोद मे
ओँ– गोँद –एक पदार्थ जो चिपकता है।

२.२.३.३ अंत्य स्थिति ओ–भागो –भागना क्रिया का आज्ञार्थक
ओँ–भागोँ - भाग का बहुवचन
ई –कही –'कहना' का भूतकाल।
ईं–कहीं –अव्यय

२.२.४ सभी स्वर अनुनासिकता के साथ व्यवहृत हो सकते हैं, जैसे,

अ –अँ –हँसना
आ–आँ –आँसू
इ –इँ –बिँदिया, सिँचना
ई –ईँ खिँचना
उ –उँ –उँगली
ऊ–ऊँ ऊँट
ए –एँ –बात
ऐ –ऐँ भैंस, ऐंठा
ओ–ओँ –सोँठ
औ–औँ –औंधा

टिप्पणी : लिखित रूप मे 'एँ' तथा ऐँ' मे भेद होता है पर ध्वन्यात्मक स्तर पर दोनो ध्वनियाँ एक हो जाती हैं।

इसी प्रकार लिखित रूप मे 'ओँ', 'औँ' का भेद है, पर ध्वन्यात्मक स्तर पर दोनो ध्वनियाँ एक हो जाती हैं।

इस प्रकार अनुनासिकता के कारण स्वरो के गुण में अंतर हो जाता है और आक्षरिक साँचा भी किंचित् परिवर्तित हो जाता है।

२. ३. १ हिंदी व्यंजन :

	द्वयोष्ठ्य	दंतो०	दत्य	वर्त्स्य	मूर्द्धन्य	तालु-वर्त्स्य	तालव्य	कंठ्य	अलि०	काकल्य
स्पर्श अल्प० अघोष	प्		त्		ट्			क्	(क़्)	
अल्प० सघोष	ब्		द्		ड्			ग्		
महा० अघोष	फ्		थ्		ठ्			ख्		
महा० सघोष	भ्		ध्		ढ्			घ्		
स्पर्श- अल्प० संघर्षी अघोष						च्				
अल्प० सघोष						ज्				
महा० अघोष						छ्				
महा० सघोष						झ्				
संघर्षी अघोष		(फ़्)		स्	[ष्]	श्		(ख़्)		
सघोष				(ज़्)				(ग़्)		
नासिक्य सघोष	म्			न्	ण्	[ञ्]		[ङ्]		
पार्श्विक सघोष				ल्						
लुंठित सघोष				र्						
उत्क्षिप्त सघोष अल्पप्राण					[ड़्]					
संघोष महा०					[ढ़्]					
अर्द्धस्वर सप्रवाह सघोष		[व़्]	व्				य्			

संकेत : ( ) ध्वनियाँ अरबी-फ़ारसी तथा अंग्रेजी आदि आगत शब्दो के माध्यम से गृहीत।

[ ] ध्वनियों का ध्वनिग्रामीय महत्त्व नहीं है।

२. ३. २ हिंदी व्यंजनों का विवरण तथा वितरण

ध्वनिग्राम	संस्वन	ध्वनिग्राम का विवरण तथा वितरण	उदाहरण ध्वन्यात्मक	उदाहरण ध्वनिग्रामीय	अर्थ
१. /क्/	[क्]	अघोष अल्पप्राण कंठ्य स्पर्श आदि मध्य अंत्य कम् बक्ना नाक्	[कल्]	/कल/	वाला दिन आने
२. /त्/	[त्]	अघोष अल्पप्राण दंत्य स्पर्श आदि मध्य अंत्य ताप् कतार बात्	[तल्]	/तल/	नीचे का भाग
३. /ट्/	[ट्]	अघोष अल्पप्राण मूर्द्धन्य स्पर्श आदि मध्य अंत्य टाप् पीट्ना काट्	[टल्]	/टल/	टलना क्रिया का रूप
४. /प्/	[प्]	अघोष अल्पप्राण द्वयोष्ठ्य स्पर्श आदि मध्य अंत्य पान् कपाट् चाप्	[पल्]	/पल/	समय का भाग
५. /ग्/	[ग्]	सघोष अल्पप्राण कंठ्य स्पर्श आदि मध्य अंत्य गप्प् पगा काग्	[गल्]	/गल/	कंठ्य गलना क्रिया
६. /द्/	[द्]	सघोष अल्पप्राण दंत्य स्पर्श आदि मध्य अंत्य दम् मदा शरद्	[दल्]	/दल/	झुंड
७. /ड्/	[ड्]	सघोष अल्पप्राण मूर्द्धन्य स्पर्श आदि मध्य[1] अंत्य सर्वत्र केवल द्वित्व तथा नासिक्य के साथ डाल् अड्डा, अंडा खंड्	[डाल्]	/डाल/	पेड़ की शाखा

---

१. अंग्रेजी शब्द 'सोडा', रेडियो आदि शब्दों के गृहीत कर लेने से हिंदी की ध्वनिग्रामीय व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा है।

[ड़्] सघोष अल्पप्राण मूर्द्धन्य उत्क्षिप्त [पडा] ।पड़ा। पड़ना क्रिया

आदि मध्य अंत्य
नही आता उपर्युक्त स्थितियों को
छोड़कर
बड़ा अड़्

८ ।ब्। [ब्] सघोष अल्पप्राण द्‌योष्ठ्य स्पर्श [बल्] । बल् । ताकत
आदि मध्य अन्त्य
बात् चाबी सब्

९. । ख् । [ख्] अघोष महाप्राण कण्ठ्य स्पर्श [खल्] । खल् । दुष्ट
आदि मध्य अन्त्य
खाल् नट्खट् चख्

१०. । थ् । [थ्] अघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श [थल्] । थल् । जमीन
आदि मध्य अन्त्य
थाप् कथन् पथ्

११. । ठ् । [ठ्] अघोष महाप्राण मूर्द्धन्य स्पर्श [ठलुआ] ।ठलुआ: बिना काम का
आदि मध्य अन्त्य
ठाप् गठ्री ढीठ्

१२. । फ् । [फ्] अघोष महाप्राण द्वयोष्ठ्य स्पर्श [फल्] । फल । फूल के बाद आने वाला पदार्थ
आदि मध्य अन्त्य
फट्ना उफान् कफ्

१३. । घ् । [घ्] सघोष महाप्राण कण्ठ्य स्पर्श [घल्] । घल् । घलना क्रिया का धातु रूप
आदि मध्य अन्त्य
घाट् लघु अघ्

१४. । ध् । [ध्] सघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श [धर्] । धर् । धरना क्रिया का धातु रूप
आदि मध्य अन्त्य
धन् निधन् बाँध्

१५. । ढ् । [ढ्] सघोष महाप्राण मूर्द्धन्य स्पर्श [ढाल्] । ढाल् । एक ओर झुका हुआ
आदि मध्य अन्त्य
सर्वत्र द्वित्व तथा नासिक्य
के साथ
ढाल् गड्ढा ठढ्

[ढ्] सघोष महाप्राण मूर्द्धन्य उत्क्षिप्त [बाढ्] । बाढ् । नदी मे पानी का बढना

आदि मध्य अन्त्य

नही आता उपर्युक्त परिस्थितियो को छोडकर

गढा बाढ

१६. । भ् । [भ्] सघोष महाप्राण द्वयोष्ठ्य स्पर्श [भला] ।भला। अच्छा

आदि मध्य अत्य

भाग् उभार् आरम्

१७. । च् । [च्] अघोष अल्पप्राण तालु-वर्त्स्य स्पर्श सवर्षी [चल्] ।चल्। 'चलना' क्रिया का धातु रूप

आदि मध्य अंत्य

चना अचल् नाच्

१८. । ज् । [ज्] सघोष अल्पप्राण तालु–वर्त्स्य स्पर्श-सघर्षी [जल्] ।जल्। पानी

आदि मध्य अंत्य

जन् काजल् नाज्

१९. ।छ्। [छ्] अघोष महाप्राण तालु-वर्त्स्य स्पर्श-सघर्षी [छल्] ।छल्। धोखा

आदि मध्य अत्य

छाल् बछिया रीछ

२०. । झ् । [झ्] सघोष महाप्राण तालु-वर्त्स्य [झल्] ।झल्। झुलस गर्मी,

आदि मध्य अत्य

झाल् रीझ्ना सूझ्

२१. । स् । [स्] अघोष वर्त्स्य सघर्षी [सर्] ।सर्। तालाब

आदि मध्य अत्य

साल् बस्ना ओस्

२२. । श् । [श्] अघोष तालव्य संघर्षी [शर्] ।शर्। तीर

आदि मध्य अंत्य

पृथक् से तथा चवर्ग तथा न्, म्, ल, व

य् र् के साथ य् के गुच्छ के साथ

श्याम् पश्च्

[ष्] अघोष मूर्द्धन्य संघर्षी [कष्ट] ।कश्ट। मुसीबत
आदि मध्य व अंत्य
'शठ' को छोड़कर
मूर्द्धन्य ध्वनियों
युक्त शब्दों मे टवर्गीय ध्वनियों के साथ
षड् षट् कष्ट्

२३ ।ह। [ह] सघोष काकल्य संघर्षी [हल्] ।हल्। खेत का यंत्र
आदि मध्य अंत्य
हाल् कहना बारह्

२४. ।म्। [म्] द्वयोष्ठ्य सघोष नासिक्य [मल्] ।मल्। गदा
आदि मध्य अंत्य
माल् चमार् काम

२५. ।न्। [न्] वर्त्स्य सघोष नासिक्य व्यजन [नल्] ।नल्। पानी प्राप्त होने का साधन
आदि मध्य अंत्य
नाल् छकना मान्

[ञ] तालव्य सघोष नासिक्य [कञ्ज्] ।कज्। कमल
मध्य स्थिति मे तालव्य
स्पर्श-संघर्षी[1] से पूर्व ।रञ्च।

[ङ्] कंठ्य सघोष नासिक्य व्यंजन [कङ्गन्] ।कङ्गन्। हाथ की चूड़ी
मध्य स्थिति मे कंठ्य स्पर्श[2]
तथा 'म' के पूर्व, जैसे
कङ्गन् वाङ्मय

---

१. शुद्ध वर्त्स्य नासिक्य ध्वनि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, मैंने स्पष्ट 'चन्चल' सुना है।

२. इसके स्थान पर शुद्ध वर्त्स्य नासिक्य ध्वनि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, मैंने 'चिन्गारी' सुना है। इनका वितरण मिलाइए डॉ० उदयनारायण तिवारी कृत 'भाषा शास्त्र की रूपरेखा' के चार्ट से पृ० १०७।

	प्राथमिक स्थिति	दो स्वरों के मध्य	माध्यमिक	अंत्य स्थिति।
म्	+	+	+	+
न्	+	+	+	+
ण्		+	+	+
ङ्			+	+

२६. ।ण्। [ण्] नासिक्य सघोष मूर्द्धन्य [कण्] ।कण्। छोटे से छोटा हिस्सा
आदि मध्य अंत्य
नही आता स्वतत्र रूप से
तथा टवर्गीय ध्वनियो
के साथ
कठ, रावण

२७ ।ल्। [ल्] सघोष पार्श्विक वर्त्स्य व्यजन [लाल्] लाल्। एक प्रकार का रंग
आदि मध्य अंत्य
लपक् आली काल्

२८. ।र्। [र्] सघोष लुठित वर्त्स्य व्यंजन [रात्] ।रात्। दिन का विलोम
आदि मध्य अत्य
राम् हरा पर्

२९. ।व्। [व्] द्वयोष्ठ्य सघोप सप्रवाह [क्वारा] ।क्वारा। अविवाहित
मध्य तथा अत मे अन्य व्यजनो
के साथ
क्वार् स्व्

[व्] दतोष्ठ्य सघोप सप्रवाह [वर्] ।वर्। दूल्हा
अर्द्धस्वर
आदि मध्य अत्य
शेष परिस्थितियो में
वम् नवल् हवा

३०. ।य् [य्] तालव्य सघोष अर्द्धस्वर [यह्] ।यह्। निकटवर्ती सर्वनाम
आदि मध्य अत्य
यम् नियम् चाय्

३१. ।क्। [क्] अलिजिह्वीय अघोष स्पर्श [कदम्] ।कदम्। पैरो के मध्य की दूरी
आदि स्थिति मे कंठ्य् स्पर्श से व्यतिरेक
।कदम्ब। एक वृक्ष

३२. ।फ़्। [फ़्] दतोष्ठ्य् अघोष संघर्षी [कफ़्] ।कफ्। आस्तीन के बटन
द्वयोष्ठ्य् स्पर्श से व्यतिरेक
।कफ। श्लेष्मा
आदि मध्य अंत्य
फ़िज़ूल दफ़्तर साफ़्

३३ [ज्] [ज्] वर्त्स्य सघोष सघर्षी [जमाना] [जमाना] समय
स्पर्श-संघर्षी से व्यतिरेक
[जमाना] किसी बात या
चीज को स्थिर
करना
आदि मध्य अंत्य
जमीन् अजीज तमीज

३४. [ग़्] [ग़्] कंठ्य् सघोष संघर्षी [ग़म्] [ग़म्] दुःख
स्पर्श सघोष से व्यतिरेक
[गमक्] सुगंध
आदि मध्य अंत्य
ग़रीब् मुग़ा चिराग़्

३५. [ख़्] [ख़्] कंठ्य् अघोष मघर्षी [ख़त्] [ख़त्] चिट्ठी
स्पर्श महाप्राण अघोष से
व्यतिरेक-खत(क्षत)घाव
आदि मध्य अंत्य
ख़राब् दाख़िल् मुर्ख़

२. ३. ३ व्यंजन गुच्छ :

हिंदी में आदि, मध्य तथा अंत्य स्थिति में पर्याप्त व्यंजन गुच्छ मिलते हैं। यह ठीक है कि व्यंजन गुच्छों के उच्चारण में कुछ कठिनाई होती और फलतः गुच्छों का उच्चारण लोक में समाप्त होता जाता रहा है, फिर भी परिनिष्ठित हिंदी में इनके शुद्ध उच्चारण की ओर पर्याप्त महत्व दिया जाता है, अन्यथा 'प्रवाह' में 'प्र' का गुच्छ टूटकर 'परवाह' बन जावेगा जो एक भिन्न शब्द है।

२. ३. ३. १ आदि स्थिति :

आदि स्थिति में प्राप्त गुच्छों का चार्ट संलग्न है :

१- हिन्दी-व्यंजन गुच्छ

	प्	त्	ट्	क्	ब्	द्	ड्	ग	म्	न्	ण	ङ	फ्	थ्	ठ	ख	भ्	ध्	ढ्	घ्	फ़्	व्	स्	ज	श	च	ज़्	ढ़	झ्	य्	ह	ल्	र	क़्	ख़्	ग़
प्																													X		X	X			
त्																					X								X			X			
ट्																					E								E			E			
क्																					X			⊗					X		X	X			
ब्																													X		E	X			
द्																					X								X			X			
ड्																													X			E			
ग्																					X								X		X	X			
म्																													X		X	X			
न्																													X	X					
ण्																																			
ङ																																			
फ्																																			
थ्																																E			
ठ्																																			
ख्																													X						
भ्																																X			
ध्																					X								X			X			
ढ्																																			
घ्																																X			
फ़्																													E		E	E			
व्																													X			X			
स्	X	X	E	X					X	X			X	X		X						X								X		E	X			
ज																																			
श्																													X			X			
च																													X						
ज़्																					X								X						
ढ़																																			
झ्																																			
य्																																			
ह्																													X			X			
ल्																																			
र्																													X						
क़्																																			
ख़्																					※								※						
ग़्																																			

संकेत

X	व्यजन गुच्छ
※	अरबी- फारसी के व्यजन गुच्छ

⊗	[श] मे मूर्धन्यता आजाती है
E	अंग्रेजी के व्यजन गुच्छ

२. ३. ३. २ अंत्य स्थिति :

२- हिन्दी-व्यंजन गुच्छ

	प्	त्	ट्	क्	ब्	द्	ड्	ग्	म्	न्	ण्	ङ्	फ्	ध्	ठ	ख	भ्	थ्	द्	घ	फ़्	व	स	ज़्	श्	च्	ज्	ढ्	झ्	य	ह्	ल्	र्	क़्	ख़्	ग़्
प्	×	×																					E							×			×			
त्		×							×	×				×							×	×	×							×	×	×	×			
ट्			×												×															×						
क्		×	E	×					×							×						×	E		⊗					×		×	×			
ब्		×				×												×						×			×						×			
द्						×			×									×												×			×			
ड्							×																							×						
ग्									×	×								×												×			×			
म्	×				×	×							×																	×		×	×			
न्		×				×			×	×				×				×					×		×	⊠	⊠	⊠	⊠	×	×					
ण्			×				×				×				×							×								×						
ङ्				×				×								×				×																
फ्																																				
ध्																														×						
ठ्																														×						
ख्																														×						
भ्																														×						
थ्																						×								×			×			
द्																														×						
घ्										×																				×						
फ़्		×	E							×																						×	×			
व्																														×			×			
स		×		×					×	×												×								×		×	×			
ज़्									×																								×			
श्	⊗	×	⊗	×					×	×	⊗				⊗							×				×				×				×		
च्																										×		×		×						
ज्																											×			×			×			
ढ्																																				
झ्																																				
य																																				
ह									×	×												×								×						
ल्	×		E	×		×			×				×				×				×									×	×	×				
र्	×	×		×	×	×		×	×		×						×	×		×	×E	×	E	×	×	×				×		E		×	×	
क़्		×				×																		×							×	×				
ख़्		×							×														×									×	×			
ग़्									×															×												

- संकेत -

× व्यंजन-गुच्छ

[illegible] के व्यंजन गुच्छ

⊠ [न] का तालव्यीकृत रूप [ञ]

- अँग्रेज़ी के व्यंजन-गुच्छ

२. ३. ४ मध्य व्यंजन गुच्छ :

अक्षर के मध्य मे प्रायः व्यंजन गुच्छ नहीं मिलते है। वस्तुतः मध्य व्यंजन गुच्छों का रूप व्यजनो के अनुक्रम में बदल जाता है जिसका प्रथम व्यंजन प्रथम अक्षर के साथ और द्वितीय अक्षर के साथ दूसरा व्यंजन चला जाता है। बाह्य रूप से यह अवश्य प्रतीत होता है कि अमुक शब्द मे मध्य व्यंजन गुच्छ है, जैसे अंदर, पर इसका आन्तरिक विन्यास होगा अन् दर्। इसमे गुच्छ कहाँ रहा ? फिर भी कुछ स्थितियो में मध्य व्यंजन गुच्छ की स्थिति स्वीकार करनी होगी[1]:

चूल्हा के 'चूल्हा' उच्चारण के अनुसार मध्य व्यंजन गुच्छ स्वीकार किया जा सकता है—अथवा ल् का महाप्राण रूप भी मान सकते हैं।

'गुब्बारा' आदि शब्दो में ,ब्+ब्' का गुच्छ भी माना जा सकता है तथा । ब् । का द्वित्व भी, इस समस्या पर पृथक् से विवेचन किया जाएगा।

सामान्यतः मध्य स्थिति[2] मे व्यंजन सयोग अधिक मिलते हैं जिनकी विशद् व्याख्या अगले अध्याय मे की जारही है।

---

१. इस सबंध में द्रष्टव्य है :
डा० उदयनरायण तिवारी—हिंदी के ध्वनिग्राम, हिंदुस्तानी में प्रकाशित बाद में भाषाशास्त्र की रूपरेखा में संकलित लेख। इसमें डॉ० तिवारी ने ४१ व्यजन गुच्छ स्वीकार किये हैं।

२. अन्य भाषाओं में विशेषकर अँग्रेजी में व्यंजन गुच्छों का आधिक्य है, फिर भी प्रायः पुस्तकों में मध्य व्यंजन गुच्छों की चर्चा उतनी नहीं की गई है जितनी आदि स्थिति की तथा अन्त्य स्थिति में प्राप्त व्यंजन गुच्छों की। इधर प्रो० आर्चीबाल्ड ए० हिल महोदय ने इंट्रोडक्शन टू लिंग्विस्टिक्स स्ट्रक्चर्ज में इसकी विशेष चर्चा की। व्यंजन संयोग और व्यजन गुच्छ का अंतर भी विशेष रूप से अपने इस पुस्तक में स्पष्ट किया है। आप अँग्रेजो भाषा की मध्य स्थिति में एक बड़ी संख्या में व्यंजन गुच्छों को स्वीकार करते है इवन अंडर दीज जनरल लिमिटेशन्ज़ हाउ एवर, द नंबर अव पौसिबिल कान्सो नेंट मीडियल क्लस्टर्ज इज वरी लार्ज नो लैस देन २६४। इसके बाद अपने कुछ उदाहरण भी लिये है। पर खेद है कि मध्य व्यंजन गुच्छ के दिये गये १६ उदाहरणों में से अपने ६ उदाहरणों के संमुख स्वतः ही यह नोट दिया है कि यह व्यंजन संयोग भी अधिकतर रहते हैं। यहि स्थिति कुछ कुछ हिंदी के साथ भी है।

२. ३ ५ अक्षर के आदि तथा अंत मे हिंदी व्यंजनों की स्थिति :

२. ३. ५. १ आदि स्थिति :

हिंदी-अक्षर के प्रारभ मे निम्नलिखित व्यजन आ सकते हैं :

क्	ख्	ग्	घ्	
च्	छ्	ज्	झ्	
ट्	ठ्	ड्	ढ्	
त्	थ्	द्	ध्	
प्	फ्	ब्	भ्	
म्	न्			
य्	र्	ल्	व्	
श्	स्	ह्		= २९ व्यंजन

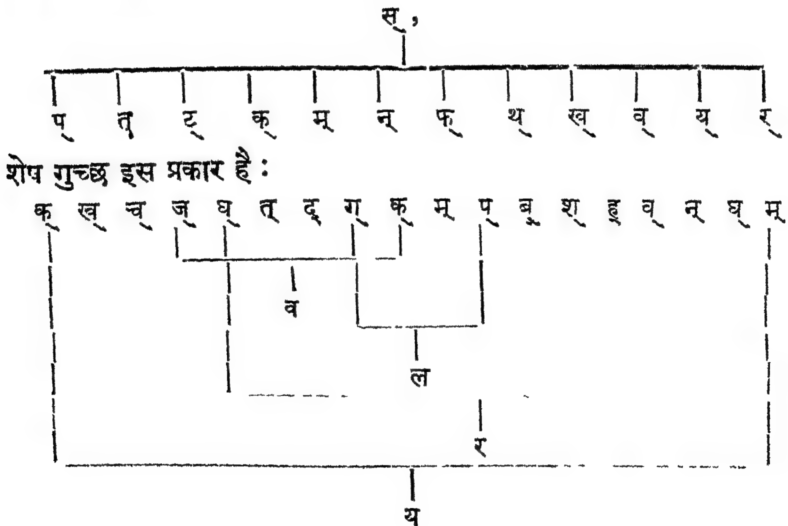
नोट : अंग्रेजी तथा अरबी-फारसी के गृहीत शब्दों के कारण निम्नलिखित व्यंजन।

क़्, ख़्, ग़्, ज़्, फ़्, = ५ व्यंजन

योग = ३४ व्यजन

अक्षर की आदि स्थिति में आने वाले व्यंजन-गुच्छों का चार्ट दिया जा चुका है, फिर भी संभावित गुच्छों को और अधिक स्पष्ट करने के लिये ऐसे भी रखा जा सकता है :

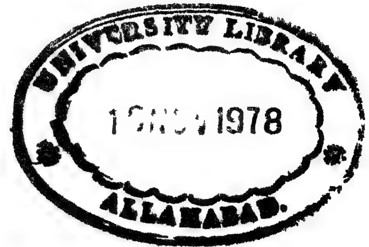
स-के साथ गुच्छ :



२. ३. ५. २ अक्षर की अंत्य स्थिति मे व्यंजनों की स्थिति :

हिंदी अक्षर की अंत्य स्थिति मे निम्नलिखित व्यंजन आ सकते हैं :

क् ख् ग् घ्
च् छ् ज् झ्
ट् ठ् ड्[1] ढ्[2]
त् थ् द् ध्
प् फ् ब् भ्
म् न् ण् ङ्
य् र् ल् व्
श् स् ह् = ३१ व्यंजन



नोट :—अरबी फारसी तथा अंग्रेजी शब्दावली के कारण पाँच व्यंजन,

क़, ख़, ग़, ज़, फ़ = ५ व्यंजन

योग = ३६ व्यंजन

अक्षर की अंत्य स्थिति मे प्राप्त व्यंजन गुच्छों का चार्ट पीछे दिया जा चुका है।

---

१. अंत्य स्थिति में (ड) तथा (ढ) के द्वितीय संस्वन क्रमशः (ड़) तथा (ढ़) आते हैं, कुछ द्वित्व, नासिक्ययुक्त व्यंजनों की स्थिति को छोड कर जिसमें प्रधान संस्वन (ड) तथा (ढ) ही आता है, जैसे—गड्ढा तथा पड्डा।

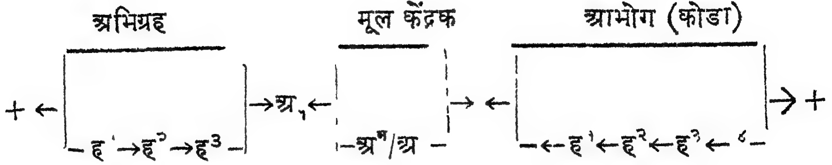
अन्यथा सर्वत्र इस प्रकार :

गड़्—बड़्

पढ़्—ना

नोट :—अँग्रेजी के कुछ गिने चुने (शब्द पर जिनकी आवृत्ति बहुत अधिक है) शब्दों के प्रयोग के कारण यह व्यवस्था गड़बड़ हो गई है, जैसे—रेडियो, सोडा आदि।

२ ४ हिंदी अक्षर का स्वरूप



अ, = कोई भी स्वर[1] ।
अ' = स्वर की मात्रा ।
अ" = संध्यक्षर स्वर का दूसरा अनाक्षरिक स्वर ।
ह₁→ = वे व्यंजन जो अक्षर के आरंभ में आ सकते हैं ।
ह₂ → = वे व्यजन गुच्छ जिनमें दो व्यजन हो जिनकी सूची दी जा चुकी है तथा जिनमे से पहला व्यजन ह, में से होगा ।
ह₃→ = तीन व्यंजनों का आदि स्थिति में गुच्छ जो स + त्र के साथ ही सभव हे ।
←ह₁ = वे व्यजन जो अक्षर के अंत में आ सकते हैं ।
←ह₂ = ह₁ के साथ ह₂ के व्यजनों का गुच्छ ।
←ह₃ = ह₁ और ह₂ के साथ ह₃ व्यजनों का गुच्छ ।
←ह₄ = ह₁ ह₂ ह₃ के साथ ह₄ व्यजनों का गुच्छ केवल एक शब्द वर्त्स्य ही सभव है ।

२, ५ शब्दों के परंपरागत लिखित रूपों तथा उच्चरित रूपों में अंतर:

२. ५. ० यह सर्वमान्य सिद्धात है कि हम जैसा लिखे वैसा बोले और जैसा बोले वैसा लिखे । यह बात संस्कृत के साथ बहुत ठीक थी और आज उसी

---

१. मैने राजर्षि अभिनदन ग्रंथ में प्रकाशित 'हिंदी अक्षर' शीर्षक निबंध में स्वर के लिए 'स' और व्यजन के लिए प्रतीक रूप में 'व' लिया था । इधर अन्य भाषविदों ने भी कुछ हेर फेर के साथ इसी प्रकार के प्रतीक चलाये, जैसे, डा० भोलानाथ तिवारी स–व
डा० उदयनारायण तिवारी अ–क
श्रद्धेय गुरुवर डा० विश्वनाथप्रसाद जी के सुझाव से मैंने पाणिनि के माहेश्वर सूत्रों के आधार पर अच् स्वर । सूत्र १ से ४ । यथा हल्–व्यंजन ।५–१४। के आधार पर मैंने स्वर के लिए 'अ' तथा व्यंजन के लिए 'ह' स्वीकार किया है ।

ध्यान में हम हिंदी को भी यह श्रेय दे देते हैं, वस्तुतः ऐसा नही है।[1] हिंदी मे शब्दो के परंपरागत लिखित रूपो से उनका उच्चारण भिन्न हो गया है। अब भी समय है कि हम देवनागरी को ध्वन्यनुरूप बना ले। विभिन्न स्थितियो मे जो स्वर का लोप हो रहा है उसकी ओर बीम्स ने कैम्परेटिव ग्रामर मे, श्री कामता प्रसाद गुरु[2] ने हिदी व्याकरण मे ध्यान आकर्षित किया था। डॉ० धीरेंद्र वर्मा[3], डॉ० बाबूराम सक्सेना[4], डॉ० आर्येन्द्र शर्मा[5], राजेद्र द्विवेदी[6] आदि ने भी यत्र तत्र निर्देश दिये हैं।

---

१. इस तथ्य की ओर ध्यान अब वैयाकरणों, भाषाविदो का ही नहीं गया है वरन् साहित्यकारों का भी। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी 'कवि के रेआयती अंधकार' शीर्षक लेख में लिखते है: हिंदी में यह एक भ्रम सा फैला हुआ है कि हम लोगों का उच्चारण विशुद्ध संस्कृत उच्चारण से मिलता है। अगर मिलता होता तो वर्ण वृत्तो में खटकने वाली बात जाती रहती। हिंदी में हम शब्दो को अकारांत रूप में लिखते जरूर हैं पर पढते है हलत रूप में। 'दिवस' लिख कर भी हम 'दिवस्' पढ़ते है। चार या पाँच अक्षर का शब्द हो तो अंतिम अक्षर के साथ ही द्वितीय या तृतीय अक्षर को भी हम हलत सा ही पढ़ते है। 'अवसान' को हम 'अवसान्' या 'औसान्' जैसा उच्चारण करते है। इसीलिये विशुद्ध उच्चारण की कसौटी पर कसने से हम 'दिवस का अवसान समीप था' को हिंदी में अन्यथा प्रयुक्त पाते हैं। इस पद्यांश का हिदी उच्चारण इस प्रकार होगा:

'दिवस्का औसान् समीप् था।'

विचार और वितर्क सं० २००२ पृ० ३२-३३ से।

प्रियप्रवास के लेखक हरिऔध जी के सामने यह समस्या विकट रूप में उपस्थित हुई जिसका समाधान करने का प्रयत्न भूमिका में किया गया है, प्रियप्रवास की भूमिका से यह भी ज्ञात होता है कि श्रीधर पाठक और लक्ष्मीधर वाजपेयी ने शुद्ध रूपों में लिखने का प्रयत्न किया था जिसको हरिऔध जी न समझ सके: प्रियप्रवास के पृष्ठ ३७-३८ (भूमिका) द्रष्टव्य है।

२. हिंदी व्याकरण, सं० २००६, नियम ४०, पृष्ठ ४६,४७।

३. डा० धीरेंद्र वर्मा—हिंदी भाषा का इतिहास, सन् १९४६, पृष्ठ १३२।

४. डॉ० बाबूराम सक्सेना ध्वनि अनुरूप वर्तनी की समस्या, भाषा, बसंत १९६२, पृष्ठ ७५-७६।

५. हिंदी की बेसिक व्याकरण, सन् १९५७-५८, पृष्ठ १८ १९।

६. ध्वनि अनुरूप लेखन, भाषा, नवंबर १९६१, पृ० २८-३२।

अधिकाशतः भाषाविदो ने मध्यस्थिति तथा अन्त्य स्थिति में स्वर लोप का तो उल्लेख किया है पर कब, कहो यह स्वर लोप संभव है और शब्द के आक्षरिक ढाँचे पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है इसकी ओर कम ध्यान दिया गया है।

२ ५, १. १ एक प्रकार से अन्त्य । अ । कही भो उच्चरित नहा होता है फिर भी कुछ सीमाएँ निश्चित की जा सकती है

जिन शब्दो के प्रारंभ में स्वर ह्रस्व था दीर्घ हो और उसके परे कोई व्यजन हो तो उस शब्द का अन्त्य । अ । उच्चरित नही होता है :

ह्रस्व स्वर	अब्	इन्	उस्
दीर्घ स्वर	आज्	ईख्	ऊन्

२. ५. १. २ दो व्यजनों के मध्य ह्रस्व या दीर्घ स्वर हो तो अन्त्य । अ । उच्चरित नही होता :

ह्रस्व स्वर	घर्	किस्	बुन्
दीर्घ स्वर	साफ्	सीप्	घूट्
दीर्घ अनु०	साँप्	नींद	घूँट्

२. ५. १. ३ आदि स्थिति मे व्यजन गुच्छ हो अथवा अंत मे।

आदि स्थिति	स्वर	ध्रुव्
अन्त्य स्थिति	शान्त्	दीर्घ्
दोनो स्थितियाँ	प्रश्न्	क्षुब्ध्

इस प्रकार उपर्युक्त सभी शब्द एकाक्षरीय रह जाते हैं।

२. ५. २ यदि किसी शब्द के प्रारंभ मे स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) हो और उसके बाद ह्रस्व या दीर्घ स्वरयुक्तव्यंजन हो तो अंतिम व्यजन (उसके बाद वाले) का । अ । उच्चरित नही होता :

प्रथम स्वर	द्वितीय स्वर		
ह्रस्व	ह्रस्व	अनल्	अधिक्
दीर्घ	ह्रस्व	आकर्	आतुर्
दीर्घ	दीर्घ	आकाश्	आधीन्
ह्रस्व	दीर्घ	अनाज्	अहीर्

२. ५. १ यदि किसी शब्द के प्रारंभ में स्वर हो और उसके अंत में दीर्घ स्वरयुक्त व्यंजन हो तो प्रथम स्वर से लगे व्यजन का । अ । उच्चरित नहीं होता :

इत्ना उठ्ता

यदि किसी शब्द के प्रारंभ मे स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) हो तत्पश्चात् कोई व्यजन हो और शेष भाग मे कोई सवृताक्षर (दीर्घ या ह्रस्व स्वरयुक्त) हो।

तो पहले व्यंजन के बाद का ।अ। उच्चरित नहीं होता :

पूर्व उपान्त्य	उपान्त्य	दो व्यंजनो के मध्य
ह्रस्व	ह्रस्व	अक्बर्
ह्रस्व	दीर्घ	अप्मान्
दीर्घ	ह्रस्व	आच्मन्
दीर्घ	दीर्घ	आस्मान्

ह्रस्व स्वरात त्र्यक्षरी शब्दो मे प्रथम तथा द्वितीय अक्षर दीर्घ हो या ह्रस्व तो अन्तिम । अ । का उच्चारण नही होता और फलतः शब्द द्व्यक्षरी रह जाता है ,

प्रथम व्यंजन का स्वर	द्वितीय व्यजन का स्वर	
ह्रस्व	ह्रस्व	फसल्
ह्रस्व	दीर्घ	विशाल्
दीर्घ	ह्रस्व	वापस्
दीर्घ	दीर्घ	बीमार्

दीर्घ स्वरात त्र्यक्षरी शब्द में यदि दूसरा अक्षर अकारात होता हो तो उसका । अ । का उच्चारण नही होता है फलत. शब्द द्व्यक्षरी रह जाता है,

बिक्ती चल्ता मर्ता

यदि किसी शब्द में चार व्यंजन वर्ण हो जिनके मध्य मे दो व्यजनो का अनुक्रम हो तो अतिम व्यजन के । अ । का उच्चारण नहीं होता है फलतः शब्द द्व्यक्षरी रह जाता है,

पत्थर् सुन्दर्

किसी शब्द के चारो व्यजनो मे से प्रथम ह्रस्व स्वर तथा तृतीय दीर्घ स्वर के साथ हो तो द्वितीय और चतुर्थ व्यजन के । अ । का उच्चारण नहीं होता फलतः शब्द द्व्यक्षरी रह जाता है,

बर्सात् चुप्चाप्

किसी शब्द के चार व्यंजनो मे से प्रथम व्यंजन दीर्घस्वर युक्त हो तो द्वितीय तथा चतुर्थ व्यंजन के । अ । का उच्चारण नहीं होता है और शब्द द्वयक्षरी रह जाता है,

जान्कर जोध्पुर्

किसी शब्द के चार व्यंजनो मे से प्रथम तथा तृतीय दोनो व्यंजनो के दीर्घ स्वरयुक्त होने पर द्वितीय तथा चतुर्थ व्यंजन के । अ । का उच्चारण नहीं होता फलतः शब्द द्वयक्षरी रह जाता है,

सूर्दास्

इस प्रकार विभिन्न परिस्थितियो में । अ । का उच्चारण नहीं होता है। इस संबंध में अभी पर्याप्त शोध अपेक्षित है। वह लोप की प्रक्रिया केवल ह्रस्व । अ । तक ही सीमित नहीं रहती वरन् सभी ह्रस्व स्वरो 'अ, इ, उ' पर प्रभाव डालती है। अंत्य स्थिति में ह्रस्व स्वर का उच्चारण प्रायः बहुत क्षीण होकर लुप्त हो जाता है अथवा दीर्घ हो जाता है, जैसे,

गति का उच्चारण ग-ति न होकर द्रुतगति मे 'गत्' या फिर सामान्यतः 'गती' मिलता है। यह बात दूसरी है कि अभी तक हम लिखित रूप में 'ह्रस्व' स्वर ही लिख रहे हैं।

'द्वारिका' का उच्चारण द्वार्-का ही अधिक सुनाई पड़ता है।

हिंदी की यह प्रवृत्ति मुझको अंग्रेजी आगत शब्दो के अध्ययन के समय भी अंग्रेजी के शब्दों में दृष्टिगत हुई थी, अँगरेजी के सहस्रो शब्दो में यदि हम ह्रस्व 'इ' से अन्त होनेवाले शब्दो को छाँट ले तो ज्ञात होता है कि हिंदी मे आकर ये सभी शब्द दीर्घ ईकारात हो गये हैं जब कि अंग्रेजी में इनमे से कुछ ही दीर्घ ईकारात होते हैं। उदाहरणार्थ हम कपनी, कमेटी, पालिसी, बैटरी आदि शब्द ले सकते हैं। अंग्रेजी मे ये सभी शब्द ह्रस्व इ कारात हैं।

अरबी, फारसी के शब्दो का अक्षरात्मक अध्ययन करते समय भी मैंने यही पाया कि बहुत से स्थानो पर हम अपनी प्रवृत्ति के अनुसार ही स्वरो (ह्रस्व) का लोप कर देते हैं, मूलतः वहाँ स्वर रहा हो अथवा नहीं।

२. ६ बलाघात और अक्षर

२. ६. ० प्रायः ऐसा देखा जाता है कि साधारण बातचीत में भी वाक्य के किसी अंश पर वक्ता अधिक जोर डालता है और किसी पर कम। वक्ता वाक्य को जिस ढंग से बोलता है, श्रोता उस वाक्य का अर्थ उसी दृष्टि से समझने की चेष्टा करता है। साधारणतः यह समझा जाता है कि वाक्य के प्रारभ मे बल

स्वर अक्षर का शिखर निर्मित करने में समर्थ होता है। स्वर मात्रानुसार ह्रस्व तथा दीर्घ हो सकते हैं अतएव बलाघात युक्त होने पर दीर्घ स्वर में और अधिक दीर्घता आ जाती है तथा बलाघातहीन होने से दीर्घ स्वर भी अल्पदीर्घ हो जाता है।

सामान्य वाक्य भूल चूक लेनी देनी।
बलाघातयुक्त वाक्य इस 'भूल का दंड तो मिलेगा ही।

दोनों वाक्यों में प्रथम 'भूल' शब्द बलाघातहीन है और दूसरा 'भूल' बलाघातयुक्त है फलतः दूसरे 'भूल' का 'ऊ' अपेक्षाकृत अधिक दीर्घता लिए हुए है और साथ में अधिक दृढ़ता भी।

२. ६. २ बलाघात और व्यंजन

यह ठीक है कि बलाघात 'अक्षर' पर पड़ता है और उसका प्रधान प्रभाव अक्षर संरचना का एक मात्र आधार (सर्वाधिक मुखरता के आधार पर) स्वर पर ही पड़ता है पर उसके (उस स्वर के) पड़ोसी व्यंजन पर भी प्रभाव पड़ता है, जैसे,

''धम् से आ पड़ा।' वाक्य में 'धम्' बलाघात युक्त होने के कारण ही 'धम्म्' उच्चरित होता है।

मेरठ की खड़ी बोली में द्वित्व की प्रवृत्ति के पीछे बलाघात ही मुख्य कारण है।

बलाघात से जहाँ एक व्यंजन का दीर्घीकरण संभव है वहाँ लोप भी। प्रायः यह देखा गया है कि किसी के घर पर जोर से आवाज देते समय बलाघात-युक्त अक्षर ही प्रधानतः रह जाता है और शेष अक्षर लुप्त हो जाते हैं।

मास्टर साहब' का बलाघातयुक्त रूप होगा :

मा । स् । 'साब या मा । ट् । 'साब

२. ६. ३ बलाघात और अक्षर

२. ६. ३. १ : एकाक्षरिक शब्दावली :

एकाक्षरिक शब्दों में सामान्यत एक सा बलाघात पड़ता है अतएव उसका कोई विशेष महत्व नहीं है। जिस किसी एकाक्षरिक शब्द पर बलाघात डालना हो तो उसको सामान्यतः अपने स्थान से हटकर वाक्य के प्रारंभ में अथवा अंत में रख

लेते हे, इससे उसका महत्व स्वत: ही प्रमाणित हो जाता है। महाप्राण ध्वनि से युक्त होने पर बलाघात और अधिक सशक्त[1] हो जाता है।

एक से अधिक अक्षरों से युक्त शब्द मे यह विचारणीय है कि बलाघात किस अक्षर पर पड रहा है।

२.६.३.२ द्व्यक्षरात्मक शब्द :

१ यदि दो अक्षरों मे से एक मे काकल्य संघर्षी ध्वनि हो और दूसरे मे महाप्राण व्यंजन हो तो बलाघात काकल्य सघर्षी ध्वनि पर पडेगा, जैसे,

'हा –थी

यदि दोनो अक्षरो मे महाप्राण ध्वनियो हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर पडेगा जैसे,

'भा–भी

'थो–था

२. जब दोनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हो तो प्रथम अक्षर पर बलाघात होगा चाहे दोनो अक्षर विवृतावस्था मे हों,

'आ–गा, 'पी–छा, 'बा–जा, 'का–ला

३. जब दोनो अक्षरों के स्वर ह्रस्व हो और साथ ही अक्षर सवृतावस्था मे हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पडेगा, जैसे

मंदिर–'मन्–दिर्

बिल्कुल–'बिल्–कुल्

४. जब दोनो अक्षरों के स्वर दीर्घ हो और अक्षर भी संवृत हो, तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पडेगा जैसे,

चालढाल–'चाल्–ढाल्

आनबान–'आन्–बान्

५. यदि प्रथम विवृताक्षर का स्वर दीर्घ हो और द्वितीय सवृताक्षर का स्वर ह्रस्व हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पडेगा, जैसे

'चा–वल् तथा 'बा–दल्

६. यदि प्रथम अक्षर संवृत हो और उसका स्वर दीर्घ भी हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पडेगा चाहे द्वितीय विवृत अक्षर का स्वर दीर्घ ही क्यो न हो, जैसे

---

१. यदि शब्द 'साधारण एकाक्षरीय' (महाप्राणयुक्त ध्वनिहीन) बोला जाय, तो उस पर अशक्त बलाघात नहीं पडा करता, सदा सशक्त ही पड़ा करता है। उदाहरणार्थ कि तुम, और इत्यादि पर, लेकिन यदि वह महाप्राण ध्वनि-युक्त हो, तो उसमें कुछ और सशक्तता आ जाती है, जैसे, ही, भव् और भान् इत्यादि। रमेश चन्द्र मेहरोत्रा का वही लेख, पृष्ठ ४५२।

रास्ता–'रास्–ता
देवता–'देव्–ता

७. यदि प्रथम अक्षर संवृत हो और उसका स्वर भी दीर्घ हो तथा द्वितीय अक्षर (ह्रस्व स्वरयुक्त) भी संवृत हो तब भी बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पडेगा जैसे

कारगर–'कार्–गर्
वास्तव–'वास्–तव्
घूमकर–'घूम्–कर्

८. यदि प्रारंभिक अक्षर में संध्यक्षर स्वर हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पडेगा चाहे द्वितीय अक्षर विवृत और दीर्घ हो, जैसे

गैया–'गै–या
मैया–'मै या

९. यदि प्रारभिक अक्षर मे सध्यक्षर स्वर हो और द्वितीय अक्षर संवृत हो और साथ ही उसका स्वर दीर्घ या ह्रस्व हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पडेगा, जैसे

तैयार, –'तै–यार् (नोट : कभी कभी आज्ञा में द्वितीय अक्षर पर भी पड़ सकता है (तै–'यार्)

१०. दोनो अक्षरों के स्वरों मे जो दीर्घ हो उस पर बलाघात पडेगा वह चाहे पहला ही हो, जैसे,

खाकर–'खा–कर्

और दूसरा,

संवृताक्षर–ग–'रीब्
–च–'पेट्
–अ–'नार्
–न–'केल्
मुक्ताक्षर–खि–'ला } क्रिया रूप में 'खि–ला } विशेषण रूप में
धु–'ला　　　　　　　'धु –ला

२.६.३.३ त्र्यक्षरात्मक शब्द :

१. त्र्यक्षरात्मक साँचे वाले शब्दों में यदि प्रथम दो अक्षरों के स्वर ह्रस्व हों और तीसरे अक्षर का स्वर दीर्घ हो तो बलाघात तीसरे अक्षर पर पड़ता है, जैसे,

दु–नि–'या　　　　नोट : हमेशा बलाघात तृतीय अक्षर पर नहीं रहता।
खिद्–मत्–'गार्

२. त्र्यक्षरात्मक साँचे वाले शब्दों के उपान्त्याक्षर पर बलाघात निम्नलिखित स्थितियो मे रहेगा :

२. १ तीनो अक्षरों मे प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व हो और शेष दोनो अक्षरों के स्वर दीर्घ हो, जैसे,

म–ˈसा–ला
घ–ˈरा–ती
भ–ˈला–ई

२. २ तीनो अक्षरो के स्वर यदि दीर्घ हो तो, जैसे,

झू–ˈमे–गा
पा–ˈजा–मा

२. ३ यदि तीनो अक्षरो मे मध्य अक्षर का स्वर दीर्घ हो और शेष दोनो अक्षरो के स्वर ह्रस्व हो तो, जैसे,

स–ˈमा–धि
अ–ˈचा–नक्
च–ˈमा–रिन्

२. ४ यदि तीनो अक्षरो के स्वर ह्रस्व हो पर प्रथम अक्षर विवृत और शेष दोनो संवृत हो तो, जैसे,

पु–ˈरन्–दर्
क–ˈमर्–बन्द्

२. ५ यदि तीनो अक्षरों मे से प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व हो और शेष दोनो अक्षर संवृत हो और उनमें प्रयुक्त स्वर दीर्घ हो तो, जैसे,

सिं–ˈगार–दान्

२. ६ इसके अतिरिक्त भी जहाँ हकार हो तो स्वाभाविक रूप से बल अधिक पड़ेगा।

३. त्र्यक्षरात्मक साँचे वाले शब्दो के उपान्त्यपूर्व (प्रथम) अक्षर पर बलाघात निम्नलिखित स्थितियों में रहता है :

३. १ यदि तीनों अक्षरो के स्वर ह्रस्व हो तो, जैसे,

ˈज–ल–धि
ˈअ–व–धि

३. २ यदि तीनो अक्षरो में से केवल प्रथम अक्षर का स्वर ही दीर्घ हो, जैसे,

ˈआ–हु–ति

३. ३ यदि तीनों में प्रथम दो अक्षरों के स्वर दीर्घ हों, जैसे,

ˈका–री–गर्

३. ४ यदि तीनों में प्रथम व अंतिम अक्षरों के स्वर दीर्घ हों तो, जैसे,

ˈका–लि–दास्

ˈपा–सन्–दी

नोट : यदि तीनों अक्षर विवृत हों और उनमें से प्रथम व अंतिम अक्षर का स्वर दीर्घ हो तो समान रूप से प्रथम व अंतिम अक्षर पर बलाघात पड़ेगा, जैसे

ˈवा–टि–ˈका

२. ६. ३. ४ चतुरक्षरात्मक शब्द :

चार अक्षरों वाले शब्दों में अधिकांशतः बलाघात प्रथम अक्षर पर ही रहता है, जैसे,

ˈक–म–लि–नी

ˈह–रि–या–ली इसमें प्रथम अक्षर महाप्राण ध्वनियुक्त होने के कारण और अधिक सबल है।

स–मभ्–ˈदा–री जैसे शब्दों में बलाघात प्रथम से हटकर तीसरे अक्षर पर पहुँच गया है क्योंकि आगे के अक्षर दीर्घ और प्रत्यय रूप हैं।

२. ६. ४ व्युत्पादित शब्द और बलाघात :

सामान्य क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
ˈचल्–ना	च–ˈला–ना
ˈहिल्–ना	हि–ˈला–ना
ˈच–टक्–ना	चट्–ˈका–ना

प्रत्ययों के योग से भी बलाघात बदल जाता है, जैसे,

ˈछ–वि	छ–ˈबी–ली
ˈवि–दा	वि–ˈदा–ई

२. ६. ५ बलाघात और संक्रमण (संगमावस्था)

संक्रमण की स्थिति बलाघात से और अधिक स्पष्ट होती है। संक्रमण के संबंध में विस्तृत रूप से विश्लेषण एवं विवेचन आगे सप्तम अध्याय में किया जाएगा। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि संक्रमणयुक्त शब्दों में दो पृथक् शब्द होने के कारण दो स्थानों पर बलाघात होता है जब कि संक्रमणहीन शब्दों के अंतर्गत दो अक्षर होते हुए भी एक स्थान पर एक ही अक्षर में बलाघात होता है, जैसे,

'पीली	। पीले रंग की ।	'पी+ 'ली संयुक्त क्रिया
'सिरका	। एक पदार्थ ।	'सिर्+ 'का सिर से सबद्ध

२ ६ ६ निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम सामान्यतः यह पता लगा सकते हैं कि किस शब्द के किस अक्षर पर बलाघात है फिर भी कुछ युग्म[1] ऐसे हैं जिनमें याहच्छिक बलाघात है और वह भी सार्थक है, जैसे,

'द-वा-जंगल की आग	द-'वा औषधि
'सहित-साथ	स-'हित हित सहित
'वि-भव-ऐश्वर्य	वि-'भय भय सहित

उपसर्गों के अनुसार भी बलाघात पर प्रभाव पडता है, जैसे,

अ-'पदस्थ (हिंदी मे उच्चारण प्रायः [अप्-दस्थ्] मिलता है ।

अन-'जान्

अप-'हस्त्

----

१. इस विषय पर एक उल्लेखनीय लेख प्रकाशित हुआ है,
डॉ० हरदेव बाहरी—हिंदी कोशों में उच्चारण सकेतों की आवश्यकता भाषा, नवंबर १९६१, पृष्ठ ३९—४३ ।
लेखक को इस विचारोत्तेजक लेख से भी सहायता मिली है । डॉ० बाहरी ने समानाक्षर शब्दों को लेकर बलाघात का भेद स्पष्ट किया है जिनमें व्यतिरेकी संबंध है :

'अख्-रावट्	घब्-'राहट्
'विभव	वि 'भय
अघो 'मुख	अ 'मोलक
'लठालठी	म 'शालची
'दुबला	दु 'लड़ा

अक्षर सीमा

३.० शब्दो के मध्य अक्षरो का सीमाकन सरल कार्य नहीं है। किसी शब्द में कितने अक्षर हैं, यह उस शब्द मे मुखरता के आधार पर निर्मित शिखरो से पहचाना जा सकता है; पर यह पहचानना दुष्कर कार्य है कि एक अक्षर कहाँ से प्रारंभ हो रहा है और कहाँ समाप्त हो रहा है[1]

प्रथम अध्याय में हम अक्षर की सीमा निर्धारण के सामान्य सिद्धातों पर विचार कर चुके हैं। स्वरो तथा व्यजनो के मध्य कहाँ अक्षर की सीमा निर्धारित की जाय इसका विवेचन किया जा रहा है।

अक्षरसीमा का रूपमात्र (पदग्राम) की सीमा तथा शब्दसीमा से क्या सबंध है, इस समस्या पर आगे विचार किया जा रहा है। सम्प्रति यह सिद्धाततः स्वीकार किया जा सकता है कि शब्दसीमा सदा अक्षरसीमा ही होगी।

अक्षर में स्वर, व्यंजन, अनुनासिकता, मात्रा, बलाघात आदि के महत्व के विवेचन के बाद यह विचारणीय है कि सीमा निर्धारण मे कौन तत्व कहाँ क्या काम आ रहा है।

हिंदी में शब्दो की आदि स्थिति में स्वीकृत व्यंजन गुच्छो का चार्ट दिया जा चुका है। आदि स्थिति में स्वीकृत व्यंजन तथा व्यंजनगुच्छ अक्षर की आदि सीमा बनाते हैं और इसी प्रकार अंत्य स्थिति मे भी स्वीकृत व्यजन तथा व्यंजनगुच्छ शब्द की अंतिम सीमा बनाते हैं। जहाँ तक स्वरो का संबंध है, संध्यक्षर स्वरो को छोड़कर सभी स्वर आदि सीमा बनाते हैं। अंत्य सीमा का निर्धारण स्वरो की दीर्घता से ही संभव है, क्योंकि ह्रस्व स्वर अंत्य स्थिति में समाप्त होते जा रहे हैं।

---

१. डेनियल जोन्स—एन आउटलाइन अव् इंगलिश फोनेटिक्स, सन् १९५६, पृष्ठ ५५ नियम २१२।

तथा

अब्बर निक्विस्ट—ए नोट ऑन् दू सिलेबिल—ले मैत्रे फोनेटिक, जुलाई १९६२, पृष्ठ २७-२८।

३. १ अक्षर सीमाएँ

हिंदी मे निम्नलिखित अक्षर सीमाएँ संभव हैं :

संकेत चिह्न :

अक्षर सीमा	=	—
स्वर	=	अ
स्वरों मे दीर्घता	=	ा
अनुनासिकता	=	ँ
दीर्घ स्वर	=	आ
अनुनासिक स्वर	=	अँ
अनुनासिक दीर्घ स्वर	=	आँ
व्यजन	=	ह

	प्रथम अक्षर का अंतिम रूप		द्वितीय अक्षर का आदि रूप		
१.	अ	–	आ	हु–आ	हुआ
२.	आ	–	अ	खा–इ	खाइ (अंत में दीर्घता भी आ जाती है)
३.	आ	–	आ	आ–ओ	आओ
४.	अँ	–	अ	कुँ–अर	कुँअर
५.	अ	–	आँ	हु–ईं	हुईं
६.	आ	–	आँ	सा–ईं	साईं
७.	अ	–	ह	अ–त्इ	अति
८.	अँ	–	ह	बँ–धी	बँधी
९.	आ	–	ह	लगा–तार	लगातार
१०.	आँ	–	ह	आँ–गन	आँगन
११.	$अ_{ह}$	–	ह ह	$श_{त}$–त्रु	शत्रु
१२.	$आ_{ह}$	–	ह ह	$आ_{श}$–श्रम	आश्रम
१३.	ह	–	ह	अच्–छा	अच्छा
१४.	ह	–	हह	इन्–द्राणी	इन्द्राणी
१५.	हह	–	ह	संस्–था	संस्था

३. २ शब्द में स्वरों का संयोग तथा उनके मध्य में सीमा :

किसी भी शब्द के प्रारभ में, मध्य मे अथवा अंत में एकाधिक स्वर मिल सकते हैं। ऐसी स्थिति मे उन स्वरो के मध्य अक्षर सीमा निर्धारित करना सरल कार्य नही है। स्वर आक्षरिक तथा अनाक्षरिक दोनो प्रकार के हो सकते हैं। आक्ष-

रिक स्वर अपनी सर्वाधिक मुखरता के कारण शिखर बनाते हैं, अनाक्षरिक स्वर अपने पड़ोसी किसी आक्षरिक स्वर के साथ संध्यक्षर स्वर की तरह अथवा अपनी अल्प मुखरता के कारण व्यजनवत् प्रयुक्त होते हैं।

सर्वप्रथम हम प्राप्त स्वरों में आक्षरिक स्वरों को पृथक् कर लेते हैं :

३. २. १ आदि स्थिति में :

	दीर्घ-दीर्घ	
आई	आ-ई	दोनों आक्षरिक है, आ-ई
आओ	आ-ओ	दोनों आक्षरिक है, आ-ओ

३ २. २ मध्य स्थिति में :

बाईस	आ-ई	दोनों आक्षरिक है, बा-ईस्
तेईस	ए-ई	दोनों आक्षरिक हैं, ते-ईस्

३. २. ३ अंत्य स्थिति में :

द्व्यक्षरात्मक : ह्रस्व-दीर्घ

हुआ	उ-आ	दोनों आक्षरिक है, हु-आ
कई	अ-ई	,, ,, ,, क-ई
रुई	उ-ई	,, ,, ,, रु-ई
लिए	इ-ए	,, ,, ,, लि-ए
	दीर्घ-दीर्घ	
राई	आ-ई	दोनों आक्षरिक हैं, रा-ई
कोई	ओ-ई	,, ,, ,, को-ई

त्र्यक्षरात्मक : ह्रस्व-दीर्घ

कलई	अ-ई	दोनों आक्षरिक हैं, क-ल-ई
बहुआ	उ-आ	,, ,, ,, ब-हु-आ
कुतिया	इ-आ	,, ,, ,, कु-ति-आ-य-श्रुति है।
डिबिया	इ-आ	,, ,, ,, डि-बि-आ-य-श्रुति है।

३. २. ४ स्वरों की प्रधानता :

दो स्वर :	आ-ओ	= आओ	
	आ-ई	= आई	
तीन स्वर :	आ-इ-ए	= आइए	
	इ-आ-उ	= पिआउ	य-श्रुति का आगम
	ओ-इ-ए	= सोइए	

३. २. ५ आक्षरिक तथा अनाक्षरिक स्वर ध्वनियाँ :

ध्वनिग्रामीय रूप	स्वन्यात्मक रूप	आक्षरिक रूप	प्रथमस्वर	द्वितीयस्वर	तृतीयस्वर	संयोग श्रुति
गैया	गइ्आ	ग्अइ्-आ	आक्षरिक	अनाक्षरिक	आक्षरिक	अइ्-आ–य
मैया	मइ्आ	म्अइ्-आ	,,	,,	,,	अइ् आ–य
हौवा	हउ्आ	ह्अउ् आ	,,	,,	,,	अउ्-आ–व
कौआ	कउ्आ	क्अउ्-आ	,,	,,	,,	अउ्-आ-व
गवैया	गव् इ्आ	ग्अव्अइ्-आ	,,	,,	,,	अइ्-आ–य

३. २. ६ संक्रमण तथा स्वर संयोग :

दो शब्दो के मध्य सक्रमण की स्थिति मे तो सभी स्वरो का सयोग संभव है, जैसा पिछले अध्याय मे स्पष्ट किया जा चुका है :

नया + आदमी आ + आ

इस प्रकार स्वर संयोग की निम्नलिखित स्थितियाँ संभव हैं जब कि दो आक्षरिक स्वरो के मध्य सीमाकन किया जा सकता है :

३. २. ६. १ दो शब्दों के मध्य :

प्रथम शब्द का अन्त्य रूप मुक्ताक्षर हो और द्वितीय शब्द के प्रथम अक्षर का प्रारभ स्वर से हो :

नया + आदमी
तू + आकर् जा

३. २. ६. २ दो रूपमात्रों (पदग्राम) के मध्य :

जब प्रथम रूपमात्र का अन्त्य रूप मुक्त (विवृत) अक्षर हो और द्वितीय रूपमात्र के प्रथम अक्षर का प्रारंभ स्वर से हो :

आ–ओ आना क्रिया का 'आ' रूपमात्र है।
आ–इए ,, ,, ,, ,

३. २. ६. ३ एक ही शब्द के एक रूपमात्र के मध्य :

नई = न्अ–ई
कई = क्अ–ई
नाऊ = न्आ–ऊ
ताऊ = त्आ–ऊ

३. ३ आक्षरिक स्वर तथा व्यंजनवत् स्वर :

कभी कभी दो स्वरों का संयोग तो होता है पर उनमें से एक मुखर होने के कारण आक्षरिक होता है और दूसरा अल्पमुखरता के कारण व्यंजनवत् रहता है,

ध्वनिग्रामीय रूप	ध्वन्यात्मक रूप	स्वर-संयोग	टिप्पणी
।राय।	[राए़]	आ-ए़	इनमें से प्रथम । अ । आक्षरिक है और द्वितीय। ए़। व्यंजनवत् अतएव इस शब्द को ।राय। ही लिखना अधिक उचित है, इसी प्रकार चाय, धाय आदि शब्द लिये जा सकते हैं।
।बावला।	[बाओ़ला]	आ-ओ़	इनमें से प्रथम ।आ। आक्षरिक है और द्वितीय ।ओ़। व्यंजनवत् अतएव ।बावला। लिखना ही अधिक उचित है। इसी प्रकार जैसे, राव।

३.४ शब्द के मध्य व्यंजनों का संयोग और उनके मध्य सीमांकन : एक समस्या :

३ ४.० हिंदी शब्दो के प्रारंभ और अंत में जितने भी व्यजनगुच्छ (परिनिष्ठित हिंदी के शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से) संभव हो सकते हैं, उनको चार्ट रूप मे पिछले अध्याय मे दिया जा चुका है। यह बात ठीक है कि सदैव निकट मे रहनेवाली उर्दू की प्रकृति के कारण तथा लोकभाषाओ के प्रभाव के कारण आदि स्थिति मे व्यजनगुच्छ स्वरागम या स्वरभक्ति द्वारा तोड दिए जाते हैं क्योंकि उर्दू की प्रकृति में आदि स्थिति में व्यजनगुच्छ सह्य नही। अन्त्य व्यंजन गुच्छो की उर्दू मे भरमार है। इस समस्या का विवेचन आगे अध्याय में किया जायेगा।

मध्य स्थिति में हिंदी मे व्यंजनसयोग[1] (व्यंजनानुक्रम) तो बहुत मिलते हैं

---

१. लेखक का 'कोन्सोनेंट सीक्वेंसेज़ इन हिंदी'–इंडियन लिंग्विस्टिक्स, सक्सेना वोल्यूम द्रष्टव्य है। बेसिक ग्रामर अव् हिंदी, शिक्षा मंत्रालय, पृष्ठ १३ पर इस सबंध में यह नियम बनाया गया है कि अनेक व्यंजनानुक्रमों में से पहला प्रथम अक्षर के साथ और शेष सभी दूसरे आगामी अक्षर के साथ जाते हैं। इसके निम्नलिखित उदाहरण दिए गए है :
मन्त्री = मन्-त्री, चन्द्रमा = चन्-द्र-मा, अक्षर = अक्-षर् (अ-क्षर नही)
अद्वितीय = अद्-वितीय (अ-द्वि-ती-य नही)
टिप्पणी : अद्वितीय का उच्चारण अद्-वि-तीय संभव नही। 'वि' का पृथक् से उच्चारण नही होता। इस शब्द के दो भिन्न उच्चारण संभव है।

पर व्यंजनगुच्छ कम। इस स्थिति का भी स्पष्टीकरण पिछले अध्याय में किया जा चुका है।

३. ४. १. १ दो समान व्यंजनों का अनुक्रम या द्वित्व :

यदि किसी शब्द में दो स्वरों के मध्य मे एक ही व्यंजन दो बार लगातार उच्चरित हो तो उनमें से प्रथम व्यजन प्रथम स्वर के साथ और द्वितीय व्यंजन द्वितीय अक्षर के स्वर के साथ जुट जाता हैं, जैसे,

अम्मा=अम्-मा

यदि शब्द का प्रारभ किसी व्यजन से है और उसका अंत्याक्षर विवृतावस्था में दीर्घान्त है तो दोनो व्यंजनो मे से प्रथम व्यजन प्रथम अक्षर के स्वर के साथ और द्वितीय व्यंजन अंतिम अक्षर के स्वर के साथ चला जाता है,

गल्ला=गल्-ला

विशेष आवृत्तिवाले द्वित्व व्यंजन :

झक्कड़=क्क

खच्चर =च्च

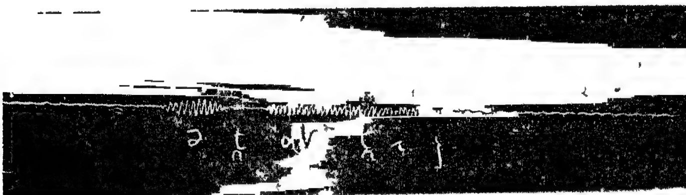
उज्ज्वल =ज्ज

चट्टान -ट्ट

---

१. अ-द्वितीय, यहाँ अ- पूर्व प्रत्यय के रूप में है।

२. अद्-द्वितीय, यहाँ (द्) ध्वनि का उच्चारण दोनों ओर होता है।
मैं अपने उच्चारण की काइमोग्राफिक कापी भी यहाँ दे रहा हूँ :



वस्तुत: अधिकतर लोग दूसरे प्रकार से ही बोलते हैं, वैसे प्रथम उच्चारण भी ठीक है क्योंकि (द्व) का व्यंजनगुच्छ आदि स्थिति में आ सकता है। इस तथ्य की ओर निर्देश डॉ० बाबूराम सक्सेना ने 'सामान्य भाषा विज्ञान' पृष्ठ ७३-७४ पर भी किया है।

श्री रमेश चंद्र मेहरोत्रा ने भी अपने 'हिंदी सिलेबिक स्ट्रक्चर' शीर्षक लेख में इससे मिलता जुलता उदाहरण लिया है, जैसे विद्वान्= विद्-द्वान्

कबड्डी =ड्ड
सत्तर =त्त्
गद्दा =द्द
बन्ना =न्न
छप्पन =प्प
छब्बीस =ब्ब
चम्मच =म्म
भैय्या =य्य
बर्रांना =र्र
बल्लम =ल्ल
रस्सी =स्स

उपर्युक्त सूची से यह स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि द्वित्ववाले व्यजनों में निम्नलिखित प्रकार के व्यंजन है,

१. स्पर्श अघोष=क् च् ट् त् प्
स्पर्श सघोष =ग् ज् ड् द् ब्
नोट : स्पर्श महाप्राण व्यंजन इसमे नहीं हैं।
२. नासिक्य =म् तथा न्
३. अंतःस्थ =य् , र तथा ल्
४. सघर्षो =स्

यह भी स्पष्टतः ज्ञात हो रहा है कि द्वित्व व्यंजनयुक्त शब्दों का पहला अक्षर ह्रस्व स्वरयुक्त है और जहॉ दीर्घ स्वर आता है वहॉ द्वित्व समाप्त हो जाता है।

चाकी द्वित्व युक्त चक्की
चाचा द्वित्व युक्त चच्चा

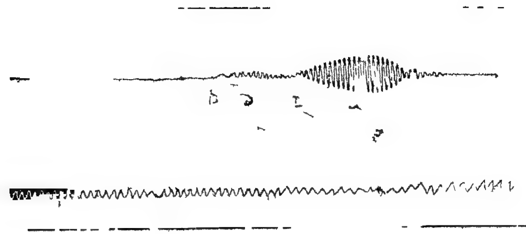
द्वित्व का व्यतिरेकी संबंध :

हिंदी मे कुछ ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जहॉ द्वित्व का एक व्यजनयुक्त शब्द से व्यतिरेकी संबध है। इन उदाहरणो से द्वित्व का ध्वनिग्रामीय महत्व सिद्ध होता है, जैसे,

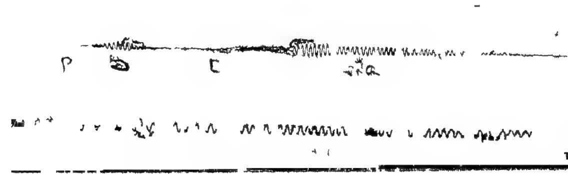
१. १. पता =वह स्थान जहॉ को चिट्ठी भेजी जा रही है।
१. २. पत्ता =पेड़ का पत्ता

दोनों शब्दो के काइमोग्राफिक उच्चारण संलग्न हैं।

पता



पत्ता



२. १ सटा =सटना क्रिया का भूतकालिक रूप।
२. २ सट्टा =जुआ।
३ १ रसी =तरल पदार्थ
३. २ रस्सी =बाँधने के काम में आनेवाली बडी रस्सी।
४. १ पटा =ढका हुआ।
४. २ पट्टा = निश्चित अवधि पर दिया गया।
५. १ गला = कण्ठ।
५. २ गल्ला = एकत्रित अनाज।
६. १ पका = कच्चा अनाज या फल नही।
६. २ पक्का = कठोर, मजबूत
७. १ पतलो = 'पतला' का बहुवचनीय रूप
७. २ पत्तलो = 'पत्तल' का बहुवचनीय रूप

मध्य स्वर लोप और द्वित्व :

कुछ स्थितियो में मध्य स्वर लोप होने से दो एक से समान व्यंजन समीप आकर अनुक्रम की स्थिति में आ जाते हैं जिसके फलस्वरूप दो भिन्न भिन्न शब्द भी ध्वन्यात्मक स्तर पर बहुत कुछ एक हो जाते हैं :—

बन्ना = क्रिया रूप बना = बन्ना क्रिया का भूतकालिक रूप
बन्ना = दूल्हा।

व्यंजन दीर्घता या द्वित्व :

यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि उपर्युक्त उदाहरणों में एक व्यजन का उसी व्यंजन के साथ द्वित्व माना जाय या दीर्घता[1]। वैसे उपर्युक्त उदाहरणो में ।पता। और । पत्ता । का जो काइमोग्राफिक रूप दिया गया है उससे यह स्पष्टतः प्रकट हो रहा है कि एक व्यजन ही बिना किसी अवरोध के चलता जा रहा है । ध्वनिविज्ञान के प्रोफेसर धल[2] ने द्वित्व के पक्ष मे अपना मत दिया है ।

'कि उसके उच्चारण के बीच मे उच्चारण शक्ति को कम करके ध्वनियो को कम करके ध्वनियो को दो विभागो में विभक्ति करके दोनो को एक एक स्वर के साथ जोड़ दिया जाता है ।'

वस्तुतः यह मत आज भ्रात माना जाता है ।

द्वित्व की अपेक्षा व्यंजन में दीर्घता मानना अधिक उचित है. इसके कई कारण हैं :

१. एक व्यंजन और दूसरे व्यंजन के मध्य कहीं भी रुकावट नहीं है ।

२. व्यंजन मे दीर्घता उसी प्रकार स्पष्ट है, जैसे स्वरो मे होती है ।

३. व्यंजन की दीर्घता का मापाकन भी वही है जो स्वरो का होता है, जैसे, 'पता' और 'पत्ता' मे क्रमशः दोनो 'त' की तीन बार की औसत मात्रा इस प्रकार है :

	पता	पत्ता
	....	....
	-त्-	-त्-
१.	७ सी०एस०	१८ सी०एस०
२	८ " "	२० " "
३.	८ " "	१९ " "
योग	२३ सी०एस०	५७ सी०एस०
औसत	७.६	१९

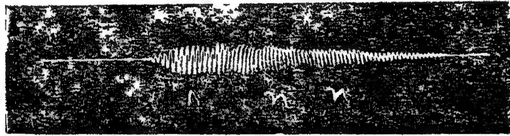
१. इस प्रश्न पर डेनियल जोंस महोदय ने हिंदी के उदाहरण—गला-गल्ला-पता-पत्ता लेकर यह निष्कर्ष प्रकट किए हैं—
विद नो सच आबवियस डेरिवेशन्ज इट मैटर्ज लिटिल व्हेदर दे आर रिगार्डेड एज डबल आर मीअरली एज लाग । टु मी, इट सीम्ज़ प्रीफ़रेबिल फार प्रेक्टिकल परपसेज टु रिगार्ड दैम एज डबल वन पार्ट बीइंग एपोर्शंड टु ईच सिलेबिल । दी फोनीम-इट्स नेचर एंड यूस, १९५०, पृष्ठ १७० ।

२. प्रो० धल द्वित्व मानते हैं :
दो स्वरों के मध्य पाए जानेवाले दीर्घ व्यंजन को द्वित्व रूप में ग्रहण करना अधिक स्वाभाविक है, ध्वनि विज्ञान, १९५८, पृष्ठ २२७ ।

सामान्य व्यंजन और द्वित्व व्यजन मे अनुपात यदि ७ : १९ का है तो सामान्य स्वर[1] तथा दीर्घ स्वर मे ९ : २० का है।

इसी प्रकार	पका	पक्का
	...	.. ...
	–क्–	–क्क–
औसत	६ सी एस	१७ सी०एस०

'अन्न्' शब्द के उच्चारण मे व्यंजन की दीर्घता स्पष्ट परिलक्षित होती है। इस शब्द का काइमोग्राफिक चित्र संलग्न है :



३ ४. १. २ दो व्यंजनों का अनुक्रम

३. ४. १. २. १ समस्थलीय—नासिक्य—स्पर्श

लम्बा = लम्—बा
अन्तिम = अन्—तिम्
अण्डा अण्—डा
पङ्खा = पङ्—खा

स्पर्श अघोष-अघोष अच्छा = अच्—छा

महाप्राण

---

१. मिलाइये इस अनुपात को स्वरों की दीर्घता से :

	पता		पाता	
	....		....	
	–अ–	–आ–	–आ–	–आ–
	९	२०	१९	२०
	१०	२०	२०	२१
	८	२३	२१	२२
योग	२७	६३	६०	६३
औसत	९	२१	२०	२१

चक्खा = चक्—खा
पत्थर = पत्—थर्
पट्ठा = पट्—ठा
स्पर्श—संघर्षी उत्साह = उत्—साह
संघर्षी—स्पर्श-संघर्षी पश्चिम = पश्—चिम्

३. ४ १. २. २ सम उच्चारण विधि—

स्पर्श भक्ति = भक्—ति
चुट्की = चुट्की

३. ४. १ २. ३ भिन्न उच्चारण विधि तथा भिन्नस्थलीय :

पार्श्विक—स्पर्श	हल्का = हल्—का
संघर्षी —स्पर्श	उस्की = उस्—की
संघर्षी —संवाह	विश्वास = विश्—वास
सघोष स्पर्श—महाप्राण	अद्भुत = अद्—भुत्
स्पर्श —अर्द्धस्वर	उद्योग = उद्—योग्
लुंठित —स्पर्शमहाप्राण	आर्थिक = आर्—थिक्
स्पर्श —नासिक्य	आत्मा = आत्—मा

३. ४. २ दो व्यंजनों के अनुक्रम में विभिन्न सीमाएँ :
। अ ह ह अ ।

३. ४. २. १ । अ ह—ह अ ।
एक ही शब्द में पत्थर = पत्—थर् प्रमुख गुच्छ भी
भङ्गी = भङ्—गी दीर्घांत शब्द में इस
प्रकार टूट जाते हैं
पङ्खा = पङ्—खा

३. ४. २. २ । अ—ह ह अ ।
एक ही शब्द में आज्ञा = आ—ज्ञा

३. ४. १. ३ । अ ह ह—अ । एक ही शब्द में
ऐसा रूप नहीं मिलता है ।
केवल शब्द सीमा के साथ ही
संभव है, जैसे उजडेड + आदमी

३. ४. ३ तीन व्यंजनों का अनुक्रम :

३. ४. ३ १ व्यंजन गुच्छ के साथ एक व्यंजन का संयोग :

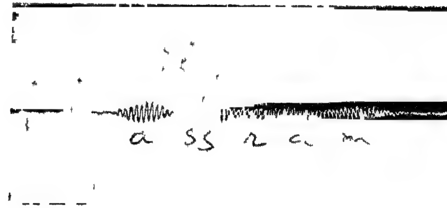
प्रारंभ में गुच्छ, जैसे, पंक्ति = पङ्क—ति
सस्था = सस् था

अंत में व्यंजन—गुच्छ
निमन्त्रण = नि—मन्—त्रण्

३. ४. ३. २ एक ही व्यंजन का दो ओर उच्चारण :

इस अध्याय में ही व्यजनानुक्रम के विवेचन में ही फुटनोट में 'अद्वितीय' के उच्चारण के सबंध में स्पष्ट किया गया है कि एक व्यंजन अपने उसी रूप में (यदि सघोष है तो उसका अघोष रूप और यदि महाप्राण है तो उसका अल्पप्राण रूप) ध्वन्यात्मक स्तर पर दो ओर रहता है जबकि ध्वनिग्रामीय रूप में हम सुविधानुसार उसको एक बार ही लिखते हैं। कुछ उदाहरण लिए जा सकते हैं :

आश्रम = आश्—श्रम्



अध्यापक = अद्—ध्यापक्
अत्याचार = अत्—त्याचार्
अद्वितीय = अत्—द्वितीय्
विद्वान् = विद्—द्वान्
विद्यार्थी = विद्—द्यार्थी
शत्रुओं = शत्—त्रुओं

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह प्रवृत्ति उन व्यंजन गुच्छों के साथ ही है जिनमे दूसरा व्यंजन अंतःस्थ (य्, र् तथा व्) ही हो।

३. ४. ३.३ तीन व्यंजनों के अनुक्रम मे सीमाकन :

तीन व्यजनो का अनुक्रम सामान्यतः कम ही मिलता है फिर जब कभी ऐसे प्रयोग मिलते हैं तो उनका आक्षरिक विभाजन इस प्रकार होगा :

३. ४. ३. ३. १

।अ ह ह–ह अ।	पहले दो व्यंजन व्यजन-गुच्छ		दूसरा व्यंजन व्यंजन	शब्द
सस्था	सस्	–	था	संस्था
संस्कार	सस्	–	कार्	संस्कार
अन्तरिम	अन्त्	–	रिम्	अन्तरिम
ज्योत्स्ना[1]	ज्योत्स्	–	ना	ज्योत्स्ना

३. ४. ३. ३. २

। अ ह–ह ह अ ।

पहले एक व्यजन			दूसरे दो व्यजन गुच्छ रूप में
मत्री	मन्	–	त्री
सख्या	सङ्	–	ख्या
सध्या	सन्	–	ध्या
निमंत्रण	निमन्	–	त्रण्

३. ४. ३. ३. ३ । अ–ह ह ह अ ।

राम की स्त्री रामकी+स्त्री

केवल शब्द-सीमा पर ही संभव है ।

३. ४. ३. ३. ४ । अ ह ह ह–अ । अस्त्र आदि अस्त्र्+आदि

केवल शब्द सीमा पर ही सभव है ।

३. ४. ४ चार व्यंजनों का अनुक्रम :

चार व्यंजनो का अनुक्रम बहुत कम शब्दो में मिलता है। शब्दसीमा के साथ तो यह बहुधा संभव है। फिर भी अन्त्य स्थिति में वत्स्य' आदि शब्दो मे माना जा सकता है और मध्य स्थिति मे भर्त्सना' शब्द मे जिसका विभाजन हम 'भर्त्स्-ना' तथा 'भर्त-स्ना' दोनो ही प्रकार से कर सकते हैं। मैंने प्रथम उच्चारण ही अधिक सुना है।

चार व्यंजनो से अधिक का अनुक्रम केवल सामासिक शब्दो मे ही सभव है।

---

१. श्री मेहरोत्रा ने इसका विभाजन इस प्रकार किया है, ज्योत्-स्ना इस सबध मे आपने यह तर्क दिया है कि 'स्न' का गुच्छ अक्षर के प्रारभ में संभव है, जैसे स्निग्ध, स्नान आदि शब्दों में अतएव 'स्ना' को पृथक् से तोड़ना अधिक ठीक है। ठीक इसी प्रकार का तर्क इस विभाजन के समर्थन में भी दिया जा सकता है कि प्रथम् अक्षर में 'त्स' का गुच्छ इसलिए रख दिया गया कि हिंदी की प्रवृत्ति में अंतिम अक्षर में 'त्स' का गुच्छ आता है जैसे, वत्स ।

३. ५ हिंदी अक्षर का प्रारंभिक रूप तथा अन्त्य रूप :

३. ५. १ हिंदी अक्षर के प्रारंभिक रूप में वे सभी रूप आ सकते हैं जो एकाक्षरिक साँचे में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। हिंदी अक्षर एक स्वर (ह्रस्व, दीर्घ अथवा संध्यक्षर) मात्र ही हो सकता है साथ ही वह अपने प्रारंभ में एक व्यंजन या एक से अधिक व्यंजनों का गुच्छ (तीन व्यजनों के गुच्छ) रख सकते हैं और उसके बाद भी एक व्यंजन या अधिक से अधिक चार व्यंजन तक का गुच्छ संभव है। इस सिद्धांत को पिछले अध्याय में रेखाचित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा चुका है।

३. ५. २ इसी प्रकार अन्त्य स्वरूप भी एकाक्षरिक साँचे से स्पष्ट हो जाता है फिर भी द्व्यक्षरात्मक शब्दों के आधार पर निम्नलिखित अन्त्य रूप दिए जा रहे हैं :

–अा	–कई
–आँ	–म्याऊँ
–अह	–कुँअर्
–आह	–बाईस्
–हअ	–अति
–हआ	–अभी
–हअह	–अधिक्
–हअँह	–पहुँच्
–हआह	–उतार्
–हअहह	–बसन्त्
–हआहह	–समाप्त्
–हआँ	–सरसों
–हहअह	–उज्ज्वल्
–हहअ	–शत्रु
–हहआ	–इस्त्री
–हअहहह	–स्वतंत्र (मिश्र शब्द है)।

अध्याय—४

आन्तरिक साँचे

आक्षरिक साँचे

४. १. एकाक्षरिक

४. १ ० किसी भी भाषा की सरलता उस भाषा में प्राप्त एकाक्षरिक शब्दों से ही आँकी जाती है। कौन सी भाषा कितनी समृद्ध है इसका मूल्यांकन भी उस भाषा में प्राप्त एकाक्षरिक शब्दों से ही संभव है। अन्य साँचे एक तो कठिन होते हैं दूसरे उस भाषा को लोकप्रिय बनाने में बाधक होते हैं।

एकाक्षरिक शब्दावली की अधिकता भाषा को सरल ही नहीं बनाती वरन् उसकी गति भी तीव्र से तीव्रतर कर देती है। शीघ्रलिपि का प्रयोग उस पर आसानी से किया जा सकता है। हिंदी में एकाक्षरिक शब्दों की क्या आवृत्ति है यह आगामी अध्याय में किये गये अध्ययन के आधार पर इस प्रकार है :

कुल शब्द संख्या	=	१७४८
एकाक्षरिक	=	८९
प्रतिशत[1]	=	४८

यह प्रतिशत देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा होगा कि यह तो पर्याप्त है, पर तुलनात्मक दृष्टि[2] से अवलोकन कीजिए :

भाषा	अधिकतम आवृत्ति में प्राप्त शब्दों की संख्या	एकाक्षरिक शब्दों की संख्या	प्रतिशत
अँग्रेजी	१२६	१०७	७९
फ्रेंच	६६	६५	६०
रशियन	२०३	८२	४१

१. रेवरेंड जे० सी० कोनिग ने जबलपुर में ४००० हिंदी के अधिकतम आवृत्ति वाले शब्दों को लेकर एकाक्षरिक शब्दों का प्रतिशत ४१ निकाला था, वे शब्द इस प्रकार हैं :

अब, आ, आप, इस, उस, एक, ओर, और, क्या, कर, का, काम, कि, किस, कुछ, घर, चल, जब, जा, जो, डाक, तब, तुम, तो, था, दिन, देख, देश, ना, नाम, ने, पढ़, पर, पास, फिर, बात, भी, में, मैं, यह, वह, हम, हाथ, ही, हूँ है, सब, साथ, से।

२. वी० शिवायेव—एक्सट्रीम्ज़ इन लैंग्वेज फार्म्ज, टी० एल० सी० डी० १९५६, पृष्ठ १४–२०।

४. १ एकाक्षरिक साँचे

४. १. १ ।आ। साँचा :

४. १. १ १ ।आ। साँचा

आ । क्रिया का आदेशार्थक रूप ।
ए । संबोधन में प्रयुक्त ।
ओ । संबोधन में प्रयुक्त ।

४. १ १ २ ।ऑ। साँचा : ऍ (बोलचाल में)

४ १. २ ।अह। साँचा
४. १ २. १. ।अह। साँचा :

स्वर	ग्	घ्	ज्	ट्	ठ्	ड्	न्	प्	ब्	र्	स्
अ—		+	+	+		+			+		
इ —							+				+
उ—	+				+	+	+			+	+

नोट : 'ऋण' मे 'ऋ' का उच्चारण 'रि' जैसा हे ।

४. १. २. २ ।अँह। साँचा :

स्वर + अनु०	क्	घ्	ज्	ट्	ह्
अँ–	+		+	+	
इँ–					+
उँ–		+			

४.१.२.३ । आह । साँचा ।

स्वर	क्	ख्	ग्	ज्	ट्	ठ	ड्	ढ्	द्	ध्	न्	प्	ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	स्	ह्
आ–			+	+			+	+		+	+	+			+	+	+		+		+	+
ई–		+							+											+		
ऊ–											+		+	+				+				
ए–	+																					
ओ–					+	+	+	+					+				+				+	+
औ–					+												+					

४.१.२.४ ।ऑह । सॉचा :

स्वर+अनु०	क्	ख्	ग्	घ्	च्	ज्	ट्	ठ्	ड्	ढ्	त्	ध्	य्	व्	स्
ऑ–	+	+	+		+	+	+		+		+	+	+	+	+
ईं–							+								
ऊँ–				+	+		+								
ऍ।ऐ–					+			+	+						
ऑं–			+		+			+							

४.१.३ ।अहह। साँचा :

४.१.३ १ ।अहह। सॉचा :

	ग्	ङ्	च्		ण्		त्	न्						ब्	म्			र्					ल्	
	र्	क्	ग्	च्	ट्	ड्	र्	च्	त्	ध्	न्	य्	श्	र्	ब्	म्	ल्	क्	व्	ध्	द्	ग्	प्	ल्
अ–	+	+	+		+	+			+	+	।	+	+	+	+	+	+	+	+	+		+	+	+
इ–							+	+																
उ–	+			+																	+			+

	श्[1]			स्
	ट्	म्	व्	त्
अ–	+		+	+
इ–	+			
उ–		+		

४.१.३ २ ।आहह । साँचा

स्वर	क्	त्	द्		प्	म्	र्	ष्
	य	म्	य्	र्	त्	र्	ज्	ठ्
आ–		+	+	+	+	+		
उ–								
ऐ–	+						+	
ओ–								+

१. [❀] से तात्पर्य मूर्द्धन्यीकरण से है।

४ १ ४ ।अहृहृ। साँचा :

४ १ ४.१ ।अहृहृ। साँचा

	न्		र्			स्
	द् र्	त् य्	घ् य्	द् ध्	य् य्	त् र्
अ–		+	+	+	+	+
इ–	+					

४.१.४.२ ।आहहह। साँचा :

	र्			श् ।ष।
	घ् व्	त् त्	य् य्	ट् य्
आ–		×	×	
ई–				
ऊ–	×			
ए।ऐ				×
ओ–				

४.१.५ ।हअ। साँचा :

४.१.५.१

	अ	इ
व्	×	
न्	×	
क्		+

४. १. ५. २ |हआ| साँचा

प्रथम व्यंजन	-आ	-ई	-ऊ	-ए	-ऐ	-ओ	-औ	
क्—	+	+		+	+	+		
ख्—	+			+		+		
ग्—	+					+		
घ—		+						
च्			+					
छ्—	+		+	+				
ज्—	+	+	+	+		+	+	
ढ्—	+					+		
त्—	+		+		+	+		
थ्—	+	+	+	+				
द्—	+	+		+		+		
ध्—	+	+				+		
न्—	+			+		+	+	
प्—	+	+			+	+		
ब्—	+					+		
भ्—		+	+					
म्—	+							
य्—	+			+				
र्—				+				
ल्—	+	+	+	+	+	+	+	सर्वाधिक आवृत्ति
व्—				+				
स्—	+	+		+		+	+	
ह्—	+	+	+	+	+	+		

४. १. ५. ३ |हआँ| साँचा

	आँ	ईँ	ऊँ	एँ	ऐँ	ओँ	औँ
ज्			+		+		
च्		+	+				
ट्				+			
त्					+		
थ्		+					
द्			+	+			
म्	+			+	+		
ल्			+			+	
ह्	+	+	+		+	+	

नोट—४. १. ६ १ के साँचे ब्लाक में सलग्न हैं।

४. १. ६ २ |ह्अॅह्| साँचा

प्रथम व्यंजन	स्वर	क्	ख्	ग्	घ्	च्	छ्	ज्	झ्	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	स्	ह्
क्	अॅ																			+		+
ख्	ईं					+																
छ्	अॅ									+												
ज्	अॅ					+																+
झ्	अॅ		+																	+		
ट्	अॅ	+		+																		
ठ्	अॅ	+																			+	
ड्	अॅ									+											+	
ढ्	ई			+																		
त्	अॅ																					+
ध्	अॅ					+															+	
फ्	अॅ																				+	
ब्	अॅ									+								+				
	ईं																	+				
भ्	ईं								+													
म्	अॅ																					+
	उँ															+						+
र्	अॅ				+																	
ल्	अॅ				+																	
स्	ईं					+																
	उँ				+																	
ह्	अॅ	+																			+	

४. १. ८. |ह्अहहह| साँचा :

४. १. ८. १ |ह्अहहह| साँचा :

	क्	त्			न्				र्					स
	ष्	त्	स्	त्	त्	त्	द्	घ	ज्	ह्	ण्		त्	त्
प्रथम स्वर	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	+	—।	।
व्यंजन	य्	व्	य्	य्	य्	र्	र्	य्	य्	य्	य्	य्	म्	र्
ग्-अ-											+			
च्-अ-							+							
-इ-					+									
ज्-अ-						+								
त्-अ-		+				+								
म्-अ-			+			+								
ल्-अ-	+													
व्-अ-										+		+	+	+
-इ-									+					
श्-														+

नोट : अंतिम व्यंजन अंतःस्थ य् , र् . व् में ही से कोई एक है, केवल एक स्थान पर एक उदाहरण में 'म्' है जिसकी आवृत्ति नगण्य है। 'य्' से अंत होनेवाले इस प्रकार और भी शब्द बन सकते हैं। यहाँ केवल प्रयोग मे अधिक आनेवाले शब्द ही लिए गए हैं। अर्द्धस्वरों के साथ अंत में स्वरत्व भी आता है।

४. १. ८. २ |ह्आहहह| साँचा :

प्रथम व्यंजन	न		र		श् |ष्|	
द्वितीय व्यंजन	द	स	य	श्	ट	
स्वर	।	।	।	।	।	
तृतीय व्यंजन	र	य	य्	व्	र	
क्-आ-		+				
व्यंजन -ए-	+					
प्-आ-				+		
म्-औ-			+			
र्-आ-					+	

४. १. ६ । हहआ । साँचा

४. १. ६. १ । हहआ । साँचा :

व्यंजन		स्वर						
प्रथम	द्वितीय	आ	ई	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
क्	य्	+						
न्	ह्[1]	+						
ब्	य्	+						
भ्	व्					+		
श्	र्		+					

१. 'न्' का महाप्राण रूप भी 'न्ह' माना जा सकता है।

४. १. ६. २. । हहआँ । साँचा :

व्यंजन　स्वर　+　अनुनासिकता

व्यंजन		
प्रथम	द्वितीय	
		ओ + अनुनासिकता
क्	य् +	
ज्	य् +	
त्	य् +	

४. १. १० । हहअह । साँचा

४. १. १०. १ । हहअह । साँचा :

व्यंजन		स्वर	अन्त्य व्यंजन							
प्रथम	द्वितीय		ज्	ट्	ण्	त्	म्	य्	र्	व्
क्	र्	-अ-					+			
	।श। ष्	-अ-			+					
ज्	व्	-अ-							+	
द्	य्	-उ-				+				
	र्	-अ-								+
		-अ-				+				

			ज्	ट्	ण्	भ्	य्	र्	व्
ध्	र्	-उ-							+
	व्	-अ-	+						
		-अ-			+				
प्	र्	-इ-							
ब्	र्	-अ-	+				+		
भ्	र्	-अ-				+			
	य्	-अ-					+		
व्	र्	-अ-	+						
	फ्	-उ-		+					
स्	व्	-अ-						+	

४-१.२ |हहआह| साँचा :

व्यंजन		स्वर	अंत्य व्यंजन														
प्रथम	द्वितीय		क्	ग्	ज्	ण्	त्	ध्	न्	प्	ब्	म्	य्	र्	ल्	स्	ह्
क्	र्	-आ-														+	
		-ओ-						+									
	ष |ष|	-ई-				+											
ख्	व्	-आ-														+	
ग्	य्	-आ-					+	+									
	र्	-आ-										+					
	व्	-आ-															+
ज्	व्	-आ-													+		
त्	य्	-आ-		+													
द्	र्	-ओ-				+					+						
	व्	-आ-													+		
		-ई-															
ध्	य्	-आ-								+							
न्	व्	-आ-												+			
	ह्	-आ-										+					
प्	य्	-आ-													+		
	र्	-आ-				+			+						+		
		-ए-											+				
	ल्	-ए-		+					+								
ब्	य्	-आ-								+							
म्	य्	-आ-								+							
	ल्	-आ-								+							
व्	य्	-आ-								+				+			+
		-ऊ-															
श्	य्	-आ-											+				
स्	न्, य्	-आ-								+			+			+	
श्,	र्	-ओ-					+										+

४. १. ११ । हहअहह । साँचा :

४ १. १'. १ । हहअहह । साँचा :

आदि व्यंजन स्वर — अंत्य व्यंजन

१ २ क् ग् च त् द् न् ब् म् र् व् श|ष| स् ह

१ २	ष्	ध्र्	छ्	य्	घ्र्	थ्	ध्	ध्	भ्	ह्	ग्	ण्	थ्	य्	ट्	श्	ठ्	ण्	न्	य्	त्	व्	श्	म्
क् र् -इ-			+															+						
ल् -इ-														+										
घ् -उ-					+			+																
ग् र् -अ-						+																		
त् र् -अ-																						+		
द् र् -इ-																				+				
प् र् -अ-															+									
-इ-													+											
ब् र् -अ-									+															+
व् य् -अ-		+									+													
र् -इ-	+			+																		+		
श् र् -अ-							+																	
स् क् -अ-					+																			
त् -अ-						+																		
न् -इ-		+																						
प् -अ-														+										
व् -अ			+			+		+																
ह् र् -अ-																							+	

नोट—आदि व्यंजन 'स' से प्रारंभ होने वाले गुच्छ प्रायः (सभी नहीं) स्वरागम के साथ उच्चरित होते हैं फलतः एकाक्षरिक शब्द द्व्यक्षरात्मक हो जाते हैं। जैसे, स्तंभ = इस्-तंभ

४. १. ११. २ । हहआहह । साँचा :

			अंत्य व्यंजन-गुच्छ						
		प्रथम	घ्	च्	प्	म्	श |ष|		ह्
		द्वितीय	य्	य्	त् य्	य्	ठ्	म्	व्
आदि व्यंजन-गुच्छ		स्वर							
प्रथम	द्वितीय								
ग्	र्	–आ–				+			+
		--ई--					+		
प्	र्	--आ--		+	++				
श्	र्	--ए--					+		
	ल्	--आ--	+						

४ १. १२ । हअहहहह । साँचा

इस सॉचे की शब्दावली का पर्याप्त अभाव है, केवल एक शब्द है, वह भी भाषाविज्ञान के क्षेत्र मे चलता है, वर्त्स्य ।

४. २ द्वयक्षरात्मक साँचे—

४. २. ० द्वयक्षरात्मक सॉचे नमूने के तौर पर ही लिये गये हैं। एकाक्षरिक सॉचो मे स्वरो के साथ साथ व्यंजन के संयोगो का भी ध्यान रक्खा गया है पर यहॉ केवल स्वरो की ही प्रधानता दी गई है और इसी दृष्टि से इन सॉचो के चार्टों का आधार अक्षर का शिखर निर्माण करने वाले प्रधान तत्त्व स्वर ही रक्खे गये हैं ।

उदाहरणो में मिश्र शब्दो से बचा गया है पर, मैं जानता हूँ, कुछ शब्द अनायास ही इसमें आ बैठे हैं जैसे अशोक ।

व्युत्पादित शब्दो को भी उदाहरणो मे स्थान नहीं दिया जाय इस बात का ध्यान रक्खा गया है पर फिर भी लिग के अनुसार बदलते हुए विशेषण तथा क्रिया रूपो ने सॉचो मे जहॉ कही रिक्त स्थान पाया है अपना आसन जमा लिया है ।

बहुवचन रूपो तथा कृदंतीय प्रयोगो का विश्लेषण आगे मिश्र शब्दावली के साथ किया जा रहा है अतएव प्रयत्न यह किया गया है उनके सॉचे इनमे आकर व्यर्थ की संख्या वृद्धि न करें ।

४. २ द्व्यक्षरात्मक साँचे

४. २. १ । अ—ह्अ । साँचा

४. २. १. १. । अ—ह्अ ।

	द्वितीय स्वर —इ
प्रथम स्वर अ—	अति, अरि, अलि, असि, अहि ।
इ—	इति, इहि ।

नोट —अन्तिम ह्रस्व स्वर द्रुतगति के सामान्य भाषण में या तो उच्चरित नहीं होता अथवा दीर्घ हो जाता है। उच्चरित रूप (ह्रस्व स्वर में) फुस-फुसाहट मात्र रह जाता है।

४. २. १. २ ।अ-ह्आ।

	द्वितीय स्वर —आ	—ई	—ए
अ—	अहा	अभी	अरे
प्रथम स्वर इ—	इठा	इसी	इसे
उ—	उमा	उसी	उसे

४. २. १. ३ ।आ-ह्अ।

	द्वितीय स्वर —इ	—उ
प्रथम स्वर आ—	—आधि	आयु

नोट : अन्तिम ह्रस्व स्वर द्रुतगति के सामान्य भाषण में या तो उच्चरित नहीं होता अथवा दीर्घ हो जाता है।

४. २. १. ४. १ ।आ-ह्आ।

प्रथम स्वर	द्वितीय स्वर आ	ई	ऊ	ए	ओ
आ—	आशा	आदी	आडू	आगे	आवो
ई—	ईसा				
ऊ—	ऊना	ऊनी			
ऐ—	ऐसा	ऐसी		ऐसे	
ओ -	ओढ़ा	ओढ़ी		ओढ़े	आढ़ो

४. २. १. ४. २ ।आँ-ह्आ।

		द्वितीय स्वर —आ	—ई
आ—	अनुनासिकता		आँधी
ई—		ईंटा[1]	—
ऊ—		ऊँचा	ऊँची
ऐ—		ऐंचा	ऐंठी
औ—		औंधा	औंधी

१. ईंट का ही दूसरा उच्चरित रूप ।

४. २. २. । अ–ह्अह् । साँचा

४. २. २. १ । अ-ह्अह् ।

द्वितीय स्वर

		–अ	–इ	–अ
	अ–	अलग्	अधिक्	अरुण्
प्रथम स्वर	इ–	इधर्		
	उ.	उपज्	उचित्	उडुप्

४. २. २. २ । अ–ह्आह् ।

द्वितीय स्वर

		–आ	–ई	–ऊ	–ए	–ओ
	अ–	अनाज्	अहीर्	अछूत्	अनेक्	अशोक्
प्रथम स्वर	इ–	इलाज्				
	उ–	उतार्			उमेश्	

४. २. २. ३. १ । आ–ह्अह् ।

द्वितीय स्वर

		–अ–	–इ–	–उ–
	आ–	आपस	आशिष्	आतुर्
प्रथम स्वर	ऊ–	ऊपर्		
	औ–	औचक्		

४. २. २. ३. २ । आँ–ह्अह् ।

द्वितीय स्वर

				–अ–
प्रथम स्वर	आ–	+	आनुना– }	आँगन्
	ई–		सिकता }	ईंधन्

४. २. २. ४ । आ–ह्आह् ।

द्वितीय स्वर

		—आ	—ई	—ए
	आ—	आकाश्	—आधीन्	—आदेश्
प्रथम स्वर	ई—	ईरान्		

४. २. ७. २ । आह — हआ ।

		द्वितीय स्वर			
		—आ	—ई	—ए	—ओ
	आ—	आत्मा	आप्की	आग्रे	आप्को
प्रथम स्वर	ए—	एक्ता			

४. २. ८ । अह — हअह । साँचा

४. २. ८. १ । अह — हअह ।

		द्वितीय स्वर		
प्रथम स्वर		-अ-	-इ-	-उ-
	अ—	अद्रक्	अंतिम्	अद्भुत
	इ—	इस्पर्		
	उ—	उत्तर्		

४. २. ८. २ । अह — हआह ।

		द्वितीय स्वर				
		—आ	—ई	ऊ—	-ए-	-ओ-
	अ—	अवतार्	अक्सीर्	अङ्गूर	अप्रेल्	—
प्रथम स्वर	इ—	(इ) स्थान्*	इक्कीस्*	(इ) स्कूल*	(इ) स्नेह*	
	उ—	उत्साह्	उन्नीस्	उप्देश		उद्योग्

४. २. ८. ३ । आह — हअह ।

		द्वितीय स्वर	
		-अ-	-इ-
	आ—	आचरण्	आर्थिक्
प्रथम स्वर	ई—	ईश्वर	
	ए—	एक्दम्	

४. २. ८. ४ । आह – हआह ।

आस्मान्

४. २. ९ ।अह – ह अ ह ह ।

४. २. ९. १ । अह – ह अ ह ह ।

अरविद्

* आदि स्वरागम युक्त उच्चारण में ।

४. २. ९ २ । आह – ह अ ह ह ।

आश्चर्य्
ऐश्वर्य्

४. २. १० अह् – ह ह अ ह ।

उज्ज्वल्

४. २. ११ । अह – ह ह आ ।

इस्त्री

४. २. १२ ह्अ – अ । साँचा

४. २. १२. १. १ । ह्अ – आ ।

			द्वितीय स्वर	
		आ—	—ई	—ए
	—अ		कई	
प्रथम स्वर	—इ			लिए
	—उ	हुआ	रुई	पुए

४. २. १२. १२. । ह्अ—ऑ ।

हुई ।

४. २. १२. २ १ । ह्आ — आ ।

	—ई			
—आ—	काई	राई	आई	लाई
—ओ—	कोई			

४. २. १२. २. २ । ह्आ – ऑ ।

साईं

४ २. १३ । ह्अ – ह्अ ।

४. २. १३. १। ह्अ – ह्अ ।

		द्वितीय स्वर		
		—ई	—उ	नोट
	अ—	कवि	पशु	अंत मे दीर्घता आ जाती है
प्रथम स्वर	इ—	तिथि	रितु	
	उ—	मुनि	गुरु	

४. २. १३. २. १ । ह्अ—ह्आ ।

	द्वितीय स्वर			
	—आ	—ई	—ए	—ओ
—अ	दवा	पड़ी	सगे	चलो
—इ	चिता	छिपी	मिले	हिलो
—उ	सुधा	सुखी	चुके	चुभो

यह साँचा हिन्दी मे बहुप्रचलित है। कुछ निश्चित व्यजन ध्वनियो को लिया जा सकता है, जैसे प्रथम अक्षर मे । क् । और द्वितीय अक्षर मे । ल् । ध्वनि हो तो इसके अनुसार २१ सभव शब्द बन सकते हैं। हिदी मे परपरागत इस साँचे मे दो ही शब्द चलते थे, १९ स्थान एक प्रकार से रिक्त पडे हुए थे जिनमे मे ४ स्थानो पर किला, किले, कुली, किलो शब्द बड़ी आसानी से खप गये। अभी अभी सरकार द्वारा नवीन नाप तौल की प्रणाली मे जो 'किलो' शब्द चलाया गया वह जितनी सरलता से चल निकला उसके पीछे यही रहस्य है। साँचा हमारे यहाँ था, उसमे प्रयुक्त व्यंजन और स्वरो से हम परिचित थे केवल रिक्त स्थान की पूर्ति की बात थी। इस प्रकार नवीन पारिभाषिक शब्दावली के गढ़ते समय अक्षरात्मक स्वरूप का भी सम्यक् ज्ञान अपेक्षित है।

प्रथम अक्षर				द्वितीय अक्षर		
				ल्—		
	प्रथम स्वर			द्वितीय स्वर		
क्—		—आ	—ई	—ए	—ऐ	ओ
	—अ	कला	कली			
	—इ	किला		किले		किलो
	—उ		कुली			

इसी प्रकार । ख् । तथा । ल् । के सयोग से निर्मित शब्दावली

	—आ	—ई	—ए	—ऐ	—ओ
—अ	खला	खली	खुले	खुलै	
—इ	खिला	खिली	खिले		खिलो
—उ	खुला	खुली	खुले		खुलो

४. २. १३. २. २ । ह्अ—ह्आँ ।

	—आ	—ई	—ऊ	—ए	ओ + अनुनासिकता
—अ	यहाँ	नहीं	सकूँ	सकेँ	
—इ	मियाँ				दिनों
—उ					दुःखों (बहुवचन रूप)

४. २. १३. २. ३ । ह्स्आ—ह्स्अ ।

बँधी
हँसी

४. २. १३. ३. १ । ह्स्आ—ह्स्इ ।

द्वितीय स्वर

प्रथम स्वर	—इ	—उ	
आ—	जाति	राहु	अंतिम स्वर में
ई	नीति		दीर्घता
ऊ	भूमि		आजाती
ए	नेति	हेतु	है।
ओ	खोरि		

४. २. १३. ३. २ । ह्स्आँ—ह्स्अ ।

पाँति, भाँति

४. २. १३. ४ १ । ह्स्आ—ह्स्आ ।

द्वितीय स्वर

		—आ	—ई	—ऊ	—ए	—ऐ	—ओ
	—आ	काला	नाड़ी	बापू	तारे	भावे	मानो
	—ई	नीला	धीमी	टीपू	नीले	खीझै	छीनो
प्रथम स्वर	—ऊ	बूढ़ा	भूखी	छू-छू	छूने	टूटे	पूछो
	—ए	ठेला	तेजी	पेटू	बेटे		देखो
	—ऐ	बैठा	पैड़ी	मैकू	पैसे		
	—ओ	सोचा	जोगी		मोटे	सोवै	खावो
	—औ	दौड़ा	चौकी		बौने		

इसी साँचे में कुछ निश्चित व्यंजनों को लेकर उदाहरण लिये जा सकते हैं।

। प् । + । ल् । ; । त् । + । ल् । , । ब् । + । ल् । ; । ब् । + । ट् ।

। प् । + । ल् ।

पाला	पाली	पालू	पाले	पालो
पीला	पीली	पीलू	पीले	पीलो
पेला	पेली	पेलू	पेले	पेलो
पोला	पोली		पोले	पोलो

पो + ली (संक्रमण के साथ)

४. २. १३. ४. २। हअाँ—हआ।

		द्वितीय स्वर			
		आ	ई—	ए	ओ
आ	अ	बाँका	फाँसी	माँगे	छाँटो
ई	नु	खींचा			
ऊ	ना	लूँगा	गूँजी		
ए	सि क	गेंदा	फेंकी	मैंने	
ओ	ता	झोंटा		भोंरे	पोंछो

४. २. १३. ४. ३। हआ – हअाँ।

बायाँ, दायाँ, गेहूँ

४ २. १४. १. १। हअ – हअह।

		द्वितीय स्वर		
		–अ	–इ	–उ
प्रथम स्वर	–अ	चटक्	चरित्	चतुर्
	–इ	बिगड़्	विविध्	बिबुध्
	–उ	कुशल	रुधिर्	बुरुश्

४. २. १४. १. २ ।हअँ। – हअह।

कुँवर्

४. २. १४. १. ३ ।हअ – हअँह ।

पहुँच्

४. २. १४. २. १ ।हअ – हअह।

		द्वितीय स्वर				
		–आ	–ई	–ऊ	–ए	–ओ
प्रथम स्वर	–अ	कपास्	नवीन्	खजूर्	सफेद्	करोड़्
	–इ	विशाल्	निशीथ्	फिजूल्	बिखेर्	विरोध्
	–उ	गुलाम्	कुलीन्	कुरूप्	फुलेल्	सुयोग्

४. २. १४. २. २ । हअँ – हआह।

सँभार्, सँभाल्

४. २. १४. ३. १ । हआ – हअह ।

		द्वितीय स्वर		
		–अ	–इ	–उ
	—आ	पागल्	नाविक्	जामुन्
	—ई	दीपक्	जीवित्	
प्रथम स्वर	—ऊ	चूरन्	दूषित्	नूपुर्
	—ए	रेशम्	लेकिन्	
	—ऐ	पैदल्	लैटिन्	
	—ओ	भोजन्	कोटिक्	गोकुल
	—औ	नौकर्	कौशिक्	कौतुक्

४. २. १४. ११. २ ।हऑ – हअह ।

बैंगन्

४. २. १४. ४ । हआ – हआह ।

		द्वितीय स्वर					
		–आ	–इ	ऊ–	–ए	–ओ	–औ
	–आ	पाताल्	जागीर्	मालूम्	राकेश्		लाहौर
	–ई	बीमार्				नीरोग	
प्रथम स्वर	–ऊ	तूफान्				भूगोल्	
	–ए	देहात्				बेहोश्	
	–ऐ	मैदान्		मैसूर्	पैकेट्		
	–औ	चौपाल्	चौबीस्			चौकोर्	

४. २. १५. १ । हअ – हअहह ।

बसंत्, समुद्र, दिगन्त, निसर्ग्

४. २. १५. २ । हअ – हआहह ।

समाप्त्, मलेच्छ्, दिनाक्

४. २. १६. । हआ – आह ।

बाईस्
तेईस्

४. २. १७. । हअ—हहअ ।

शत्रु

४. २. १८. १ । हअह—हअ ।

	द्वितीय स्वर		नोट
	–इ	–उ	अन्तिम
–अ–	भक्ति	मंजु	स्वर
–इ–	सिद्धि	बिन्दु	दीर्घ
–उ–	मुक्ति		हो जाता

४. २. १८. २. १ । हअह—हआ ।

				द्वितीय स्वर		
		–आ	–ई	–ऊ	–ए	–ओ
	–अ–	गंगा	बक्‌री[1]	टट्टू	जप्‌ते	समूझो
प्रथम स्वर	–इ–	जिन्‌का	दिल्ली	हिन्दू	बिख्‌रे	किस्‌को
	–उ–	कुर्‌ता	छुट्‌टी	जुग्‌नू	चुग्‌ते	मुझ्‌को

४. २. १८. २. २ । हअँह—हआ ।

मँग्‌वा, भँव्‌री, हँस्‌ते

४. २. १८. ३ । हआह—हअ ।

कान्ति, शान्ति मूर्ति (अन्तिम स्वर में दीर्घता आ जाती है ।

४. २. १८. ४. १ । हआह—हआ ।

			द्वितीय स्वर		
		–आ	–ई	–ऊ	ए
	–आ–	कात्‌ना	पाद्‌री	फाल्‌तू	काट्‌ने
	–ई–	तीस्‌रा	भीत्‌री		बीत्‌ते
प्रथम स्वर	–ऊ–	सूचना	पूर्वी		दूस्‌रे
	–ए–		रेश्‌मी	नेह्‌रू	देख्‌ने
	–ऐ–	तैर्‌ना	फैल्‌ती		तैर्‌ने
	–ओ–	बोल्‌ना	लोमड़ी		टोक्‌रे
	–औ–		नौक्‌री		तौल्‌ने

---

१. इसी साँचे का एक शब्द और है—'बिक्री' पर मुझको इसका उच्चारण [बिक्‌-क्री] सुनाई पड़ता है ।

४. २. १८. ४. २ । हआँह्—हअ ।

	—आ	—ई	—ए
—आँ—	फाँद्ता	चाँद्नी	माँग्ने
—ईँ—	सींच्ता	सींच्ती	
—ऊँ—			ढूँढ्ने
—ऍं—		मेंह्दी	
—ओँ—	घोंस्ला		घोंस्ले

४. २. १६. १ । हअह—हअह ।

		द्वितीय स्वर		
		—अ—	—इ—	—उ—
	—अ—	पत्थर्	पश्चिम्	जयपुर्
प्रथम स्वर	—इ—	निश्चय्	चिन्तित्	बिल्कुल्
	—उ—	सुन्दर्	पुल्कित्	चुन्मुन्

४. २. १६. २ । हअह—हआह ।

		द्वितीय स्वर				
		—आ—	—ई—	—ऊ—	—ए—	—ओ—
	—अ—	बर्सात्	तल्लीन्	मजूर्	सकेत्	सन्तोष्
प्रथम स्वर	—इ—	विश्वास्	निर्भीक्	तिर्सूल्	सिग्रेट्	विद्रोह्
	—उ—	चुप्चाप्				

४. २ १६. ३ । हआह—हअह ।

		द्वितीय स्वर		
		—अ—	—इ—	—उ—
	—आ—	वास्तव्	हार्दिक्	कान्पुर्
	—ई—	बीर्बल्		
प्रथम स्वर	—ऊ—	घूम्कर्		फूल्पुर्
	—ए—	देख्कर्		
	—ओ—	लोट्कर्		जोध्पुर्
	—औ—	लौट्कर्		जौन्पुर

४. २. १६. ४ । हआह—हआह ।

		द्वितीय स्वर				
		—आ—	—ई—	—ऊ—	—ए—	—ओ—
	—आ—	साव्धान्	माल्वीय्	राज्पूत्	लाल्टेन्	
	—ऊ—	धूम्धाम्	पूज्नीय			
प्रथम स्वर	—ऐ—	देख्भाल्		खेल्कूद्		
	—ओ—	सोम्वार		कोह्नूर्		रोक्टोक्

४. २ २० । हअह—हअहह ।
सत्संग्, संबध्, कंठस्थ्
निष्कर्ष्
दुर्गन्ध्

४. २. २१ । हअह—हआहह ।
सिद्धान्त्

४. २. २१. १ । हअह—हहअह ।
उज्ज्वल्, संग्रह्, पन्द्रह्

४. २. २१. २ । हअह—हहआह ।
संग्राम्

४. २. २१. ३ । हआह—हहआह ।
राष्ट्रीय्

४. २. २२ । हअह—हहआ ।
संध्या, संख्या, मन्त्री, तपस्वी

४. २. २३ । हअहह—हआ ।
संस्था

४. २. २४. १ । हअहह—हअह ।
अन्तरिम्

४. २. २४. २ । हअहह—हआह ।
संस्कार्

४. २. २५. १ । हहअ—हअ ।
प्रति, प्रभु, ध्वनि

४. २. २५. २ । हहआ—हआ ।
क्रीड़ा, प्राणी, स्वाहा, स्वामी, प्याला, न्यारा

४. २. २५. ३ । हहअ—हआ ।
प्रजा ध्वजा, व्रती

४. २. २५. ४ १ । हहआ—हअ ।
व्याधि, प्रीति, ख्याति, योति

४. २. २५. ४ २ । हहआँ—हअ ।
क्योंकि

४ २. २५. ४. ३ । हहआँ—हआ ।
न्यौता

४. २. २६ । हहआ—आँ ।
म्याऊँ

४. २. २७. १ । हहअ—हअह ।
प्रथम, प्रकट्, प्रमुख्

४. २. २७. २ । हहअ—हआह ।
प्रकार्, प्रकाश्, प्रताप्, प्रधान्, प्रभाव्, प्रदेश्

४. २. २७. ३ । हहआ—हअह ।
व्याकुल्, स्थापित्, ग्यारह्

४. २. २७. ४ । हहआ—हआह ।
स्वीकार्, त्योहार्, व्यापार्, प्राचीन्

४. २. २८. १ । हहअह—हआ ।
ब्रह्मा नोट् । म् । दोनों अक्षरों में है ।

४. २. २८. २ । हहआह—हआ ।
प्रार्थी

४. २. २९. १ । हहअ—हअहह ।
प्रसिद्ध्, प्रसन्न्, प्रबन्ध्, प्रयत्न्

४. २. २९. २ । हहअ - हआहह ।
प्रशान्त्

४. २. ३० । हहअ - हअहहह ।
स्वतन्त्र्

४. २. ३१. १ । हहअह—हआह ।
प्रह्लाद्

४. २. ३१. २ । हहआह—हअह ।
ब्राह्मण । नोट् । म् । दोनों अक्षरों में है ।

४. २. ३२ । हहआहह- हआ ।
ज्योत्स्ना विवादास्पद है, देखिए ३.४.३. ३. १

४. ३. व्यक्षरात्मक साँचे

४. ३. १ । अ - हअ - हअ । साँचा

४. ३. १. १ । अ - हअ - हअ ।
अ-व-धि नोट-अंतिम स्वर दीर्घ भी हो जाता है ।

४. ३. १. २ ।अ- हआ - हअ ।
उ-पा-धि नोट-अंतिम स्वर में दीर्घता आ जाती है ।

४. ३. १. ३. १ । अ – हआ – हआ ।

अहाता
इरादा
उजाला

४. ३ १. ३. २ । अँ – हआ – हआ ।

अँ-धे-री

४. ३. २ । अ —हअ —हअह ।

४. ३. २, १ । अ—हअ—हअह ।

अनुपम्

४. ३. २. २ । अ – हअ—हआह ।

अनुसार्

४. ३. २. ३ । अ —हआ —हअह ।

अचानक्

४. ३. २ ४ । आ—हआ—हअह ।

आयोजन्

४. ३. ३ । अ—हअह—हआ ।

४. ३. ३. १. १ । अ —हअह—हआ ।

इकट्ठा
उतर्ना

४. ३. ३. १. २ । अँ—हअह—हआ ।

अँगर्खा

४. ३. ४ । अ—हह अ—हअह ।

४. ३. ४. १ । अ—हहअ—हअह ।

अध्ययन्

४. ३. ४. २ । अ—हहआ—हअह ।

अध्यापक्

४. ३. ५ । अ—हआ—आ ।

अढ़ाई

४. ३. ६ । अ —हआ—हहआ ।

अयोध्या

४. ३. ७ । आ—अ—आ ।

आ-इ-ए

४. ३. ८ । आ—हआह—हआह ।

आशीर्वाद

४. ३. ९ । अह—हअ—हअ ।

४. ३. ९. १ । अह—हअ—हअ ।

अग्रागम । इ । के साथ स्थिति

४. ३. ९. २ । अह—हअ—हआ ।

उन्मनी

४. ३. ९. ३ । अह—हआ—हआ ।

उपयोगी

उपकारी

४. ३. १० । अह—हअ—हअह ।

४. ३. १०. १ । अह—(ह) हआ—हआह ।

अत्याचार्

४. ३. १०. २ । अह—हआ—हअह ।

अन्वेषण्

४. ३. ११ । हअ—हअ—हअ ।

त्र्यक्षरात्मक साँचों में अधिकतम आवृत्ति इस साँचे की है । इसके ही अनेक रूप पाए जाते हैं ।

४. ३. ११. १ । हअ—हअ—हअ ।

जलधि

४. ३. ११. २ । हअ—हअ—हआ ।

दुनिया

४. ३. ११. ३ । हअ—हआ—हअ ।

समाधि

४. ३. ११. ४. १ । हअ—हआ—हआ ।

प्रथम स्वर	द्वितीय स्वर	तृतीय स्वर आ	ई	ऊ	ए	ओ
—अ	—आ	मराठा	पठारी	तराजू	बहाते	
	—ई	महीना			पलीते	
	—ऊ	नमूना				
	—ए	बरेली		घरेलू	सबेरे	बसेरो
	—ओ	महोबा	पड़ोसी		फफोले	
	—औ	कसौटी				

		-आ	-ई	-ऊ	-ए
-इ	-आ	निराला	सिपाही		खिलाते
	-ई				
	-ए	बिखेरा			
	-ओ	भिगोया	बिलोती		
-उ	-आ	कुठारा	पुरानी	तराजू	बुझाते

४. ३. ११. ४. २ । हअ-हआँ-हआ ।

पढ़ूँगी, करूँगी

४. ३. ११. ४. ३ । हअँ-हआ-हआ ।

गँवाना

४. ३. ११. ५ । हआ-हअ-हआ ।

बाटिका

४. ३. ११. ६. १ । हआ-हआ-हआ ।

झूमेगा, फैलाया

४ ३. ११. ६. २ । हआ-हआँ-हआ ।

लौटूँगा

४. ३. १२ । हअ-हअ-हअह ।

४. ३. १२. १ । हअ-हअ-हआह ।

परिवार् , खलिहान् , परिणाम्

४. ३. १२. २ । हअ-हआ-हअह ।

जवाहर, सहायक् , सजावट् , हिमाचल्

४. ३. १२. ३ । हअ-हआ-हआह ।

लगातार्

४. ३. १२. ४ । हआ-हअ-हआह ।

कालिदास्

४. ३. १२. ५ । हआ-हआ-हअह ।

कारीगर् , साधारण् , नारायण्

४. ३. १३ । हअ-हअ-अ ।

४. ३. १३. १ । हअ-हअ-आ ।

कलई, बटुआ, जुतई

४. ३. १३. २. १ । हअ-हआ-आ ।

भलाई, बुराई, रजाई

४. ३. १३. २. २ । हअँ-हआ-आ ।

सिँचाई

४. ३. १४ । ह्अ-ह्अह्-ह्अह् ।

४. ३. १४. १ । ह्अ-ह्अह्-ह्अह् ।

पुरन्दर्, परस्पर्

४. ३. १४. २ । ह्अ-ह्अह्-ह्आह् ।

नमस्कार्, बहिष्कार्

४. ३. १४. ३ । ह्आ-ह्आह्-ह्आह् ।

शोभायमान्

४. ३. १५ । ह्अ-ह्अह्-ह्अ ।

४. ३. १५. १ । ह्अ-ह्अह्-ह्आ ।

सफलता, मुहल्ला, दुपट्टा, झुलसना

४. ३. १५. २ । ह्आ-ह्अह्-ह्(ह्) आ ।

सामग्री

४. ३. १५. ३ । ह्अ-ह्आह्-ह्आ ।

महात्मा, चबूतरा

४. ३. १६. १ । ह्अ-ह्अह्-हह्अह् ।

निमन्त्रण

४. ३. १६. २ । ह्आ-ह्अह्-हह्आह् ।

भारद्वाज

४. ३. १७ । ह्अ-ह्आ-हह्अह् ।

पराक्रम्

४. ३. १८ । ह्अह्-ह्अ-ह्अ ।

४. ३. १८. १ । ह्अह्-ह्अ-ह्आ ।

तर्जनी, जग्मगी

४. ३. १८. २. १ । ह्अह्-ह्आ-ह्आ ।

सर्कारी

४. ३. १८. २. २ । हँअह्—ह्आ—ह्आ ।

मँग्वाना

४. ३. १८. २. ३ । ह्अहह्-ह्आ-ह्आ ।

कर्म्चारी

४. ३. १८. ३ । ह्आह्-ह्आ-ह्आ ।

राज्धानी, पाठ्शाला

४. ३. १९ । ह्अह्-ह् (ह्) आह्-ह्आ ।

विद्यार्थी

४. ३. २० । ह्अह्-ह्आ-ह्अह् ।
सम्मेलन्

४. ३. २१ । ह्अह्-हह्अ-ह्आ ।
चंद्रमा

४. ३. २२ । हह्अ-ह्अह्-ह्आ ।
व्यवस्था

४. ३. २३ । हह्अ-ह्अ-ह्अह् ।

४. ३. २३. १ । हह्अ-ह्आ-ह्अह् ।
प्रयोजन्

४. ३. २३. २ । हह्आ-ह्आ-ह्अह् ।
व्यापारिक्

४. ४ चतुरक्षरात्मक साँचे

४. ४. १ । ह्अ-ह्अ-ह्आ—ह्आ ।
हरियाली, बलिहारी

४. ४. २ । ह्अ-ह्अ-ह्अ-ह्आ ।
कमलिनी

अधिकाशतः सामासिक तथा मिश्र शब्द चतुरक्षरात्मक साँचो के बनते जाते हैं, जैसे, अधिकारी, अभिवादन्, कठिनाई, बराबरी, हानिकार्क, आदि इससे अधिक साँचे के शब्द भी सामान्यतः मिश्र व समास ही होते हैं।

———

अध्याय ५

५.१ हिंदी में अरबी फारसी के आगत शब्दों का आक्षरिक विवेचन

५.१.०.० वर्तमान हिंदी के पुराने रूपो मे लगभग १३वी शताब्दी से विदेशी भाषाओ के शब्द मिलने लगते हैं। प्रारंभ मे कुछ अरबी तथा तुर्की भाषा के शब्द गृहीत हुए, तत्पश्चात् बड़ी संख्या में अरबी की शब्दावली गृहीत हुई पर ये शब्द फारसी माध्यम से ही हिंदी तथा हिंदी के पूर्व रूपो मे अपनाए गए हैं।

५.१.०.१ अरबी-फारसी[1] की कुछ विशिष्ट ध्वनियाँ जैसे—एन, ग़ैन आदि का उच्चारण हिंदी मे नही हो पाता। साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि अरबी की ऐसी विशिष्ट ध्वनियो का उच्चारण तो उर्दू तक मे नही सुना जाता है, चाहे उर्दू की वर्णमाला मे इन ध्वनियो के लिये वर्ण विद्यमान हो। हाँ, कुछ ध्वनियाँ जैसे—क़्, ख़्, ग़्, फ़्, ज़्, हिंदी मे विकल्प रूप से उच्चरित होती हैं। लखनऊ अलीगढ, देहली, आगरा आदि उर्दू के प्रधान केंद्रो पर हिंदी भाषा भाषियो के मुख से इन ध्वनियो का शुद्ध उच्चारण[2] भी सुना जा सकता है, फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि हिंदी मे हिंदी भाषा, भाषियो के मुख से। जोर्-ज़ोर्। तथा। खाक्-ख़ाक्। एक सी ही आवृत्ति पर सुने जा सकते हे।

५.१.१.० एकाक्षरिक शब्दावली :

एकाक्षरिक शब्द सरलतम होते हैं और उनको अपनाने मे कोई कठिनाई नही होती है, यही कारण है कि एकाक्षरिक शब्दावली काफी संख्या मे व्यवहृत हो रही है। साधारणतः ये शब्द जो अरबी फारसी मे एकाक्षरिक हैं हिंदी मे भी एकाक्षरिक बने रहते हैं, हाँ कुछ ध्वन्यात्मक अतर अवश्य हो जाता है।

---

१. शब्दावली की वर्तनी 'उर्दू हिंदी शब्दकोश' सकलनकर्ता मुहम्मद मुस्तफा खाँ मद्दाह, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, १९५९ ई०, पर आधारित है।

२. शब्दावली का उच्चारणानुसार आक्षरिक विन्यास का कार्य डा० मसूद हुसेन, प्रोफेसर; उर्दू विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (अब अलीगढ मु० वि० वि०) और श्री तथा श्रीमती मुहम्मद हसन, रीडर, उर्दू विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली की सहायता से किया गया। अत में एक बार फिर से सारी शब्दावली के आक्षरिक विन्यास के पुनर्निरीक्षण का कार्य प्रोफेसर आले अहमद सुरूर, अध्यक्ष, उर्दू विभाग, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ के निर्देशन में सपन हुआ। लेखक उपर्युक्त सभी विद्वानों का आभारी है।

५.१.१.१ । स्वर व्यजन व्यंजन-अहह । साँचा :

इस साँचे मे उल्लेखनीय शब्द निम्नलिखित हैं :

अक्स्, अक्ल्, अर्क्, अर्ज्, अस्ल्, इर्द्, इल्म्, इश्क्, उज्र्, उर्फ्, उर्स् ।

व्यजनगुच्छ का उच्चारण साधारणत क्लिष्ट होता है । अतएव इनमे से कुछ शब्द दो प्रकार से उच्चरित होने के कारण दो प्रकार के साँचे मे मिलते हैं ।

। स्वर व्यजन व्यजन ।	स्वरागम् के साथ द्वयाक्षरिक । स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन ।
अक्ल्	अ-कल्
अस्ल्	अ-सल्
उज्र्	उ-जर

इर्द्, इश्क्, उर्फ्, उर्स् आदि शब्द प्रायः शुद्ध रूप में ही सुनाई देते हैं ।

५.१.१.२ । स्वर (दीर्घ) व्यंजन-आह । साँचा

इस साँचे मे गिने चुने शब्द ही व्यवहृत होते हैं, जिनके हिंदी में गृहीत रूप में कोई अंतर नही होता हे :

आम् नोट— हिंदी मे सम ध्वनियो से युक्त 'आम्' एक फल विशेष अर्थ में पूर्व प्रचलित दूसरा शब्द है । प्रयोग से अर्थ विभिन्नता स्पष्ट हो जाती है क्योकि यह भारत का प्रसिद्ध फल है और प्राचीन काल से इसका महत्व है । बाबर तक ने अपने बाबरनामा मे इसका विस्तृत वर्णन किया है ।

ईद्

ऐब्

५.१.१.३ । व्यंजन स्वर (दीर्घ) साँचा

इस साँचे मे भी कोई परिवर्तन नहीं होता, जैसे—

अरबी फारसी मे । बू । और हिंदी में भी । बू ।

५.१.१.४ । व्यजन स्वर व्यंजन-ह अ ह । साँचा

इस साँचे में भी कोई परिवर्तन नही होता है—

५.१.१.४.१ मध्य में [अ] स्वर के साथ :

खत्, गज्, ग़म् आदि ।

५.१.१.४.२ । मध्य में [इ] स्वर के साथ :

दिक्, दिल्, चिक् आदि

५.१.१.४.३ । मध्य में [उ] स्वर के साथ :

खुद्, खुश्, गुम्, आदि ।

५.१ १.५ । व्यंजन स्वर व्यंजन व्यंजन —ह अ ह ह ।साँचा

५. १. १. ५ १ इस साँचे की शब्दावली बडी संख्या मे हिंदी में गृहीत हुई है जिनमे से अधिकाश शब्द [अ] स्वरयुक्त ही हैं :—

५.१.१.५.१.१ [अ] स्वर के साथ :

कत्ल्, कद्र्, कब्ज्, कर्ज्, खत्म्, शर्म्, हर्फ् आदि ।

५.१.१. ५ १. २ [इ] स्वर के साथ :

किश्त्, किस्म्, जिल्द्, जिस्म्, फिक्र्, सिफ़्र्, हिर्स् आदि ।

५.१.१.५.१.३ [उ] स्वर के साथ :

खुश्क्, चुस्त्, जुर्म्, बुर्ज्, मुफ्त् सुर्ख्, हुस्न् आदि ।

५ १. १. ५. २. साधारणतः हिंदी में उपर्युक्त शब्द तो व्यवहृत होते हैं पर इनके व्यजनगुच्छ तोड़ दिए जाते हैं, फलतः एकाक्षरिक शब्द द्व्याक्षरिक बन जाते हैं, जैसे—

५. १ १. ५. २ १ एकाक्षरिक के स्थान पर हिंदी मे द्व्याक्षरिक :—

फ़स्ल्	फ-सल्
नज्र्	न जर
जह्र्	ज-हर्
हज्म्	ह-जम्
वह्म्	व-हम्
हल्क्	ह-लक्
गुस्ल्	गु-सल्

५.१.१ ५.२.२ दूसरी कोटि में वे शब्द लिये जा सकते हैं जो दो प्रकार से उच्चरित होते हैं :—

अ—व्यंजन-गुच्छ-युक्त एकाक्षरिक रूप में

आ—स्वरागम के साथ द्व्याक्षरिक रूप मे

इन दोनो उच्चारणों का प्रयोग साधारणतः दो पृथक् पृथक् वर्गों में सुना जा सकता है। पर साथ ही यह देखा गया है कि एक ही व्यक्ति एक साधारण ग्रामीण से बात करते समय इनका द्व्याक्षरिक उच्चारण करता है और किसी संभ्रात व्यक्ति से बात करते समय व्यंजन-गुच्छ-युक्त एकाक्षरिक उच्चारण

करता है :—

अक्ल्	अ-कल्
अर्क्	अ-रक्
दर्द्	द-रद्
इल्म्	इ-लम्
बर्फ़्	ब-रफ्
कत्ल्	क-तल्
कद्र्	क-दर्
रस्म्	र-सम्
गर्म्	ग-रम्
तख्त्	त-खत्
हुक्म्	हु-कम्

५.१.१.५.२.३ इस कोटि में वे शब्द आते हैं जिनके उच्चारण व्यंजन-गुच्छ के साथ एकाक्षरिक रूप मे ही उच्चरित होते हैं। मैने आज तक किसी हिंदी भाषा-भाषी के मुख से चु-सत् , म-सत् ग-शत्, जिनस् , जि-लद् जैसे उच्चारण नहीं सुने हैं। ये सभी शब्द क्रमशः चुस्त्, मस्त्, गश्त्, जिन्स्, जिल्द् रूप में ही बोले जाते हैं। उदाहरणार्थ और भी शब्द लिए जा सकते हैं।

व्यंजनगुच्छ	उदाहरण
स्त्	मस्त्, चुस्त्
स्न्	हुस्न्
क्स्	अक्स्
र्द्, र्स्, र्त्	दर्द्, उर्स्, शर्त्
श्क्, श्त्, श्म्	इश्क्, गश्त्, चश्म्
न के साथ द्, ज्, ग्, स्	फंद्, पैबंद्, रंग्, जंग् जिन्स् आदि जंग् (लोहे का) तथा जंग (युद्ध) दोनो ही हिंदी में जंग् बन जाते हैं।
ल्द्, ल्फ़्	जिल्द्, जुल्फ़्
त्फ़्	लुत्फ़्
द्द, ज्ज द्वित्व वाले शब्द	रद्द्, हज्ज्।

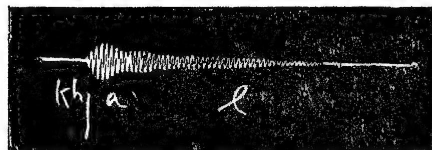
उपर्युक्त शब्दो मे प्रयुक्त व्यंजनगुच्छों में से निम्नलिखित गुच्छ हिंदी में परंपरागत हैं ही अतएव उनके उच्चारण में कोई कठिनाई नहीं होती, जैसे—

र्क, ल्क, ज्ज, न्ज, र्त, स्त, द्द, र्द, क्म, त्म, र्म, ल्म, ह्म, क्र्, त्र्, द्र, क्ल, श्र्, स्न।

५.१.१.६ । व्यंजन व्यंजन स्वर (दीर्घ) व्यजन-हह्आह । साँचा :

वस्तुतः । व्यंजन स्वर व्यंजन स्वर (दीर्घ) व्यंजन । साँचे के शब्द हिंदी में उपर्युक्त साँचे में ही प्रयुक्त होते हैं :

खयाल्	हिंदी	ख्याल्
मियान्	हिंदी	म्यान





५. १. २.० द्व्याक्षरिक शब्द :

५.१.२.१. १। स्वर-व्यजन स्वर (दीर्घ) अ-हआ । साँचा :

अदा	हिंदी	अदा साँचे में कोई परिवर्तन नही हुआ है।

५.१.२.१.२. । स्वर (दीर्घ)-व्यंजन स्वर (दीर्घ)-आ-हआ । साँचा :

आदी	हिंदी	आ-दी साँचे मे कोई परिवर्तन नही है।
आला		आ-ला
आग़ा		आ-गा

५.१.२.२ । स्वर-व्यजन स्वर व्यंजन—अ-हअह । साँचा :

५.१.२.२.१ प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व हो :

अगर्	हिदी	अ-गर् साँचे मे कोई परिवर्तन नहीं है।
अदद्		अ-दद्
असर्		अ-सर्

५.१.२.२.२ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो :

अजीब्	अ-जीब्
अबीर्	अ-बीर्
अमीर्	अ-मीर्

अचार्	हिंदी	अ–चार्[1]
इनाम्		इ–नाम्
इलाज्		इ–लाज्
उसूल्		उ–सूल्

५.१.२.२.३ प्रथम अक्षर का स्वर दीर्घ हो :

आखिर्	हिंदी	आ–खिर्
आदत्		आ–दत्
आफ़त्		आ–फ़त्

५.१.२.२.४ दोनो अक्षरो का स्वर दीर्घ हो :

आगाह्	हिंदी	आ–गाह्
आज़ाद्		आ–ज़ाद्
आराम्		आ–राम्
आवाज्		आ–वाज्
ईमान्		ई–मान्
औज़ार्		औ–ज़ार्

५.१.२.२.५ प्रथम अक्षर का स्वर संध्यक्षर स्वर हो :

ऐयाश्	हिंदी	अइ–याश्

५.१.२.३. । स्वर व्यंजन—व्यंजन स्वर (दीर्घ)—अह–हआ । साँचा ·

५.१.२.३.१ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो ।

अबरा[2]	हिंदी	अब्–रा
इम्ला		इम्–ला
उम्दा		उम्–दा

५.१.२.३.२ प्रथम तथा द्वितीय दोनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हों ।

आबरू	हिंदी	आब्–रू
ओहदा		ओह्–दा

---

१. उर्दू में इसका दूसरा उच्चारण 'आ-चार' भी समान आवृत्ति पर चलता है, हिंदी में आदि अक्षर ह्रस्व रहता है, क्योंकि संस्कृत की परंपरा से प्राप्त 'आ-चार्' हिंदी में पृथक् शब्द है जिसका अधिक व्यवहार होता है। 'आ-चार' शब्द का सांस्कृतिक महत्त्व है। यही कारण है कि हिंदी में दूसरा उच्चारण नहीं चल सका।

२. मूल शब्द 'अब्र' है।

५.१.२.४ । स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर व्यंजन—अह्-ह्अह . साँचा :

५.१.२.४ १ दोनो अक्षरो के स्वर ह्रस्व हो —

अक्सर्	हिंदी	अक्-सर्
अस्तर्		अस्-तर्
इज्जत्		इज्-जत्
इल्लत्		इल्-लत्

५.१.२.४.२ द्वितीय अक्षर के अंत मे व्यंजन-गुच्छ हो

अलमस्त्	हिंदी	अल्-मस्त्

५.१.२.४.३ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो ।

अंजीर्	हिंदी	अन्-जीर्
अख्बार्		अख्-बार्
अफ़वाह्		अफ्-वाह्
इंसाफ़्		इन्-साफ्
उम्मीद्		उम्-मीद्

५.१.२.४.४ दोनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हों ।

अस्तीन्	हिंदी	आस्-तीन्
आस्मान		आस्-मान्

५. १. २. ४ ५.

इंतिजार्	इंत-जार्
इंतिकाल	इंत्-काल्



इ न् त्-काल्

अरबी-फारसी के आगत शब्दों में व्यंजन-संयोग

द्वितीय व्यंजन

प्रथम व्यंजन	प्	त्	ट्	क़्	क्	ब्	द्	ग्	ग़्	म्	न्	ख़्	फ़्	व्	स्	च्	ज़्	श्	य्	र्	ल्	ह्
प्																				+		
त्		+									+									+	+	
ट्																						
क़्		+		+						+				+								
क्		+		+	+	+	+						+		+					+		
ब्		+		+		+	+			+									+	+		
द्						+	+		+								+	+				+
ग्										+				+								
ग़्																						
म्					+	+			+	+	+		+	+	+		+			+		
न्				+		+		+			+		+	+		+	+	+				+
ख़्		+				+				+				+								
फ़्		+							+	+	+							+				
व्										+						+						
स्										+	+						+			+		
च्		+		+											+							
ज़्										+					+			+		+		
ज्		+		+						+						+						+
श्		+		+	+					+	+					+		+	+			+
य्					+																	
र्				+	+	+		+	+	+			+	+	+	+	+	+	+	+		+
ल्		+		+										+	+	+				+		+
ह्		+			+	+			+	+				+		+		+	+	+		

५.१२.५. । व्यंजन स्वर-स्वर व्यंजन—ह्रस्व-आह । साँचा :

रईस् हिंदी र–ईस्

५.१.२.६ । व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर—ह्रस्व-ह्रस्व । साँचा :

५.१.२.६.१ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो :

जिला हिंदी जि–ला

दवा द–वा

नशा, सजा, हवा, तनः, मजः, आदि शब्द इसी साँचे में आते हैं ।

५.१.२.६.२ । दोनों अक्षरो के स्वर दीर्घ हों :

खाली	हिंदी	खा-ली
चाकू		चा-कू
राजी		राजी
बाकी		बाकी

इस सॉचे मे आनेवाली शब्दावली अधिक प्रयोग मे आती है विशेषकर अरबी-फ़ारसी के वे समस्त शब्द इस सॉच मे आ गए हैं जिनके अत मे 'हा-इ मुख्तफ़ा है, जैसे, कूच , कूज , खान , खान , गोत॰, चार , चूज , जाम॰, जीर , ताज , दान., तौब॰, दीद., नेफ़:, पेश॰, माद , माश:, मेव॰, शीर , साद:, सीन , हैज , गूद. आदि। हिदी मे ये सभी शब्द दीर्घ स्वरात हो गए हैं, और यही उच्चारणउर्दू मे भी चलता है।

जिन शब्दो के मध्य कंठ्य स्पर्श (हमजा) आता है उसका लोप भी होकर यही सॉचा बन जाता है, जैसे—

का॰ब.	हिंदी	का-बा
दा॰वा		दा-वा

५.१.२.६.३ । प्रथम अक्षर में अनुनासिकता के साथ साँचा :—

तॉगा	हिंदी	तॉ-गा

५.१.२.६.४ । दोनो अक्षरों के स्वर दीर्घ हों साथ ही प्रथम अक्षर के आदि मे व्यजन गुच्छ आ जाय। (अरबी फ़ारसी के शब्दो के आदि मे व्यजन गुच्छ प्राय. नही होता है पर जिन शब्दो के आदि अक्षर मे 'इ' स्वर होता है और साथ मे य्' हो तो हिदी मे स्वर का लोप होकर गुच्छ रूप हो जाता है), जैसे—

पियाला	हिंदी	प्या-ला
पियादा		प्या-दा
जियादा		ज्या-दा

५.१.२.७ । व्यजन स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन ह्अ-ह्अह । साँचा

५.१.२.७.१ । व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर व्यजन।

कदम्	हिंदी	क-दम्
कमर्		क-मर्
जिगर्		जि-गर्
शहद्		श-हद्

इस कोटि में शब्दों की संख्या पर्याप्त है जैसे, कसम्, खबर् , गलत्, तलब्, बग़ल्, बहस् , मदद्, वतन् आदि।

५.१.२.७.२। द्वितीय अक्षर का अंत व्यजन गुच्छ से हो :

दरख्त्	हिंदी	द-रख्त्
पसन्द्		प-सन्द्
बुलन्द्		बु लन्द्

५.१.२.७.३ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

कतार्	हिंदी	क-तार्
ग़रीब		ग-रीब्

इस साँचे मे खिलाफ्,गुलाब् , हिसाब् , हकीम्, जमीन्, गिलाफ़् आदि शब्द लिये जा सकते हैं।

५.१.२.७.४ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो और अन्त में व्यंजन गुच्छ भी हो,

शनाख्त	हिंदी	श-नाख्त्

५.१.२.७.५ प्रथम अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

कागज्	हिंदी	का-गज्
कीमत्		की-मत्
चादर्		चा-दर्

५.१.२.७.६ प्रथम अक्षर का स्वर दीर्घ हो और द्वितीय अक्षरात व्यंजन गुच्छ हो,

पाबंद्	हिंदी	पा-बन्द्
पैबंद्		पै-बन्द्

५.१ २.७.७ प्रथम तथा द्वितीय दोनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हों,

बाजार्	हिंदी	बा-जार्
बीमार्		बी-मार्

इस कोटि में बादाम्, बारात्, दामाद्, कानून्, कालेज् ; जासूस् , सामान् , तालाब् आदि शब्द आते हैं।

इस साँचे की कुछ उल्लेखनीय बातें निम्नलिखित हैं :

१. लिखित रूप चाहे जो हो पर बोलने में प्रथम दीर्घ स्वर ह्रस्वता लेकर आता है, त-लाब्, ब-जार्, ब-दाम्, बरात्, द-माद् आदि
नोट—बी-मार्, दीवार्, (प्रथम अक्षर जहाँ ईकारान्त है) अपवाद हैं।

२. यदि द्वितीय अक्षर मे स्वर दीर्घ ।ऊ। हो तो प्रथम स्वर दीर्घ ही बना रहता है, का-नून्, जा-सूस्, मा-लूम्।

३. यदि प्रथम अक्षर का स्वर 'औ' या 'ऐ' हो तो वह दीर्घ ही बना रहता है, मौ-जूद्।

४. तॉलीम्, तॉवीज्, तॉरीफ् आदि शब्द हिंदी मे तालीम्, तावीज्, तारीफ्, आदि हो जाते हैं।

५.१.२.८। व्यजन स्वर व्यजन-व्यंजन स्वर-ह्रस्व-ह्रस्व। सॉचा :

५.१.२.८.१ प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व तथा द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

किश्ती	हिंदी	किश्-ती
किस्सा		किस्-सा
चश्मा		चश्मा

इस कोटि के शब्दो की संख्या भी पर्याप्त है। 'हे' से अत होनेवाले शब्द प्राय: दीर्घ स्वरात हो जाने के कारण इस सॉचे मे ही आ जाते हैं। उदाहरणार्थ, खस्त:, गुस्स:, जिन्द:, जच्च:, तख्त., दर्ज., पर्च:, पिस्त:, पुख्त:, रिश्त:, सुर्म:, हफ्त:, हम्ल: आदि हिंदी मे दीर्घ आकारात हो जाते हैं।

इस सॉचे का 'हल्वा' शब्द हिदी भाषाभाषा के मुँह से 'हलु-आ' ही सुनाई देता है। हिंदी मे 'ल्—व्' व्यजन संयोग का अभाव है।

५.१.२.८.२ प्रथम अक्षरात व्यजन गुच्छ हो और द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो।

जिंदगी	हिंदी	जिन्द्–गी
बन्दगी		बन्द-गी

५.१.२.८.३ दोनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हो,

चाश्नी	हिदी	चाश्–नी
शोरवा		शोर्–वा

'हे' से अंत होनेवाले शब्द प्राय: दीर्घ स्वरात हो जाने के कारण इस साँचे में ही आ जाते हैं, चेहर:, चौतर:, नाश्त:, फ़ाख्त:, फैसल:, हौसल: आदि शब्द इस कोटि में लिये जा सकते हैं।

५.१.२.९। व्यजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर व्यजन–ह्रस्व–ह्रस्व। साँचा :

५.१.२.९.१

किस्मत्	हिंदी	किस्–मत्
फ़ुर्सत्		फ़ुर्–सत्

इस कोटि में तरकश्, दिक्कत्, बिस्तर्, मत्लब्, मल्हम्, शरबत् आदि शब्द हैं।

५.१.२.९.२ द्वितीय अक्षरात व्यंजन-गुच्छ हो :

गुलकंद	हिंदी	गुल–कंद्
हमदर्द		हम्–दर्द

५.१.२.९.३ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

गद्दार हिंदी गद्-दार्

तस्वीर तस्-वीर्

५.१.२.९.४ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो तथा अक्षरांत व्यंजन-गुच्छ हो :

बरदाश्त हिंदी बर्-दाश्त्

५.१.२.९.५ प्रथम अक्षरांत व्यंजन गुच्छ हो और द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

खुर्दबीन हिंदी खुर्द्-बीन्

५.१.२.९.६ प्रथम अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

नामवर् हिंदी नाम्-वर्

५.१.२.९.७ दोनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हो,

पायदान् हिंदी पाय्-दान्

पेशकार् पेश्-कार्

इस कोटि मे खाकसार्, माहवार् शब्द आते है। मारिफ़त्, बावुजूद् आदि शब्दो मे 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः लोप हो गया है।

५.१.३.१ । स्वर (दीर्घ) स्वर-व्यजन स्वर (दीर्घ) —

आ आ-हआ साँचा :

आईना हिंदी आ-ई-ना आय्ना रूप भी हो जाता है।

५.१.३.२ । (दीघ) स्वर स्वर व्यंजन-व्यंजन (दीर्घ) स्वर आ-अह्-ह्आ। साँचा

आइदा हिंदी आ-इन्-दा

५.१.३.३ । स्वर-व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर—अ-ह्अ-ह्अ । साँचा :

५.१.३.३.१ द्वितीय तथा तृतीय अक्षरो के स्वर दीर्घ हो,

असामी हिंदी अ-सा-मी

इरादा इ-रा-दा

५.१.३.३.२ तीनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हो,

आवारा हिंदी आ-वा-रा

५.१.३.४ स्वर-व्यंजन स्वर(दीर्घ)-व्यंजन स्वर व्यंजन-अ-ह्अ-ह्अह । साँचा :

५.१.३.४.१ द्वितीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

अदालत् हिंदी अ-दा-लत्

इजाजत् इ-जा-जत्

५.१.३.४.२ तीनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हो,

आलीशान् हिंदी आ-ली-शान्

५.१.३.५ । स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन व्यंजन स्वर—अ-ह्अह्-ह् आ । साँचा

५.१.३.५.१ तृतीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो

अशरफी हिंदी अ-शर्-फी

५.१.३.५.२ प्रथम तथा तृतीय अक्षरों के स्वर दीर्घ हों,

आहिस्ता हिंदी आ-हिस्-ता

५.१.३.६ । स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन-व्यंजन-स्वर व्यंजन—

अ-हअह-हअह । साँचा

५.१.३.६.१

अहलमद हिंदी अ-हल्-मद्

५.१.३.६.२ तृतीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

अहलकार हिंदी अ हल्-कार

५.१.३.७ । स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर-अह-हअ-हअ । साँचा ।

५.१.३.७.१ तृतीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

अजनबी हिंदी अज्-न-बी

५.१.३.७.२ द्वितीय तथा तृतीय अक्षर के स्वर दीर्घ हों,

अन्दाजः हिंदी अन्-दा-जा

अन्देशः अन्-दे-शा

नोट : शब्द 'आमदनी' का उच्चारण मैने 'आ-मद्-नी' तथा 'आम्-द-नी' दो प्रकार से सुना है ।

५.१.३.८ । स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन—अह-हअ-हआह । साँचा ।

हिंदी मे इस सॉचे के शब्द मिलते हैं । तृतीय अक्षर का स्वर दीर्घ है :—

इन्किलाब हिंदी इन्-कि-लाब्

इम्तिहान इम् ति हान् दूसरा उच्चारण इम्-त हान्

इश्तिहार इश् ति हार इश् त हार्

५.१.३.९ । व्यंजन स्वर-स्वर व्यंजन स्वर—हअ-आ-हआ । साँचा :

द्वितीय तथा तृतीय अक्षरों के स्वर दीर्घ हों,

दुआबा हिंदी दु आ बा

फुआरा फु-आ-रा

५.१.३.१० । व्यंजन स्वर-स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन—हआ-आ-हआह । साँचा ।

तीनों अक्षरों के स्वर दीर्घ हों,

बेईमान हिंदी बे-ई-मान् द्रुतगति मे बे-इ-मान्

५.१.३.११ । व्यंजन स्वर-स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर—हअ-आह-हआ । साँचा ।

द्वितीय तथा तृतीय अक्षरों के स्वर दीर्घ हो :

मुआवज़ः हिंदी मु-आव् जा

५.१.३.१२। व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर-स्वर ह्रस्व–ह्रस्व–अ। साँचा।

५.१.३.१२.१ जब पहला तथा दूसरा अक्षर ह्रस्व स्वरयुक्त हो,

कतई	हिंदी	क-त-ई
कलई		क-ल ई

५ १.३.१२.२ जब द्वितीय तथा तृतीय अक्षर दीर्घ स्वर युक्त हो

सफाई	हिंदी	स फ़ा ई

५.१.३.१३। व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर– ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व। साँचा :

५.१.३.१३.१ जब तृतीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो,

खुफ़िया	हिंदी	खु-फ़ि-या
दुनिया		दु-नि-या मूल शब्द भिन्न साँचे का है :

५.१.३.१३.२ जब द्वितीय तथा तृतीय अक्षरो के स्वर दीर्घ हो :

कमीना	हिंदी	क मी ना
किराया		कि रा-या

गालीचा, दारोगा, दीवाला भी हिंदी में भी इसी साँचे के अंतर्गत आ गये हैं।

खजानः खमीरः, जनानः तमाशः आदि भी इसी साँचे मे आ गये हैं।

५.१.३.१३.३ जब तीनो अक्षरो के स्वर दीर्घ हो :

मौलाना	हिंदी	मौ-ला-ना
सैलानी		सै ला-नी

पाजामः, पेचीदः, पैमानः पौदीनः आदि भी इसी साँचे मे आ जाते हैं।

५.१.३.१४। व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन—ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्वह। साँचा।

५.१.३.१४.१ द्वितीय अक्षर कास्वर दीर्घ हो :

कबूतर	हिंदी	क बू तर्
खुशामद्		खु-शा मद्

इस साँचे मे किफ़ायत्, जवाहर, वकालत्, शिकायत्, हरारत्, मुसीबत्, रियासत् आदि शब्द भी आ जाते हैं।

५.१.३.१४.२ द्वितीय अक्षर दीर्घ स्वर के साथ तथा तृतीय अक्षरात व्यंजन-गुच्छ हो :

रजामन्द	हिंदी	र-ज़ा-मन्द्

५.१.३.१४.३ द्वितीय तथा तृतीय अक्षरो के स्वर दीर्घ हो,

चरागाह	हिंदी	च-रा गाह्

परेशान		प-रे शान्
हवालात		ह वा लात्

५.१.३.१४.४ प्रथम तथा तृतीय अक्षरो के स्वर दीर्घ हो :

नौजवान	हिंदी	नौ ज-वान्

५.१.३.१४.५ प्रथम तथा द्वितीय अक्षरो के स्वर दीर्घ हो :

कारीगर	हिंदी	का-री गर्
सौदागर		सौ-दा-गर्

५.१.३.१५ । व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर । साँचा

५.१.३.१५.१ तृतीय अक्षर का स्वर दीर्घ हो :

चिलमची	हिंदी	चि-लम्-ची
मुनक्का		मु-नक्-का

अन्य साँचों में । व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर व्यंजन, व्यंजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर-स्वर, व्यजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर, व्यंजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर-व्यंजन स्वर व्यंजन । तथा । व्यंजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर व्यंजन-व्यंजन स्वर । साँचे उल्लेखनीय हैं।

५.१.४ साधारणतः किसी विदेशी भाषा से मूल शब्द एक वचन रूप में ही लिये जाते हैं और उनके बहुवचन ग्राहक भाषा के अनुसार बनाये जाते हैं। यह एक सर्वमान्य नियम है पर इसके ठीक विपरीत कुछ ऐसे शब्द भी इस शब्दावली मे आये है जिनका बहुवचन रूप ही गृहीत है, एकवचन मूलरूप मे उसका कहीं कोई प्रयोग नहीं होता :

जवाहर	मूल शब्द जौहर है जिसमें ई प्रत्यय लगकर जौहरी बनाते हैं	
तवाइफ़	मूल शब्द 'ताइफ' नहीं चलता है।	
असबाब्	एकवचन सौब है।	
असवार	एकवचन सौर है।	
अफ़्वाह	एकवचन फ्वह है।	
अखबार	इसका एकवचन 'खबर' भी प्रयुक्त होता है।	
उसूल	अस्ल ।	
औजार	विज्र।	
औलाद	वलद ।	
आदाब	अदब	नोट : दोनों ही चलते हैं।

५.१.५

कुछ शब्द ऐसे भी गृहीत हुए हैं जिनमें आतरिक संधि हो गई है।

बदम आश	हिंदी मे बद्-माश्	उर्दू में यह चलता है।
बकर ईद	बक्-रीद	उर्दू मे 'बकरा ईद' भी चलता है
दफ़्अ	दफ़ा	उर्दू मे भी यह इसी रूप मे बोला जाता है।
तअल्लुक	ताल्लुक	
आनन फ़ आनन	आनन-फ़ानन	

५.२ अँग्रेजी आगत शब्दावली और आक्षरिक विन्यास

५.२.० किसी भी भाषा के शब्दो को अक्षरो मे बाँटना कष्टसाध्य ही नहीं विवादपूर्ण विषय है, वर्षों के अनुभवप्राप्त भाषाविद् डेनियल जोस महोदय[1] तक का यह कथन है कि यह निश्चित करना कभी कभी असंभव हो जाता है कि अक्षर का कहाँ से प्रारंभ और कहाँ से अंत होता है। अक्षरो को पृथक् करने के लिये ध्वनि, गुण और मात्रा संबंधी आधार मानना पडेगा। जोस महोदय[2] ने अँग्रेजी में अक्षर विभाजन की निम्नलिखित स्थितियाँ स्वीकार की हैं :—

अ—स्वर और व्यंजन के मध्य आक्षरिक सीमा

eye-sight ['aı-sait] v-cvc

ब—दो या तीन व्यंजनों मे से प्रथम व्यंजन के बाद आक्षरिक सीमा

Leap-year ['lı:p-jə:] cv:c-cv:

स—तीन व्यंजनों में से प्रथम दो व्यंजनों के बाद आक्षरिक सीमा

Bank-rate ['bænk-reit] cvcc-cvc

द—व्यजन और स्वर के मध्य आक्षरिक सीमा

Haır-oıl ['heəı-oıl] cvc-vc

५.२.१ हिंदी तथा अँग्रेजी अक्षरों का विवेचन :

दोनों भाषाओं के सामान्यत अक्षर साँचे इस प्रकार हैं—

१. अ	a	[æ]	ऐ
२. अह	Ash	[æʃ]	अश्
३. आह	Art	[a:t]	आट्

१. जोन्स, डी–एन आउटलाइन अव् इंग्लिश फ़ोनेटिक्स, १९५६, पृ० २१२।
२. वही, पृ० १२७-१२८।

४. अहह	Inch	[ɪntʃ]	अन्त्
५. हअ	To	[tə]	कि
६. हआ	Bar	[ba:]	तू
७. हआह	Bag	[bæg]	पार्
८. हअह	Book	[buk]	कर्
९. हअहह	Lamp	[læmp]	पन्त्
१०. हआहह	Band	[bæ nd]	पात्र्
११. हहअह	Black	[blæk]	प्रेम् हिंदी मे स्वर दीर्घ है।
१२. हहआ	Star	[sta:]	श्री
१३. हहआह	Class	[kla s]	ज्वार्
१४. हहअहह	Stand	[stænd]	क्लिष्ट्
१५. हहआहह	नही है		श्रोत्र
१६. हहहआ	,,		स्त्री
१७. हहअहहह	Present	[pɪeznt]	हिंदी मे नही है
१८. हहअह	Spring	[sprɪŋ]	

हिंदी मे सर्वाधिक आवृत्ति 'हअ' तथा 'हअह'[1] साँचों की है। इस

---

१. अँग्रेजी में भी 'हअह' साँचा ही सर्वाधिक प्रयुक्त होता है। इस प्रकार का अध्ययन श्री मिलर महोदय ने प्रस्तुत किया है :

साँचा	प्रतिशत
हअह	३३.५
अह	२०.३
हअ	२१.८
अ	९.७
हअहह	७.८
अहह, हहअह	२.८
हहअ	०.८
हहअहह	०.५

मिलर—लैंग्वेज एंड कम्यूनिकेशन, लन् १९५१, पृष्ठ ८८।

हिंदी में आक्षरिक साँचों का आवृत्तिमूलक अध्ययन मैंने आगे अध्याय-८ में प्रस्तुत किया है। उर्दू तथा अवधी में भी किए गए अध्ययन को मिलाइए :

उर्दू : डा० मसूद हुसैन—ए फोनेटिक एंड फोनोलोजीकल स्टडी अव् द वर्ड इन उर्दू, पृ० १२।

अवधी—डा० बाबूराम सक्सेना—एवोल्यूशन अव् अवधी, १९३७, नि० १३०, पृ० ८६।

प्रकार हिंदी तथा अँग्रेजी के अक्षरात्मक स्वरूप में विशेष अंतर नही है, केवल तीन व्यजनो का गुच्छ प्रारभ में दोनो ही भाषाओ में कम आता है। हिंदी मे 'स्त्री' जैसे शब्दो के शुद्ध उच्चारण कम ही सुनाई देते हैं।

५.२.२ अँग्रेजी तथा हिंदी मे समान अक्षर

५.२.२.१ एकाक्षरिक शब्द जिनमे ध्वनि सबधी कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ :

	अँग्रेजी	हिंदी	
Bill	[bıl]	बिल्	[bıl]
Boot	[bu t]	बूट्	[bu:ṭ]
Bag	[bæ g]	बैग्	[be g]
Bank	[bæn,k]	बैंक	[be:n,k]
Lamp	[læmp]	लंप्-लैंप्	[ləmp–le.mp]
Rail	[reıl]	रेल्[1]	[re·l]
Coat	[kout]	कोट्[2]	[ko.t]

५.२.२.२ एकाक्षरिक शब्द जिनमे ध्वनि संबंधी विशेष परिवर्तन हुआ :

Brush	[brʌʃ]	ब्रुश्[3]	[bıuʃ]
Lord	[lɔ.d]	लाट्	[la.ṭ]

५.२.२.३ द्व्याक्षरात्मक शब्द जिनमे ध्वनि संबंधी कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ :

Baby	['beıbı]	बेबी	[be:bı:]
Hockey	['hɔkı]	हाकी	[ha:ki:]
Engine	['endzın]	इंजन्	[ınjan]
Control	[kən:troul]	कंट्रोल्	[kəntro:ḷ]

५.२.२.४ जिनमें ध्वनि संबंधी विशेष परिवर्तन हुए हैं :

Lantern	['læntən]	लाल्टेन्[4]	['la:lṭe·n]

---

१. अँग्रेजी । ei–एइ । संध्यक्षर स्वर के स्थान पर हिंदी में सर्वत्र । e :–ए । हो जाता है, जैसे, रेल्, मेल्, फेल्, फ्रेम्, जेल्, गेम्, केक्, लेट् आदि।

२. अँग्रेजी (ou–ओउ) संध्यक्षर स्वर के स्थान पर सर्वत्र हिंदी में । o :–ओ । हो गया है, जैसे, गोल्, बोट्, कोट्, कोड् ।

३. 'बुरुश्' रुप भी चलता हैं जो एकाक्षरिक के स्थान पर द्व्याक्षरिक हो गया है ।

४. 'लाल्टेन' शब्द में कई प्रकार के ध्वन्यात्मक परिवर्तन हुए हैं ।

५.२.२.५ त्र्यक्षरात्मक शब्द :

Advocate	[ˈædvəkeɪt]	एडवोकेट्	[e dvo:ke:t]
Arrowroot	[ˈærəru:t]	अरारोट्	[əra:ro:t]

५.२.३ असमान अक्षर

५.२.३.१ एकाक्षरिक शब्द हिंदी मे द्व्याक्षरिक बन गए हैं :

५.२.३.१.१ वे अँग्रेजी शब्द जिनमे । aɪ अथवा au । संध्यक्षर है । हिंदी में संध्यक्षर स्वरानुक्रम (स्वर संयोग) मे बदल गए हैं :

File	[faɪl]	फाइल्	[pha:il]
Fine	[faɪn]	फाइन्	[pha:in]
Down	[daun]	डाउन्	[da:un]

५.२.३.१.२ वेशब्द जिनमे व्यंजन गुच्छ टूट जाने से आदि स्थिति मे परिवर्तन हो जाता है :

Glass	[gla:ss]	गिलास्[1]	[gɪla:s]
School	[sku:l]	स्कूल	[ɪsku:l]

५.२.३.१.३ विवृत एकाक्षरीय से संवृत एकाक्षरीय बन गए हैं :

Bar	[ba:]	बार	[ba:r]

५.२.३.२ द्व्यक्षरात्मक :

५.२.३.२.१ अँग्रेजी के आक्षरिक व्यंजन का हिंदी मे स्वर युक्त उच्चारण हो जाने से :

Double	[dʌbl̩]	डबल	[dabəl]

५.२.३.२.२ अंतिम विवृताक्षर के संवृताक्षर में परिवर्तित हो जाने से :

Doctor	[dɔktə]	डाक्टर	[da:ktər]
Motor	[moutə]	मोटर	[mo:tər]

५.२.३.२ ३ द्व्यक्षरी शब्द हिंदी में त्र्यक्षरी शब्द हो गए :

५.२.३.२.३.१ व्यंजन गुच्छ टूट जाने के कारण :

Station	[steɪʃən]	स्टेशन्[2]	[ɪste ʃən]

५.२.३.२.३.२ संध्यक्षर के स्वरानुक्रम मे बदल जाने के कारण :

Fountain	[fauntin]	फाउंटेन्	[pha:unte:n]

---

१. हिंदी में 'ग्ल' व्यजन गुच्छ प्राप्त है पर इसका एक ही उदाहरण है—'ग्लानि' सस्कृत शब्द, जिसका भी शुद्ध उच्चारण कम सुनाई देता है प्रायः 'गिलानी' सुनाई पड़ता है ।

२. पंजाबी से प्रभावित उच्चारण 'सटेशन' भी है जिसमें भी तीन ही अक्षर हैं ।

५.२.३.३ त्र्यक्षरी शब्दों का चतुरक्षरी में बदल जाना :

५.२.३.३.१ आक्षिरक व्यंजन के हिंदी मे न रहने के कारण :

Bicycle	['baisikl]	बाइसिकिल्	[ba:isikil]

५.२.३.३.२ व्यजन गुच्छ के टूट जाने पर :

Ammonia	[ə'mounjə]	अमोनिया	[əmo:nija:]

५.२ ३.३ ३ सध्यक्षर के स्थान पर स्वरानुक्रम होने के कारण :

Engineer	[,əndzɪnɪə]	इंजीनियर्[1]	[ɪnjɪ:nɪar]

५.२.३.४ अँग्रेजी के त्र्यक्षरी शब्द हिंदी मे द्वयक्षरी[2] ही रह गये :

Opera	['ɔpərə] ×,	ओप्रा	[o:pra:]
Cigerriette	[sɪgəret] ×	सिग्रेट्	[sɪgre:t]
Factory	['fækt∂rɪ] ×	फैक्ट्री	[phe ktrɪ]
Company	['kʌmpənɪ] ×	कंपनी	[kəmpnɪ]
Pantaloon	[pæntə'lu:n] ×	पतलून्	[pətlu:n]
Battory	['bætərɪ] ×	बैट्री	[bE:trɪ :]
Chocolate	['tʃɔkəlɪt] ×	चाक्लेट्	[ca:kle:t.]
Italy	['ɪtəlɪ] ×	इट्ली	[ɪtlɪ.]

५.२.३.५ अँग्रेजी के चतुरक्षरी शब्द हिंदी में त्र्यक्षरी रह गये है .

Honorary	['ɔnərərɪ] ×	आन्रेरी	[a.nre rɪ:]

१.—य श्रुति का आगम हो गया है।

२. हिंदी की प्रकृति है कि दीर्घ स्वरांत अक्षर में उपांत्य स्वर का लोप हो जाता है :

बकरा—उच्चरित रूप बक्रा

करना — करना

इस प्रकार के अन्य स्थलों पर स्वर लोप का विवरण तथा विवेचन अध्याय दो में किया गया है।

अक्षरो के ह्रास का मुख्य कारण हिंदी की प्रकृति के अनुसार विशिष्ट परिस्थितियो मे 'अ' स्वर का लोप ही है।

---

gl	Bugle	[bju gl]	बिगुल्
dl	Middle	[mɪdl]	मिडिल्
	Bundle	[bʌndl]	बंडल्
fl	Rifle	[raɪfl]	राइफल्
nl	Final	[faɪnl]	फाइनल्
bl	Double	[dʌbl]	डबल
nl	Colonel	[kə nl]	कर्नल्
sl	Pensil	[pensl]	पेन्सिल्

इस आधार पर सामान्यतः यह नियम बनता है हिंदी में अँग्रेजी के आक्षरिक व्यजन को सामान्यतः । अ । स्वर और । इ । स्वर के आगम के साथ बदल लेते हैं। केवल एक उदाहरण 'बिगुल' मे । उ । स्वर का आगम है।

अध्याय ६

व्याकरणिक रूपमात्र और अक्षर

अध्याय ६

व्याकरणिक रूपमात्र और अक्षर

६.० किसी भी मूल पद अथवा धातु मे विभक्ति प्रत्यय (पूर्व, मध्य तथा पर) जोड़कर नवीन व्युत्पादित शब्दो का निर्माण किया जा सकता है। ऐसी व्युत्पादित शब्दावली मे यह आवश्यक नहीं कि जिस अक्षरात्मक साँचे का प्रत्यय जोड़ा जाय वह पृथक् से अपना अक्षरात्मक स्वरूप भी बनाये रहे।

इस अध्याय के प्रारंभ मे संज्ञा शब्दो से बने बहुवचन रूपो का विश्लेषण है। द्वितीय भाग मे विभिन्न अक्षरात्मक साँचो की धातुओ मे कृदंतीय रूप मात्रो के जुड़ने से प्राप्त व्युत्पादित शब्दों का अक्षरात्मक विश्लेषण है। तृतीय भाग मे मुक्त पद रूपो मे विभिन्न अक्षरात्मक साँचो के आबद्ध रूप जुड़ने से प्राप्त व्युत्पादित शब्दों का अक्षरात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। आबद्ध रूप मात्रो को भी सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया गया है प्रथम भाग मे संज्ञाओ, विशेषणो आदि में लगनेवाले प्रत्ययों का अध्ययन है और द्वितीय भाग में धातुओ मे जुड़नेवाले प्रत्ययों का विश्लेषण और अक्षरात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

६.१ संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप तथा अक्षरात्मक विश्लेषण

हिंदी के संज्ञा शब्दों के बहुवचन बनानेवाले रूपमात्रो के अध्ययन का आधार हिंदी में प्राप्त व्याकरण की पुस्तको से इतर मेरा अपना[1] तथा अपने निकट-तम साथी श्री रमेशचन्द्र मेहरोत्रा का निबंध हिंदी संज्ञा के दस रूप[2] रहा है।

---

१. पी-एच० डी० थीसिस–हिंदी में अंग्रेजी आगत शब्दों का भाषातात्त्विक अध्ययन, आगरा–१९५८, पृ० १७८-८०।

२. हिंदी संज्ञा के दस या ग्यारह रूप–भाषा, जून १९६२, पृ० ६७ से ७२।

६.१.१ पुल्लिग

६.१.१.१ व्यंजनान्त

			विकृत रूप बहुवचन		बहुवचन का आक्षरिक स्वरूप
हअह	फल्		हअह + ओं	फल् + ओं	= फलों हअ-हआँ[1]

६.१.१.२ स्वरान्त

६.१.१.२.१ आकारांत

६.१.१.२.१.१ मूल रूप बहुवचन

हआ—हआ	ताला	हआ—हआ[1] + आ—ए	ताला + आ—ए	= ताले हआ—हआ[2]
	घोड़ा	हआ—हआ + आ—ए	घोड़ा + आ—ए	= घोड़े
हअह—हआ	लड़का	हअह—हआ[2] + आ—ए	लड़का + आ—ए	= लड़के हअह—हआ[2]
	चूल्हा		चूल्हा + आ—ए	= चूल्हे

विकृत रूप बहुवचन

हआ – हआ	ताला	हआ – हआ[3] + आ–ओं	ताला + आ–ओं	= तालों हआ – हआँ[3]
	घोड़ा		घोड़ा + आ–ओं	= घोड़ों
हअह – हआ	लड़का	हअह – हआ[2] + आ–ओं	लड़का + आ–ओं	= लड़कों हअह – हआँ[2]
	कुल्हा		कुल्हा + आ–ओं	= कुल्हों

---

१. व्यजनांत पुल्लिग शब्दों के बहुवचन में ।—ओं । जुड़ने से मूल शब्द के एकाक्षरिक रूप में एक अक्षर की वृद्धि हो जाती है, जैसे फल = १, फलों = २ इसी प्रकार सिर्, जड़् । द्वयक्षरात्मक शब्द वैसे ही बने रहते हैं, खबर = २ खबर =
व्यक्षरात्मक— समाचार = ३ समाचारों = ४

२. मूल शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूपों के अक्षरात्मक स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है ।

३. मूल शब्द के एक वचन तथा बहुवचन रूपों के अक्षरात्मक स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, केवल अंतिम अक्षर में अनुनासिकता आ जाती है ।

६. १. १. २. ८ ईकारान्त

हअा + हअा	हाथी धोबी	हअा–हअा + (अन्तिम स्वर ह्रस्व) + ओ	हाथी + ओ = हाथियो[1] धोबी + ओ = धोबियों	=	हअा–हअ–हअाँ[2]

६. १. १. २. ९ ऊकारान्त

हअा–हअा	भालू गेरू	हअा–हअा + (अन्तिम स्वर ह्रस्व) + ओ	भालू + ओ = भालुओ गेरू + ओं = गेरुओ	=	हअा–हअ–हअाँ[3]

६. १. २ स्त्रीलिंग

६. १. २. १ व्यजनान्त

		मूल रूप बहुवचन			बहुवचन	बहुवचन का आक्षरिक स्वरूप
हअाह	रात्	हअाह + अॉ	रात् + एँ	=	रातें	हअा—हअाँ[4]
	चील्		चील् + एँ	=	चीलें	
	बात्		बात् + एँ	=	बातें	
			विकृत रूप बहुवचन			
	बात्	हअाह + अॉ	बात् + ओ	=	बातो	

६. १. २. २ स्वरान्त

२. २. १ आकारान्त

२. २. १ १

		मूल रूप बहुवचन				
हअा–हअा	माता	हअा–हअा + अॉ	माता + एँ	=	माताएँ	हअा—हअा—अाँ[5]

१. स्वचालित—य श्रुति आ गई है।

२. अन्त में। ह आँ। स्वरूप का एक अक्षर बढ़ जाता है और उसके पूर्व का स्वर ह्रस्व हो जाता है।

३. अन्त में। हआँ। स्वरूप का एक अक्षर बढ़ जाता है और उसके पूर्व का स्वर ह्रस्व हो जाता है।

४. अक्षरात्मक स्वरूप में धातु परिवर्तन हुआ है। एकाक्षरीय स्वरूप द्वयक्षरीय बन गया, साथ ही अन्त में अनुनासिकता भी है।

५. अक्षरात्मक साँचे में कोई परिवतन नहीं हुआ है केवल बहुवचन प्रत्यय। आँ। बढ़ गया है।

६. १. २. २. ४ इकारान्त

२. २. ४ १ मूल रूप बहुवचन

हश्रा—हश्र जाति   हश्रा - हश्र + श्राँ = जाति + श्राँ—एँ   = जातिएँ[2] = हश्रा—हश्र—श्राँ

२. २. ४. २ विकृत रूप बहुवचन

हश्रा—हश्र जाति   हश्रा—हश्र + श्राँ = जाति + श्रों = जातिश्रो[1]   = हश्रा—हश्र = श्राँ

६. १. २ २. ५ एकारान्त तथा ऐकारान्त

२ २ ५. १ एकारान्त

हश्रा—हश्रा बेबे   हश्रा—हश्रा + श्राँ = बे बे + श्रो = बेबेश्रो[2]   = हश्रा—हश्रा—श्राँ

२. २. ५. २ ऐकारान्त

हश्रा   कै   हश्रा + श्राँ = कै + श्रो = कैश्रों   = हश्रा—श्राँ

६. १. २. २. ६ ओकारान्त

स्त्रीलिंग मे यह रूप बहुत कम हैं।

६ १. २. २. ७ ऊकारान्त

२. २. ७. १ मूल रूप बहुवचन

हश्र–हश्रा   बहू हश्र–हश्रा + (श्रंतिम स्वर) + एँ = बहू + एँ = बहुएँ   = हश्र–हश्र–श्राँ
(हृस्व)

२. २. ७. ३ विकृत रूप बहुवचन

हश्र–हश्रा   वधू हश्र–हश्रा + (श्रंतिम स्वर) + श्रो = वधू + श्रो = वधुश्रों   = हश्र–हश्र–श्राँ
(हृस्व)

१—इ स्वर के कारण स्वचालित—य श्रुति आजाती है।

२—कम प्रयुक्त हैं।

	धन्धा	धन्-धा	२	धन्धो	धम्—धो	२
६.१.३.१.२						
	काँटा	काँ—टा	२	काँटे	काँ—टे	२
				काँटों	काँ—टो	२
६.१.३.१.३						
	पुआ	पु—आ	२	पुए	पु—ए	२
				पुओं	पु—ओं	२
६.१.३.१.४						
	हीरा	ही— रा	२	हीरे	ही—रे	२
				हीरो	ही—रों	२
६.१ ३.१.५						
	टोकरा	टोक्—रा	२	टोकरो	टोक्—रों	२
६.१.३.१.६						
	मसाला	म—सा—ला	३	मसालो	म—सा—लों	३
	थपेड़ा	थ—पे-ड़ा	३	थपेड़ों	थ—पे-ड़ों	३
६.१.३.१.७						
	ढकोसला	ढ—कोस्—ला	३	ढकोसलों	ढ—कोस्—लों	३
६.१.३.१.८						
	सरकंडा	सर्-कन्—डा	३	सरकंडो	सर्-कन्—डों	३

६.१.३.२. जहाँ एकवचन से बहुवचन हो जाने पर अक्षर संख्या में तो कोई परिवर्तन नहीं होता पर अक्षर सीमा बदल जाती है :

फसल	फ—सल्	२	फसलो	फस्—लो	२
लहर	ल—हर्	२	लहरो	लह्—रो	२
वानर	वा—नर्	२	वानरो	वान्—रो	२
बालक	बा—लक्	२	बालको	बाल्—को	२
इमारत	इ—मा—रत्	३	इमारते	इ-मार्—तें	३

६.१.३.३

जहाँ अक्षर संख्या में वृद्धि हो जाती है और अंतिम अक्षर का स्वरूप भी बदल जाता है :

६.१३.३.१ एकाक्षरात्मक

एकवचन	अक्षर संख्या	बहुवचन	अक्षर संख्या
और्	१	औ—रों	२
आठ्	१	आ—ठो	२

	अंग्	१	अं—गो	२
	आँत्	१	आँ—तो	२
	आँख्	१	आँ—खो	२
६. १. ३. ३. १. २				
	सिर्	१	सि—रों	२
	छत्	१	छ—तो	२
	गुण्	१	गु - णो	२
६. १. ३. ३. १. ३				
	बैल्	१	बै—लो	२
	छेद्	१	छे—दो	२
६. १ ३ ३. १. ४				
	दाँत्	१	दाँ—तो	२
६. १. ३. ३. १. ५				
	यन्त्र्	१	यन्—त्रो	२
६. १. ३. ३. १. ६				
	ग्रन्थ्	१	ग्रन् - थो	२
६. १. ३. ३. २ द्व्यक्षरात्मक				
६. १. ३ ३. २. १	दरार्	२	द—रा—रों	३
	विदेश्	२	वि—दे—शो	३
६. १. ३. ३. २. २	बाजार्	२	बा—जा—रो	३
	दीवार्	२	दी—वा—रो	३
६. १. ३. ३. २. ३	बाद्शाह्	२	बाद्—शा—हो	३
६. १. ३. ३. २. ४	मज्—दूर	२	मज्—दू—रो	३
	मल्लाह्	२	मल्—ला—हो	३
६. १. ३. ३. २. ५	लीला	२	ली—ला—ओ	३
६. १. ३. ३. २. ६	मुर्—गी	२	मुर्—गि—ओं	३
	मछ्—ली	२	मछ्—लि—ओं	३
६. १. ३. ३. २. ७	दर्शक्	२	दर्—श—को	३
	पूर्वज्	२	पूर्—व—जो	३
६. १. ३. ३. ३ त्र्यक्षरात्मक				
	उपासक्	३	उ—पा—स—को ४ उ—पास्—कों रूप भी सुनाई देता है।	

लड़ाई	३	ल–ड़ा–इ–यो	४
निवासी	३	नि–वा–सि–यो	४
कारीगर	३	का–री–ग–रो	४

६. १. ३. ३. ४ चतुरक्षरात्मक

६. १. ३. ४. १ अधिकारी ४ अ–धि–का- रि–यो ५

६. २. धातुओं के कृदंतीय रूप

६. २. १ एकाक्षरी धातुएँ

६. २. १. १ धातु । आ । साँचा

धातु + प्रत्यय आक्षरिक साँचा

आ + हआ = आ—हआ

आ + ना = आ—ना

आ + ता = आ—ता

आ + हअह = आ—हअह

आ + वत् = आ—वत्

आ + वन् = आ—वन्

६. २. १. २ धातु । अह । साँचा

उदाहरण जैसे उग्, उड़्, अड़्, अट्, उब् आदि धातुएँ

अह + आ = अ—हआ

उग् + आ=उ-गा नोट—स्त्रीलिंग में, उगी

उड़् + आ=उ-ड़ा

अड़् + आ=अ–ड़ा

अह + हआ = अह—हआ

अट् + ना = अट्—ना

अड़् + ता = अड़्—ता

उग् + ता = उग्—ता नोट—स्त्रीलिंग में 'उगती'

अह + अह = अ—हअह

उग् + अत् = उ—गत्

उड़् + अन् = उ—ड़न्

उब् + अन् = उ—बन्

अह + आह = अ—हआह

उड़् + आस = उ—ड़ास्

उब् + आस = उ—बास्

६. २. १. ३ धातु । ह्आ साँचा

खा, गा, जा, ता, पा, दे, ले, बो, लो, सो आदि

ह्आ + आ = ह्आ—आ

खा + ऊ = खा—ऊ

ह्आ + आह् = हह्आह

पी + आस् = प्यास्   ई + आ मे संधि होने के कारण य—श्रुति

इसी 'ह्आ' साँचे से खाना, बोना, देना आदि रूप भी बनते हैं।

६. २. १. ४. बहुप्रयुक्त 'ह्अह' 'धातु-साँचा' तथा उससे व्युत्पन्न शब्द

हिंदी में बहुप्रयुक्त धातुओ के साँचो में 'ह अ ह'[1] साँचा आता है। स्वर की दृष्टि से 'ह अ ह' साँचे के भी तीन भाग कर सकते हैं :

अ—स्वर[2] के साथ—कट्, कस्, कह, चख्, चढ़्, जप्, जम्, फट् बन् आदि।

इ—स्वर के साथ—खिल्, गिर्, घिस्, चिढ्, छिप्, पिट्, पिस्, फिर्, हिट्, आदि

उ—स्वर के साथ—खुल्, घुल् घुस्, चुग्, घुन्, जुट, भुन्, मुड़, आदि। इस प्रकार की धातुओ मे निम्नलिखित साँचो के पर प्रत्यय जुड़ सकते हैं :

१. 'अह' साँचा[3]

इससे सामान्यतः भाववाचक तथा कभी कभी अन्य संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं

---

१. 'ह अ ह' में 'ह' व्यंजन तथा अ ' स्वर का द्योतक है इस प्रकार 'ह अ ह' साँचे से तात्पर्य हुआ वह धातु-साँचा जिसके प्रारंभ में व्यंजन फिर कोई ह्रस्व स्वर तथा अंत में व्यंजन हो।

२. इस प्रकार की अन्य धातुओं की सूची इस प्रकार हैं:—
कर्, खट्, खन्, खप्, गढ़्, गड़्, गह्, घट् चट्, चब्, चर्, चल, छक्, छन्, छल्, आदि की लंबी सूची है।

३. 'अह' साँचे से तात्पर्य हुआ जिसके आरंभ में स्वर तथा बाद में व्यंजन हो जैसे, अक्।

इस साँचे मे भाववाचक[1] बनाने के लिये निम्नलिखित व्युत्पादक प्रत्यय आते हैं:—

—अक्
—अत्
—अन्

धातु साँचा		प्रत्यय साँचा		परिवर्तित साँचा				
ह्अह	+	अह	=	ह्अ—ह्अह				
कस्	+	अक्	=	कसक्	=	क	—	सक्
फट्	+	अक्	=	फटक्	=	फ	—	टक्
बच्	+	अत्	=	बचत्	=	ब	—	चत्
खप्	+	अत्	=	खपत्	=	ख	—	पत्
जल्	+	अन्	=	जलन्	=	ज	—	लन्
रह	+	अन्	=	रहन्	=	र	—	हन्

२. 'अहह साँचा'

'अहह' साचे का प्रयोग भाववाचक सज्ञा के लिये किया जाता है ।

ह्अह	+	अहह	=	ह्अ—ह्अहह
पढ्	+	अन्त्	=	पढ़न्त
लड्	+	अन्त्	=	लड़न्त
भिड़्	+	अन्त्	=	भिड़न्त

३. 'आ साँचा'

'आ' साचे के अंतर्गत मुख्यतः निम्नलिखित दो प्रत्यय आते हैं जिनके योग से 'विशेषण' रूप व्युत्पन्न होते हैं : —

—आ
—ई[2]

ह्अह	+	आ	=	ह्अ - ह्आ				
कट्	+	आ	=	कटा	=	क	—	टा
पिट्	+	आ	=	पिटा	=	पि	—	टा
फट्	+	ई	=	फटी	=	फ	—	टी
कस्	+	ई	=	कसी	=	क	—	सी

१. अ यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भाववाचक बनाने के लिये 'शून्य' प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है जिसके अनुसार मूल धातु रूप ही भाववाचक रूप बन जाता है, जैसे अ—स्वर वाले तप्, डर्, ठग्

१ ब इ—स्वर वाले—मिल्, लिख् के स्वर में गुणभेद होकर 'मेल', 'लेख' हो जाता है ।

उ—स्वर वाले—झुक् के स्वर में गुणभेद होकर 'झोक' हो जाता है ।

२. मूल प्रत्यय 'आ' स्वीकार किया जा सकता है और 'स्त्रीलिंग' रूप देने के लिये —'ई' प्रत्यय ।

४. 'आह' साँचा

'आह' साँचे के योग से भी प्रायः भाववाचक संज्ञा के रूप बनते हैं। इस साँचे के अंतर्गत निम्नलिखित प्रत्यय ले सकते हैं :

—आक्
—आन्
—आप्
—आम्
—आव्
—आस्
—एज्
—ऐत्
—ऐल्
—ओर्
—ओड़्

ह अ ह + आह = हअ—हआह

फिर् + आक् = फिराक् = फि— राक्
मिल् + आन् = मिलान् = मि— लान्
थक् + आन् = थकान् = थ - कान्
मिल् + आप् = मिलाप् = मि — लाप्
धड़् + आम् = धडाम् = ध — ड़ाम्
गिर् + आव् = गिराव् = गि — राव्
झुक् + आव् = झुकाव् = झु — काव्
छुप् + आस् = छुपास् = छु — पास्
घर् + एज् = घरेज् = घ — रेज[1]
लड़् + ऐत् = लड़ैत्[2] = ल — ड़ैत्
खेल् + ऐल् = खेलैल् = ख — खैल्
हिल् + ओर = हिलोर = हि — लोर्
भग् + ओड़् = भगोड़् = भ — गोड़्

---

१. प्रायः—'आ' प्रत्ययांत बनाकर 'घरेजा' प्रयुक्त होता है।
२. ये भाववाचक संज्ञाएँ विशेषण भी हैं।
३. भाववाचक रूप नहीं है, उसको ही विशेषण बनाने के लिये 'अ' प्रत्ययांत बना लिया जाता है। भगोड़ा।

५. 'ह्आ' साँचा

इस साँचे से भाववाचक संज्ञाएँ प्रायः बनती हैं इस साँचे मे निम्नलिखित प्रत्यय आते हैं :

—का

—की

—गू (केवल ग् से अंत होने वाली धातुओं मे विशेषण बनाने के लिए)

—ती

—ना

—नी

ह् अ ह्	+	ह्आ	=	ह्अह्—ह्आ		
ठस्	+	का	=	ठस्का	=	ठस् — का
फट्	+	का	=	फट्का	=	फट् — का
झप्	+	का	=	झप्का	=	झप् — का
बक्	+	की	=	बक्की	=	बक् — की
धम्	+	की	=	धम्की	=	धम् — की
भग्	+	गू	=	भग्गू	=	भग् — गू
लग्	+	गू	=	लग्गू	=	लग् — गू
बस्	+	ती	=	बस्ती	=	बस् — ती
कट्	+	ती	=	कट्ती	=	कट् — ती
गिन्	+	ती	=	गिन्ती	=	गिन् — ती
झर्	+	ना	=	झर्ना	=	झर् — ना
रच्	+	ना	=	रच्ना	=	रच — ना
ढक्	+	ना	=	ढकना	=	ढक् — ना
कर्	+	नी	=	कर्नी	=	कर् — नी
कह	+	नी	=	कहनी	=	कह — नी
मिल्	+	नी	=	मिल्नी	=	मिल् — नी
छट्	+	नी	=	छट्नी	=	छट् — नी

६. 'ह्आह' साँचा

ह्अह्	+	ह्आह्	=	ह्अह्—ह्आह्
कर्	+	तूत	=	कर्तूत्

७. 'आ-आ' साँचा

प्रायः भाववाचक बनाने के लिये इस प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसके अंतर्गत दो प्रत्यय आते हैं :

—आई

—आऊ

हअह + आ-आ = हअ—हआ—आ

पढ़् + आई = पढाई = प - ढा - ई

लिख् + आई = लिखाई = लि- खा - ई

धुल् + आई = धुलाई = धु - ला - ई

चर् + आई = चराई = च - रा - ई

विशेषण बनाने के लिये 'आऊ' प्रत्यय

बिक् + आऊ = बिकाऊ = बि - का - ऊ 'विशेषण रूप'

टिक् + आऊ = टिकाऊ = टि - का - ऊ 'विशेषण रूप'

८ 'आ-हअह' साँचा

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक बनाए जाते हैं। इसमे निम्न-लिखित प्रत्यय आते हैं :

—आवट्

—आवत्

—आवन्

—ओहर्

—औवल्

हअह + आ—हअह = हअ—हआ—हअह

लिख् + आवट = लिखावट् = लि - खा - वट्

दिख् + आवट = दिखावट् = दि - खा - वट्

कह + आवत् = कहावत् = क - हा - वत्

बिछ् + आवन् = बिछावन् = बि - छा - वन्

धर् + ओहर = धरोहर् = ध - रो - हर

बुझ् + औवल् = बुझौवल् = बु - झौ - वल्

६. 'आ-हआ' साँचा

एक प्रकार से 'आह' साँचे को ही जब दीर्घ स्वरात बनाते हैं तो इस प्रकार के शब्दो की सिद्धि होती है जैसे पट् + आक् = पटाक से 'पटाक् + आ = पटाका।

फिर भी इस साँचे में आकू (विशेषण के लिये), आनी (संज्ञा बनाने के लिये) आवा (भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये) मुख्य हैं।

हअह + आ-हआ = हअ-हआ-हआ

लड़् + आकु = लड़ाकू = ल - ड़ा - कू

कह् + आनी = कहानी = क - हा - नी

बुल् + आवा = बुलावा = बु - ला - वा

बढ़् + आवा = बढ़ावा = ब - ढा - वा

इसके अंतर्गत ही एजा (धरेजा), एरा (बसेरा), ओड़ा (भगोड़ा, औटी (कसौटी), औती (कटौती) औना (बिछौना), औनी (मिचौनी) आदि अन्य प्रत्यय आते हैं।

भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये कुछ बहुप्रयुक्त प्रत्यय इस प्रकार हैं :—

—आइँद्

सड़ + आइँद = सड़ाइँद

—वाई

पिस् + वाई = पिसवाई 'पिसाई' के स्थान पर दूसरा शब्द।

हिंदी के बहुप्रयुक्त इस साँचे से हम सहस्रों शब्दो का निर्माण कर सकते हैं।

६. २. १. ५ धातु। हआह। साँचा

काट्, खेल्, खोज्, गोद्, घूर्, चाट्, चाब्, चीख्, छील्, छूट् जाग्; जूझ्, जोड़्, झाड़्, टाल्, दीख्, नाच्, फाड़्, भीग्, भूल्, मान्, लूट्, सीख्, सूज्, सोच्, हार् आदि।

हआह + हआ = हआह—हआ

काट् + ना = काट्—ना

खोज् + ना = खोज्—ना

चीख् + ना = चीख्—ना

हार् + ना = हार - ना

हआह + अह = हआ—हअह

खेल् + अत् = खे — लत्

छील् + अत् = छी — लत्

जाग् + अत् = जा — गत्

नाच् + अत् = ना — चत्

खोज् + अन् = खो — जन्

झाड़् + अन् = झा — ड़न्

सूज् + अन् = सू — जन्

हआह + आ = हआ—हआ

काट् + आ = का — टा
छील् + आ = छी — ला
दीख् + आ = दी — खा
लूट् + आ = लू — टा

हआह + हआ = हआ — हआ

काट् + टू = का — टू
चाट् + टू = चा — टू

नोट:—केवल 'ऊ' मात्र भी माना जा सकता है।

हआह + आ-आ = हअ — हआ — आ

काट् + आई = क — टा — ई
गोद् + आई = गु — दा — ई
जाग् + आई = ज — गा — ई
मान् + आई = म — ना — ई

नोट :—प्रथम अक्षर का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो गया है। स्वर में गुण भेद भी है

हआह + आ — हअह = हअ — हआ — हअह

साज् + आवट = स-जा — वट् (प्रथम स्वर ह्रस्व हो गया है)
दीख् + आवट = दि-खा — वट्

६. २. २ द्व्यक्षरी धातु

६. २. २. १ 'अ-हअह' साँचा धातु

अकड़्, अटक्, अरक्, उखड़्, उगल्, उधड़्, उचक्, उछल्, उचक्, उतर्, उपज् आदि।

अ-हअह + हआ = अ-हअह—हआ

अकड़् + ना = अ — कड़् — ना
उगल् + ना = उ — गल् — ना
उछल् + ना = उ — छल् — ना
उतर् + ना = उ — तर् — ना

अ - हअह + आ = अह — हआ

अटक् + आ = अट् — का
उछल् + आ = उछ् — ला
उतर् + आ = उत् — रा
उपज् + आ = उप् — जा

अ – हअह + आ – आ = अह – हआ – आ

उतर् + आई = उत् — रा — ई

अटक् + आई = अट् — का — ई

उपज् + आई = उप् — जा — ई

उपज् + आऊ = उप् — जा — ऊ

अ – हअह + आ – हआ – अह — हआ — हआ

उपज् + आना – उप् — जा — ना

अटक् + आना = अट् — का — ना

उचक् + आना = उच् — का — ना

६. २. २. २। हअ – हअह। साँचा धातु

कतर् कुहक्, छिटक्, ठहर्, टपक्, निकल्, झुलस्, फिसल, जिछुड़्, महक्, रगड़्, बिसर्, सिमिट्, बिचक् आदि

हअ—हअह + हआ – हअ—हअह—हआ

कतर् + ना = क — तर् — ना

छिटक् + ना = छि — टक् — ना

बिछुड़् + ना = बि — छुड़् — ना

कुहक् + ना = कु — हक् — ना

स्त्रीलिंग के रूप

निकल् + ती = नि—कल् — ती

बिचक् + ती = बि — चक् — ती

सिमिट् + ती = सि — मिट् — ती

महक् + ती = म — हक् — ती

हअ — हअह + आ — हआ = हअह — हआ — हआ

कतर् + आना = कत् — रा — ना

छिटक् + आना = छिट् — का — ना

बिसर् + आना = बिस् — रा — ना

महक् + आना = मह् — का — ना

ठहर् + आना = ठह् — रा — ना

बिसर् + आना = बिस् — रा — ना

हअ — हअह + आ — आ = हअह — हआ — आ

छिटक् + आई = छिट् — का — ई

ठहर् + आई = ठह् — रा — ई
बिसर् + आई = बिस् — रा — ई
ठहर् + आऊ = ठह् — रा — ऊ
बिसर् + आऊ = बिस् — रा — ऊ
टपक् + आऊ = टप् — का — ऊ

हअ — हअह + अह = हअह — हअह

छिटक् + अत् = छिट् — कत्
टपक् + अत् = टप् — कत्
महक् + अत् = मह् — कत्
फिसल् + अन् = फिस् — लन्
कतर् + अन् = कत् — रन्
झुलस् + अन् = झुल् — सन्

हअ — हअह + आ = हअह — हआ

ठहर् + आ = ठह् — रा
फिसल् + आ = फिस् — ला
रगड़् + आ = रग् — ड़ा

हअ — हअह + आह = हअह — हआह

ठहर् + आव = ठह् — राव्
फिसल् + आव = फिस् — लाव्
टपक् + आव = टप् — काव्
बिसर् + आव = बिस् — राव्

हअ — हअह + आ · हअह = हअह — हआ — हअह

ठहर् + आवट = ठह् — रा — वट
फिसल् + आवट = फिस् — ला — वट
टपक् + आवत् = टप् — का — वत्
झुलस् + आवत् = झुल् — सा — वत्
बिसर् + आवत् = बिस् — रा — वत्

६. २. २. ३ । हअ-हआह । साँचा धातु

घसीट्, दुलार्, बटोर्, पुकार्, विलोक्, लताड़्, विचार्, झकोर्, ढकेल्, खदेड़्, निचोड़् आदि ।

हअ—हआह + हआ = हअ—हआह—हआ

पुकार् + ना = पु—कार्—ना
घसीट् + ना = घ—सीट्—ना
ढकेल् + ना = ढ—केल्—ना
दुलार् + ना = दु—लार्—ना

हअ—हआह + आ-आ = हअह—हआ—आ

दुलार् + आई = दुल्—रा—ई

हअ—हआह + अह = हअ—हआ—हअह

बटोर् + अत् = ब—टो—रत्
पुकार् + अत् = पु—का—रत्
झकोर् + अन् = झ—को—रन्

हअ-हआह + आ = हअ—हआ—हआ

घसीट् + आ = घ—सी—टा
ढकेल् + आ = ढ—के—ला
निचोड़् + आ = नि—चो—ड़ा

६. २. २. ४ । हअ-हआ । साँचा धातु

कमा, लिवा, सता आदि ।

हअ—हआ + आ = हअ—हआ—आ

कमा + ऊ = क—मा—ऊ
लिवा + ऊ = लि—वा—ऊ
सता + ऊ = स — ता — ऊ

हअ—हआ + अह = हअ—हआह

नहा + अन् = न — हान्

६. २. २. ५ । हअह—हआ । साँचा धातु

पछ्ता, झुझ्ला, झुठ्ला, फुस्ला, दुल्रा, दुह्रा, आदि ।

हअह - हआ + आ —हअह = हअह —हआ—हअह

झुझ्ला + आहट = झुझ्—ला - हट्
फुस्ला + आहट = फुस् — ला—हट्
पछ्ता + आहट = पछ् — ता — हट्

हअह – हआ + आ—हआ=हअह-हआ—हआ

पछ्ता + आवा = पछ् — ता — वा
फुस्ला + आवा = फुस् – ला — वा

हअह-हआ + आ-आ=हअह-हआ-आ

पछ्ता + आई = पछ् – ता – ई
फुस्ला + आई = फुस् – ला– ई
दुह्रा + आई = दुह्—रा –ई

हअह—हआ + हआ=हअह—हआ—हआ

पछ्ता + ना = पछ्—ता—ना
दुल्रा + ना = दुल्—रा—ना
झुठ्ला + ना = झुठ्—ला—ना
दुह्रा + ना = दुह्—रा—ना

हअह — हआ + आह = हअह — हआह

पछ्ता + आव = पछ् – ताव्
दुल्रा + आव् = दुल् — राव्
फुस्ला + आव् = फुस् — लाव्

६ २ २ ६ । हअह–हआह । साँचा धातु

फुफ्कार्, दुत्कार्, लल्कार्, पुच्कार्,
झन्कार् आदि ।

हअह — हआह + हआ = हअह — हआह — हआ

फुफ्कार + ना = फुफ् — कार् — ना
दुत्कार् + ना = दुत् — कार — ना
लल्कार् + ना = लल् — कार् — ना

हअह — हआह + आ = हअह — हआ — हआ

लल्कार् + आ = लल् – का — रा
पुच्कार् + आ = पुच् — का — रा

हअह — हआह + अह = हअह — हआ — हअह

पुच्कार् + अत् = पुच् — का — रत्
दुत्कार् + अत् = दुत् — का — रत्

६. ३ मिश्र शब्द

६. ३. १. संज्ञा, विशेषणादि से व्युत्पादित मिश्र शब्द

६. ३ १. १. पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग)

६. ३. १. १. १. । अ । साँचा

अ[1]—

अ + हअह = अ — हअह
अ + काल् = अ — काल्
अ + चेत् = अ — चेत्
अ + छूत् = अ — छूत्
अ + थाह् = अ — थाह्
अ + हअ — हअह = अह — हअह
अ + समय् = अस् — मय्
अ + पलक् = अप् — लक्
अ + हअ — हअहह = अ — हअ — हअहह
अ + कलंक् = अ — क — लंक्

उ—

उ + हअह = अ — हअह
उ + थल् = उ — थल् + आ प्रत्यय के साथ—उथला
उ + हआँह = अ — हआँह
उ + नींद् = उ — नीद् + आ प्रत्यय के साथ—उनींदा

---

१. नोट १. यह पूर्व प्रत्यय हमेशा उन शब्दो के पूर्व ही लगता है, जिनके आरंभ में व्यंजन हो ॥

२. इस पूर्व प्रत्यय के लगने से पूर्व शब्द में कोई आक्षरिक परिवर्तन नहीं होता, केवल प्रारंभ मे एक मुक्त अक्षर बढ जाता है, जिसके फलस्वरूप यदि शब्द एकाक्षरिक है तो द्वयक्षरात्मक हो जाता है। द्वयक्षरी शब्दो के प्रथम व्यंजन को यह स्वर अपने में मिलाकर द्वयक्षरात्मक ही रखता है। ये उच्चारण विवादास्पद हैं।

३. पूर्व प्रत्यययुक्त शब्द के अंत में भी प्रत्यय लग सकता है, पर इस प्रत्यय के लगने से आक्षरिक साँचा बदल जाता है।

उदाहरणार्थ — अ — छूत् + आ प्रत्यय के साथ अ — छू — ता

औ—

औ + हअह = आ — हअह

औ + घट् = औ — घट्

औ + गुन् = औ — गुन्

औ + गढ् = औ — गढ्

औ + हअहह = आ — हअहह

औ + रंग् = औ — रङग् रंग का उच्चारण रङ् भी सुनाई देता है।

६. ३. १. १. २. । अह । साँचा

उन्—

उन् + हआह = अह — हआह

उन् + तीस = उन् — तीस

उन् + बीस = उन् —बीस । उन्नीस । ब का न में परिवर्तन देखिए।

अल्—

अल् + हअहह = अह — हअहह

अल् + मस्त् = अल् — मस्त् + ई = अल्—मस्ती

६. ३. १. १. ३ । हअ । साँचा

क—

क + हआह = हअ — हआह

क + पूत् = क — पूत्

ब—

ब + हआह = हअ — हआह

ब + तौर् = ब — तौर्

ब + नाम् = ब — नाम्

ब + खूब् = ब — खूब् + ई = बखूबी

ब + हअह — हआह = हअ — हअह — हआह

ब + दस्तूर् = ब — दस् — तूर्

स—

स + हअह = हअ — हअह

स + जल् = स — जल्

स + जन् = स — जन्

स + हआह = हअ — हआह

स + पूत् = स — पूत्
स + जीव् = स — जीव्
स + देह् = स — देह्

नोट : किसी भी शब्द के आदि में यह उपसर्ग लगकर 'सहित' वाचक अर्थ कर देता है,

जैसे, स—परिवार

कु—

कु + हआ— हआ = हअ — हआ — हआ
कु + घाती = कु — घा—ती
कु + नामी = कु — ना — मी

यह कु — हअह साँचे का ही — ई प्रत्यय के योग से प्राप्त रूप है।

दु—

दु + हअह = हअ—हअह
दु + बल् = दु—बल् + आ प्रत्यय से आबद्ध रूप—दु-ब-ला ही प्रयुक्त होता है।

दु + हआह = हअ—हआह

दु + काल् = दु — काल्
दु + राज् = दु — राज्

नि—

नि + हअह = हअ—हअह

नि + डर् = नि – डर्
नि + बल् = नि– बल्

नि + हआह = हअ—हआह

नि + पूत् = नि — पूत् आबद्ध रूप—आ के साथ ही प्रयुक्त निपू-ता और उसी का स्त्री लिंग रूप नि-पू-ती।

नि + हअहह = हअ-हअहह

नि + हत्थ (हाथ) = नि – हत्थ् आबद्ध रूप—आ के साथ ही प्रयुक्त—निहत्था
नि + कम्म (काम) = नि – कम्म् ,, ,, निकम्मा

सु—

सु + हअह = हअ—हअह

सु + दिन् = सु—दिन्

सु + घड़् = सु—घड़्

सु + हआह = हअ—हआह

सु + नाम् = सु – नाम्

सु + जान् = सु— जान्

६. ३. १. १. ४. । हआ । साँचा

बा–

बा + हआह-हआ = हआ-हआह-हआ

बा + कायदा = बा–काय्–दा

बे–

बे + हआह = हआ-हआह

बे + जान् = बे – जान्

बे + काम् = बे – काम्

बे + हअह = हअ-हअह

बे + शक् = बे-शक्

बे + हअ—हअह = हआ-हअ—हअह

बे + रहम् = बे – र – हम्

बे + खबर् = बे – ख–बर्

ला–

ला + हअ—हआह = हआ—हअ—हआह

ला + जवाब् = ला – ज – वाब्

ला– + अ—हआह = हआ-अ-हआह

ला + इलाज् = ला – इ – लाज्

ला + हआ—हअह = हआ—हआ-हअह

ला—वारिस् = ला — वा —रिस्

६. ३. १. १. ५. । हअह । साँचा ।

पर्—

पर् + हआ — हआ = हअह — हआ — हआ

पर् + नाना = पर् — ना — ना

पर् + बाबा = पर् — बा — बा

सर्—

सर् + ह्अह = ह्अह —ह्अह

सर् + हद् = सर् — हद्

सर् + ह्आह = ह्अह — ह्आह

सर् + नाम् = सर् — नाम्

सर् + ताज् = सर् — ताज्

सर् + ह्अहह = ह्अह — ह्अहह

सर् + पंच = सर् – पच

हम्—

हम् + ह्आह = ह्अह — ह्आह

हम् + राह् = हम् — राह् + ई प्रत्यय = हमराही

हम् + ह्अहह = ह्अह—ह्अहह

हम् + दर्द = हम् — दर्द

बर्—

बर् + ह्अ — ह्आह = ह्अह — ह्अ — ह्आह

बर् + करार् = बर् — क —रार्

बर् + खिलाफ् = बर् — खि — लाफ्

फ़िल्—

फिल् + ह्आह = ह्अह — ह्आह

फिल् + हाल् = फिल् — हाल्

सब्—

सब् + अ० शब्द = सब् — डिप्टी

= सब् — इन्सपेक्टर्

दर्—

दर् + अ — ह्अह = ह्अह — अ — ह्अह

दर् + असल् = दर् — अ — सल् आक्षरिक रूप दर— सल् भी हो जाता है।

६. ३. १. १. ६. अन्य उपसर्ग जो संस्कृत रूपों के साथ प्रयुक्त होते हैं :—

अभि—

अभि् + ह्अह = अ — ह्अ — ह्अह

अभि् + नव् = अ—भि्—नव्

अभि् + नय् = अ — भि्—नय्

अभि् + हअाह = अ — हअ —हअाह
अभि् + मान् = अ — भि् — मान्

अनु—

अनु + हअह = अ — हअ — हअह
अनु + भव् = अ – नु – भव्
अनु + नय् = अ—नु-नय्
अनु + हअाह = अ — हअ — हअाह
अनु + मान् = अ — नु — मान्
अनु + हअ — हअह = अ – हअ – हअ – हअह
अनु + करण् = अ – नु – क – रण्
अनु + गमन् = अ — नु — ग — मन्

६. ३. १. १. ७. वे शब्द जो स्वतत्र रूप से भी प्रयुक्त होते हैं। साथ ही पूर्व प्रत्यय की तरह भी किसी शब्द से जुटकर आते हैं—

। हअह ।

भर् — पेट्
हर् — चीज्
कम् — उम्र
खुश् — दिल्
बद् — चलन्

। हअाह ।

हाफ़ — हाफ़पेंट
हेड् — हेड पडित्, हेड् मास्टर्
गैर — गैर मुल्क

इसी कोटि मे अन्य शब्द भी आ सकते हैं।

६. ३. १. २. पर प्रत्यय

६. ३. १. २. १. । अह । साँचा

—अक्

हअह + अह = हअ — हअह
ठन् + अक् = ठ — नक्
ठम् + अक् = ठ — मक्
भन् + अक् = भ — नक्
कड् + अक् = क — ड्

हअाह + अह = हआ — हअह
पाट् + अक् = पा — ठक्
ढोल् + अक् = ढो — लक्
बैठ् + अक् = बै — ठक्
फाट् + अक् = फा — टक्

—अट्

हआह + अह = हआ — हअह
फोक् + अट् = फो — कट्

—अड़्

हआह + अह = हअह — हअह
पाग् + अड़ = पग् — गड़[1]
भूख् + अड़् = भुक्[2] — कड़्
हूल् + अड़् = हुल् — लड़्
भाँग् + अड़् = भग — अड़्
कीच् + अड़् = किच् — अड़् मेरठ में बोला जाता है। परिनिष्ठित रूप कीचड़ ही है।

—अत्

हआह + अह = हआ — हअह
शौक् + अत् = शौ — कत्
हअ — हआह + अह = हअ — हआ — हअह
खि - लाफ़् + अत् = खि - ला - फ़त्
ज़— रूर् + अत् = ज़ - रू — रत्

—अन्

हआह + अह = हआ — हअह
झूट् + अन् = झू - ठन्

—अर्

हअहह + अह = हअह — हअह
गट्ठ् + अर् = गट् - ठर्

—इन्

हअ - हआह + अह = हअ - हआ — हअह
चमार् + इन् = च—मा—रिन्
लुहार् + इन् = लु—हा—रिन्

---

१. प्रथम दीर्घ स्वर का ह्रस्व होकर अक्षर में द्वित्व आ जाना स्वाभाविक है जैसे पग्गड़।

२. ख का अल्पप्राणीकरण हो गया है।

हआ—हआ + अह = हआ – हअह
धोबी + इन् = धो–बिन्
हआह + अह = हआ—हअह
नाग् + इन् = ना—गिन्

६. ३. १. २. २. । आह । साँचा

—आक्

हअह + आह = हअ—हआह
धड़् + आक् = ध — ड़ाक्
धम् + आक् = ध — माक्
कड़् + आक् = क — ड़ाक्
हआह + आह = हआ—हआह
पोश् + आक् = पो — शाक्
तैर् + आक् = तै — राक्

—आड़्

हआह + आह = हअ—हआह
जोग् + आड़् = जु—गाड़् ओ—उ
लात् + आड़् = ल—ताड़् आ—अ
हआ– हआ + आह = हअ —हआह
पीछा + आड़् = पि—छाड़् ई—इ
आ–हआ + आह = अ–हआह
आगा + आड़् = अ— गाड़् आ—अ

—आत्

हआ—हअह + आह = हआह — हआह
का—गज् + आत् = काग् – जात्
हअ–हआ–हअह + आह = हअ–हआह–हआह
ज – वा – हर् + आत् = ज – वाह् – रात्
हअह–हआह + आह = हअह–हआ–हआह
तह् – फीक् + आत् = तह – फी — कात्

—आन्

हआह + आह = हआ — हआह
दौर् + आन् = दौ — रान्
हआ – हअह + आह = हआह — हआह
सा – हब् + आन् = साह् — बान्

—आम्

हअह + आह = हअ — हआह

धड़् + आम् = ध — डाम्

—आर्

हआह — आह = हअ — हआह

चाम् + आर = च — मार् आ — अ

लोह् + आर् = लो — हार, लुहार् ओ — उ[1]

सोन् + आर् = सु — नार् ओ — उ

हआँह + आह = हअँ — हआह

गाँव + आर = गँ — वार् ह्रस्वता आ गई है

हअहह + आह = हअ — हहआह

कुम्ह + आर् = कु — म्हार्

कुम् – हार भी सुना जाता है

हअहह + आह = हअह — हआह

भण्ड + आर् = भन् — डार् + ई प्रत्यय से 'भंडारी'

—आल्

हअ — हअह + आह = हअ — हअ — हआह

स — सुर् + आल् = स-सु-राल् सु स[2] राल

—आस्

हअह + आह = हअ — हआह

भड़् + आस् = भ — ड़ास्

मुँह + आस् = मुँ — हास् प्रथम स्वर

अनुनासिक है।

हआँह + आह् = हअँ – हआह

नींद् + आस् = निं — दास् प्रथम अक्षर के स्वर में

ह्रस्वता आ गई है –

हआ — हआ + आह् = हअ — हआह

मी — ठा + आस् = मि — ठास् ,, ,, ,, ,,

,, ,, ,, ,,

---

१. सामान्यतः ओ स्वर ह्रस्व 'उ' में परिवर्तित हो जाता है।

२ द्रुतगति के उच्चारणों के–उ– का लोप हो जाता है और सौंधा रह जाता है केवल सस्-राल्। 'सुस् राल्' भी उच्चारण है।

हअह — हआ + आह = हअ — हआह

खट् — टा + आस् = ख — टास् प्रथम अक्षर के स्वर में ह्रस्वता आ गई है।

सब साँचो में 'हअ— हआह' रूप है केवल पि—आस् मे स्वरो की आतरिक संधि हो जाने के कारण साँचा 'हहआह' बन गया है।

—ईद्

हअहह + आह = हअह — हआह

रंज + ईद् = रन् — जीद् + गी

हआह + आह = हआ — हआह

पेच + ईद् = पे — चीद् + गी

—ऊन्

हआह + आह = हआ — हआह

बात + ऊन् = बा — तून् + ई बा - तू - नी

—एड़्

आ — आह + आह = हअ — हअह

आधा + एड़् = अ — धेड़् प्रथम अक्षर के स्वर में ह्रस्वता आ गई है।

—एर्

हअह + आह = हअ — हआह

दिल् + एर् = दि — लेर्

हआँह + आह = हअँ — हआह

मूँड् + एर् = मुँ — डेर् प्रथम अक्षर के स्वरो में ह्रस्वता

ऐत्—

हआ — हआ + आह = हअ — हआह

ला — ठी + ऐत = ल — ठैत्

डा — का + ऐत् = ड — कैत्

भा — ड़ा + ऐत् = भ — डैत् उपान्त्य स्वरो मे ह्रस्वता आ गई है।

—एल्

हआह + आह = हअ — हआह

नाक् + एल् = न — केल्

हाथ् + एल् = ह — थेल् + ई प्रत्यय के साथ = हथेली
बाघ् + एल् = ब — घेल् उपान्त्य स्वर में ह्रस्वता आ गई है।

—ऐल

ह्अह् - ह्आ + आह = ह्अ - ह्आह
पट् — टा + ऐल् = प-टैल ट् का लोप
रक् — खा + ऐल् = र-खैल् क् का लोप
= ह्अह— ह्आह
खप् — रा + ऐल् = खप्—रैल्
बिग् - ड़ा + ऐल् = बिग्-- ड़ैल्

—ओट

ह्अहह + आह = ह्अह — ह्आह
लिंग् + ओट् = लङ् गोट् + इया लंगोटिया

—औल्

ह्आ -- ह्आ + आह = ह्अ -- ह्आह
मोटा + औल् = म -- टोल् + आ = मटोला

—औट्

ह्आ — ह्अह + आह = ह्अह — ह्आह
का -- जर् + औट् = कज् — रौट्[1]

—औत्

ह्आह + आह = ह्अ-ह्आह
जेठ् + औत् = जि - ठौत् उपान्त्यय स्वर ह्रस्व हो गया है।
बाप् + औत् = ब पौत् + ई प्रत्यय से 'बपौती'
ह्अ ह्अह + आह = ह्अ-ह्अ-ह्आह
ब-हिन् + औत् = ब-हि - नौत्

—औस्

ह्अह + आह = ह अ— ह्आह
पड़् + औस = प - ड़ौस् + ई प्रत्यय से 'पड़ौसी'

---

१. प्रथम अक्षर में० ह्रस्वता आ गई है और साथ ही मुक्ताक्षर से 'कज' बंदाक्षर बन गया है। स्वर से प्रारंभ होने के कारण प्रत्यय द्वितीय अक्षर के अंतिम व्यंजन से मिलकर एकाकार हो गया है, फलतः एक अक्षर का ह्रास हो गया है।

६. ३. १. २. ३. । ह्अह । साँचा

—कल्

हअह + हअह = हअह – हअह

फुट् + कल् = फुट – कल्

—गर्

हआ—हआ + हअह = हआ—हआ—हअह

सौदा—गर् = सौ—दा—गर्

जादू—गर् = जा—दू—गर्

हअ—हअह + हअह = हअ—हअह—हअह

सितम् + गर = सि—तम् —गर्

—डम्

हअ—हआ + हअह = हअह हअह

गुरू + डम् = गुरु – डम् 'गुरु' का अन्त्य स्वर फुसफुसाहट मात्र है

—पन्

हआह + हअह = हआह–हअह

बाल् + पन् = बाल् – पन्

हआँह + हअह = हआँह–हअह

बाँझ् + पन् = बाँझ् – पन्

हअ – हअह + हअह = हअ – हअह – हअह

लड़क् + पन् = ल – ड़क् – पन्

हआ – हअह + हअह = हआ – हअह – हअह

पागल् + पन् = पा – गल् – पन्

अ – हअहह + हअह = अ – हअहह – हअह

उजडड् + पन् = उ-जड्ड् – पन्

नोट—इस प्रत्यय की यह विशेषता है कि जिन शब्दों में जुड़ता है वे अधिकांशतः व्यंजनान्त होते हैं और यही कारण है कि कुछ शब्दो में जहाँ अन्त में दीर्घ स्वर है, जब यह प्रत्यय जुड़ता है तो दीर्घ स्वर का लोप हो जाता है।

छोटा – छुट् + पन् = छुट् – पन्

बच्चा – बच् + पन् = बच् – पन्

बड़ा – बड़् + पन् = ब–ड़प्–पन् [प्] का द्वित्व द्रष्टव्य है।

–वर्

हअह + हअह = हअह – हअह

दिल् + वर् = दिल्वर्

हआह + हअह = हआह – हअह

नाम् + वर् = नाम् — वर्

हअ – हअह + हअह = हअ — हअह — हअह

हुनर् + वर् = हु — नर् — वर्

हअ – हआ + हअह = हअ – हआ – हअह

दिसा + वर् = दि – सा – वर्

हअह – हअह + हअह = हअह – हअह – हअह

हिम्मत् + वर् = हिम् – मत् – वर्

किस्मत् + वर् = किस् – मत् – वर्

हआ – हअह + हअह = हआ – हअह – हअह

ता – कत् + वर = ता – कत् – वर्

–हट्

हअह + हअह = हअह – हअह

तल् + हट् = तल् – हट्

–हर

हअहह + हअह = हअहह – हअह

खण्ड् + हर् = खण्ड् – हर्

हआ + हअह = हआ – हअह

पी +[1] हर् = पी – हर्

नै[2] + हर् = नै – हर्

६. ३. १. २. ४। हअहह। साँचा

–बन्द

हअ – हअह + हअहह = हअ – हअह – हअहह

बगल् + बन्द् = ब – गल् – बन्द्

–मन्द

अहह + हअहह = अहह – हअहह

अक्ल् + मन्द् = अक्ल् – मन्द्

---

१. पी–पिता का ही लघु रूप है।

२. नै–पितृवाचक भाव ही समाहित है।

हअहह + हअहह = हअहह – हअहह
दर्द् + मन्द् = दर्द् – मन्द्
हअ – हअह + हअहह = हअ – हअह – हअहह
गरज् + मन्द् = ग – रज् – मन्द्
हआ – हअह + हअहह = हअ – हअह – हअहह
दौलत् + मन्द् = दौ – लत् – मन्द्
हआह – हआ + हअहह = हआह — हआ – हअहह
फाय्दा + मन्द् = फाय् – दे – मन्द् आ के स्थान पर 'ए' हो गया

–वन्त्
हअह + हअहह = हअह — हअहह
धन् + वन्त् = धन् –वन्त्
गुण + वन्त् = गुण् – वन्त्
हअ – हआ + हअहह = हअ – हआ – हअहह
दया + वन्त् = द – या – वन्त्

६. ३. १. २. ५. । हआ । साँचा

—का
हअह + हआ = हअह — हआ
छिल् + का = छिल् — का
चस् + का = चस् — का
ठस् + का = ठस् — का
फट् + का = फट् — का
हआह + हआ = हअह — हआ
भाप् + का = भप् — का उपांत्य स्वर ह्रस्व हो गया है।
तीन् + का = तिक् — का[1]
हआँह + हआ = हऑह — हआ
बूँद् + का = बुँद् — का + ई प्रत्यय से 'बुँदकी'

की
हअह + हआ = हअह — हआ
कन् + की = कन् — की

---

१. 'न' का समीकरण हो गया है। संख्याओं में इस प्रकार के ही विशेष परिवर्तन होते हैं। उदाहरणार्थ–एक से 'इक्का', दो से 'दुक्का, चार से 'चौका' छह से 'छक्का'।

धम् + की = धम् -- की
घुड् + की = घुड् -- की
झुत् + की = झुत् — की

--कू

हआह + हआ = हअह — हआ
नाक् + कू = नक् — कू उपांत्य स्वर ह्रस्व हो गया है।

--गी

हआह + हआ = हआह -- हआ
बान् + गी = बान् — गी
पेश् + गी = पेश् -- गी

हआ -- हआ + हआ = हआह -- हआ
सादा + गी = साद् -- गी अंत्य स्वर का लोप हो गया है।
ताजा + गी = ताज् — गी

हआ -- हआह + हआ = हआ -- हआह -- हआ
मौजूद + गी = मौ — जूद् — गी
नाराज् + गी = ना -- राज् — गी

हअह -- हआ + हआ = हअहह -- हआ
जिंदा + गी = जिंद् -- गी
पुख्ता + गी = पुख्त् — गी
बंदा + गी = बंद् — गी अंत्य स्वरों का लोप है।

—चा

हआह + हआ = हआह -- हआ
देग् + चा = देग् -- चा
बाग + चा = बाग् — चा[1]

हआँह + हआ = हआँह — हआ
सींक + चा = सींक् — चा

---

१. इसका आक्षरिक साँचा बदला हुआ है—ई का प्रभाव द्रष्टव्य है (बगीचा)

—ची

हअह + हआ = हअह – हआ

डोल् + ची = डोल् – ची

हअ – हअह + हआ = हअ – हअह – हआ

तबल् + ची = त – बल् – ची

बबर् + ची = ब – बर् – ची

चिलम् + ची = चि – लम् – ची

मिडिल् + ची = मि – डिल् – ची

हअ – हआह + हआ = हअ – हआह – हआ

मशाल् + ची = म — शाल् — ची

खजान: + ची = ख — जान् — ची

हअह—हआह + हआ = हअह — हआह — हआ

बन्दूक + ची = बन्-दूक् – ची

–टा

हआह + हआ = हआह – हआ

चोर् + टा = चोट्टा [ट्] का समीकरण द्रष्टव्य है।

हआ + आँ + हआ = हआ — अँ – हआ

मीआँ + टा = मीं – अँ / य – टा 'य' श्रुति है।

—टी

हअ — हआ + हआ = हअ — हआ — हआ

वधू + टी = व – धू – टी } एक ही शब्द के दो

वहू + टी = व – हू – टी } रूप हैं।

—ड़ा

हअह + हआ = हअह – हआ

मुख् + ड़ा = मुख — डा

दुख् + ड़ा = दुख — डा

बछ् + डा = बछ् — ड़ा

आँह + हआ = आँह — हआ

आँक् + ड़ा = आँक् — ड़ा

हआह + हआ = हअह – हआ

चाम् + ड़ा = चम् – ड़ा उपान्त्य स्वर ह्रस्व है।

हअहह + हआ = हअह — हआ

लंग + डा = लङ — डा

—पू

हअॅ + हआ = हअॅ -- हआ
भौ + पू = भौ -- पू

—मी

हअह + हआ = हअह -- हआ
दस् + मी = दस् — मी
नव् + मी — नव् — मी[1]

—रा

हअ–हआ–हआ + हआ = हअ — हआह — हआ
पपीहा + रा = प — पीह् — रा

—री

हआह + हआ = हआह — हआ
सूत् + री = सूत् -- री, सुत् - ली
हआ — हआ + हआ = हआ — हआ -- हआ
कोठा + री = को-ठा – री, कोठ् - री

—ला

हअह + हआ = हअह — हआ
दह् + ला = दह् — ला
नह् + ला = नह् — ला

—ली

हअह + हआ = हअह — हआ
ढप् + ली = ढप् — ली
मछ् + ली = मछ् — ली[2]

—वा

हअह + हआ = हअह — हआ
बल् + वा = बल् — वा
मल् + वा = मल् — वा
पुर् + वा = पुर — वा

---

१. नौ–मी ही अधिक प्रचलित है।

२. अभी अभी [काङ्गो-ली] शब्द अधिक प्रचलित हो गया है।

– वी

हआ — हआ + हआ = हआ — हआ — हआ
माया + वी = मा — या — वी
मेधा - वी = मे - धा - वी

६ ३. १. २. ६. । हआँ । साँचा

–दाँ

हअहह + हआँ = हअहह - हआँ
कद्र + दाँ = कद्र - दाँ
हआ - हआह - हआँ = हआ - हआह - हआँ
कानून् + दाँ = का - नून् - दाँ

नोट–किसी भी व्यंजनात शब्द के अंत मे यह प्रत्यय जुड़ जाता है और । हआँ । साँचे से एक अक्षर की वृद्धि हो जाती है।

–वीं

हआ - हअह + हआँ = हआ - हअह - हआँ
तेरह + वीं = ते - रह् - वीं शीघ्रता में ते–रहीं

६. ३. १. २. ७. । हआह । साँचा

–कार्

हअह + हआह = हअह् — हआह
जय् + कार् = जय् — कार्
दुत् + कार् = दुत् — कार्
धिक् + कार् = धिक् — कार्
पुच् + कार् = पुच् — कार्
झन् + कार् = झन् - कार्
फट् + कार् = फट् - कार्
हअहह + हआह = हअहह - हआह
शिल्प् + कार् = शिल्प् — कार्
हआह + हआह = हआह - हआह
पेश् + कार् = पेश् - कार्
हआहह + हआह = हआहह - हआह
काश्त् + कार् = काश्त् - कार्
हआँ + हआह = हअह - हआह
फूँ + कार् = फुङ् - कार्
१ हूँ + कार् = हुङ् - कार्

हअा - हअा + हआह = हअा-हअा-हआह
हा - हा + कार् = हा - हा - कार्
अ - हअह + हआह = अ-हअह-हआह
अ - हल् + कार् = अ - हल् - कार्
हअ - हआह + हआह = हअ-हआह-हआह
सलाह् + कार् = स - लाह् - कार्

-खोर

हअह + हआह = हअह - हआह
गम् + खोर् = गम् - खोर्
हअहह + हआह = हअहह-हआह
जंग् + खोर = जंग - खोर्
हआह + हआह = हआह-हआह
घूस् + खोर् = घूस् - खोर्
सूद् + खोर् = सूद् - खोर्
हअ - हअह + हआह = हअ-हअह-हआह
चुगल् + खोर् = चु-गल् - खोर्
हअा - हअा + हआह = हअा-हअा-हआह
गोता + खोर् = गो - ता - खोर्
हअ - हआह + हआह = हअ-हआह-हआह
हराम् + खोर् = ह-राम् - खोर्
हलाल् + खोर् = ह-लाल् - खोर्

-गार्

हआह + हआह = हआह-हआह
याद् + गार् = याद् - गार्
हअह - हअह + हआह = हअह-हअह-हआह
खिदमत् + गार् = खिद् — मत् — गार्

—गीन

हअह + हआह = हअह-हआह
गम् + गीन् = गम् - गीन्

—गीर्

हअहह + हआह = हअहह-हआह
दस्त् + गीर् = दस्त् — गीर्

हअाह + हअाह = हअाह—हअाह
राज् + गीर् = राज् — गीर्
राह् + गीर् = राह् — गीर्
हअ — हअाँ + हअाह = हअ—हअाँ—हअाह
जहाँ + गीर् = ज-हा — गीर्

—दान्

अहह + हअाह = अहह्—हअाह
इत्र् + दान् = इत्र्—दान्, इतर्दान् भी प्रचलित है।
हअहह + हअाह = हअहह्—हअाह
कद्र + दान् = कद्र—दान्, कदर्दान भी प्रचलित है।
हअाह + हअाह = हअाह—हअाह
खान् + दान् = खान् - दान् + ई प्रत्यय
चाय् + दान् = चाय् - दान् + ई प्रत्यय
पीक् + दान् = पीक् — दान्
हअाँह + हअाह = हअाँह- हअाह
गाँद् + दान् = गाँद् - दान् + ई प्रत्यय
हआ—हअह+हअाह = हआ—हअह—हअाह
रोशन् +दान् = रो — शन् — दान्
हअ - हअह +हअाह = हअ-हअह-हअाह
कलम् + दान् = कलम् + दान्

—दार्

हअाह + हअाह = हअाह—हअाह
फौज + दार् = फौज — दार्
बेल् + दार् = बेल् —दार्
माल् + दार् = माल् — दार्
आ - हअाह +हअाह = आ—हअाह—हअाह
ईमान् +दार् = ई-मान् - दार्
हअ - हअाह +हअाह = हअ—हअाह—हअाह
दुकान् +दार् = दु - कान् - दार्
ज़मीन् +दार् = ज़ - मीन् - दार्
हअह - हअह+ हअाह = हअह—हअह—हअाह
नम्बर + दार् = नम् — बर् —दार्

ह्अह—ह्आह + ह्आह = ह्अह—ह्आह ह्आह

तह्सील + दार् = तह—सील्—दार्

ह्अ - ह्आ + ह्आह = ह्अ—ह्आ—ह्आह

जिला + दार् = जि — ले[1] — दार्

ह्आ - ह्आ + ह्आह = ह्आ—ह्आ—ह्आह

चौकी + दार् = चौ — की — दार्

ह्आँ ह्आ + ह्आह = ह्आँ ह्आ—ह्आह

मूँजी + दार् = मूँ—जी—दार्

पूँजी + दार् = पूँ - जी - दार्

—बाज्

ह्अह + ह्आह = ह्अह—ह्आह

बम् + बाज् = बम् — बाज्

दम् + बाज् = दम् — बाज्

ह्अहह + ह्आह = ह्अहह — ह्आह

जल्द् + बाज् = जल्द् — बाज्

ह्आह + ह्आह = ह्आह—ह्आह

चाल् + बाज् = चाल् — बाज्

आ ह्अह + ह्आह = आ—ह्अह—ह्आह

आतिश् - बाज् = आ-तिश् — बाज् + ई प्रत्यय

ह्अ-ह्अहह + ह्आह = ह्अ - ह्अहह—ह्आह

पतग् + बाज् = प-तंग् — बाज्

ह्अ—ह्आ + ह्आह = ह्अ-ह्आ—ह्आह

कला + बाज् = क-ला - बाज्

ह्अह—ह्आ + ह्आह = ह्अह-ह्आ-ह्आह

सट्टा + बाज् = सट् — टे[1]—बाज्

—बान्

ह्आह- + ह्आह = ह्आह—ह्आह

बाग् + बान् = बाग् — बान्

ह्आ-ह्अह + ह्आह = ह्आ-ह्अह-ह्आह

मेहर् + बान् = मे - हर् - बान्

---

१. आक्षरिक साँचा अपरिवर्तित रहते हुये भी दीर्घ । आ । के स्थान पर । ए । द्रष्टव्य है ।

-बीन्

हुआह + हुआह = हुअह—हुआह

दूर् + बीन् = दुर्—बीन्

हुअहह + हुआह = हुअहह + हुआह

खुर्द् + बीन् = खुर्द् — बीन्

हुअ-हुआह + हुआह = हुअ-हुआह-हुआह

तमाश् + बीन् = त—माश् - बीन्

-यार्

हुआह + हुआह = हुअह—हुआह

घास् + यार् = घस—यार् (घसियार भी)

भाट् + यार् = भट् - यार्

हुअ—हुआ + हुआह = हुअ हुअ-हुआह

ग — ली + यार् = ग - लि - यार् ई में ह्रस्वता आ गई है।

-रेज़्

हुअहह + हुआह = हुअहह—हुआह

रंग् + रेज़् = रंग् — रंज़्

-वाड़

हुआ—हुआ + हुआह = हुअह-हुआह

पीछा + वाड़् = पिछ् - वाड़्

-वान्

हुअह + हुआह = हुअह-हुआह

गुण् + वान् = गुण् - वान्

धन् + वान् = धन् - वान्

पक् + वान् = पक् - वान्

बल् + वान् = बल् - वान्

रथ् + वान् = रथ् - वान्

हुआह + हुआह = हुआह — हुआह

कोच् + वान् = कोच् — वान्

बाग् + वान् = बाग् — वान्

रूप् + वान् = रूप् — वान्

हुआ — हुआ + हुआह = हुआ — हुआ—हुआह

गाड़ी + वान = गा — ड़ी — वान्

—वार्

हअाह + हआह = हआह — हआह

माह् + वार् = माह् — वार् + ई प्रत्यय

हआ — हआ + हआह = हआ — हआ — हआह

पैदा + वार् = पै-दा — वार्

हअ — हआह + हआह = हअ — हआह — हआह

कसूर् + वार् = क — सूर् — वार्

हअह — हआ + हआह = हअह — हआ — हआह

जिम् — मा + वार् = जिम् – मे – वार आ प्रत्यय के स्थान पर 'ए'।

— वाल्

हआ – हआ + हआह = हआ – हआ – हआह

पाली + वाल् = पा – ली – वाल्

हआ – हअह + हआह = हआ — हअह — हआह

जायस् + वाल् = जा — यस् — वाल्

—वाह्

हअह + हआह = हअह — हआह

कुश् + वाह् = कुश् — वाह् + आ प्रत्यय

हल् + वाह् = हल् — वाह् + आ प्रत्यय

—साज्

हआह + हआह = हआह — हआह

जाल् + साज् = जाल् — साज्

हअहह + हआह = हअहह – हआह

जिल्द् + साज् = जिल्द् – साज्

हअ – हआ + हआह = हअ – हआ – हआह

घड़ी + साज् = घ – ड़ी – साज्

द्व्यक्षरी साँचे :

६. ३. १. २. ८ । अ–हअह । साँचा :

–इयत्

हआह + अ – हअह = हआ – हअ – हअह

खास् + इयत् = खा – सि – यत्

खैर् + इयत् = खै – रि – यत्

} नोट : ये शब्द द्वयक्षरी भी हो जाते हैं।

इसी प्रकार यह प्रत्यय, मा-सूम्, मन्-हूस , इन्-सान्, मु-ला-यम्, कब्ज आदि शब्दो मे जुडता है। विशेषता यही है कि अन्त मे । हअह । का साँचा आ जाता है और प्रारभिक [इ] शब्द के अतिम व्यजन के साथ चली जाती है।

—इयल्

हअह + अ - हअह = हअ - हअ-हअह

सड़् + इयल् = स - ड़ि - यल्

६. ३. १. १. ६ । अ - हआ । साँचा :

–इमा

हआ-हआ + अ-हआ = हआ - हअ - हआ

नी - ला + इमा = नी - लि-मा द्रुतगति मे नील्-मा ।
मूल शब्द 'नील' भी
माना जा सकता है

यह प्रत्यय इसी प्रकार काला, लाल, मधुर् आदि शब्दो मे जुड सकता है।

६. ३. १ २. १० । अ-(ह) आ । साँचा :

–इया : यह पर-प्रत्यय अधिकतम प्रयोग में आता है क्योकि यह स्त्रीलिग, लघुतावाचक तथा विशेषण आदि बनाने के लिये प्रयुक्त होता है।

स्त्रीलिंग - बुड्ढा बुढिया - ड् का लोप
पट्-ठा पठिया ट् का लोप
कुत्ता कुतिया त् का लोप

लघुतावाचक :

डिब्बा डिबिया
आम् अमिया
खाट् खटिया
लोटा लुटिया ओ का उ में परिवर्तन दर्शनीय है

इसी प्रकार रोकड़िया, आड़तिया, कबाड़िया आदि शब्द बनते हैं, ।

६. ३. १. २. ११ । अह-हअह । साँचा

–अक्कड़

हअ - हआ + अह - हअह = हअ - हअह - हअह

कथा - अक्कड़ = क - थक् - कड़्

हआ - हअ + हअ - हअह = हअ - हअह - हअह

साधु + अक्कड़ = स - धुक् - कड़्

–अङ्गड़

ह्आह् + ह्अ - ह्अह् = ह्अ - अह - ह्अह्

बात् + अङ्गड़् = ब - तङ० - गड़् ह्रस्वता आ गई है

६. ३. १. २. १२ । आ — अह् । साँचा

–आइन्

ह्आ – ह्आ + आ – अह् = ह्अ – ह्आ – अह

बाबू – आइन् = ब – बुअ – इन्

विभिन्न ध्वन्यात्मक परिवर्तन द्रष्टव्य है ।

चौबे + आइन् = चौ – बा – इन्

लाला + आइन = ल – ला – इन्

ह्आ – ह्अह + आ – अह = ह्अ – ह्अ – ह्आ – अह

ठाकुर + आइन = ठ – कु – रा – इन

६. ३. १. २. १३ : आ–आ । साँचा

—आई यह पर-प्रत्यय अधिकांशतः । ह्आह । साँचे में जुड़ता है, जैसे

ह्आह् + आ —आ = ह्अ – ह्आ — आ

लोग् + आई = लु – गा– ई

प्रारंभ में स्वरों की मात्रा तथा गुण में परिवर्तन हो जाता है ।

मीठ् — आई = मि — ठा — ई

ढील् + आई = ढि — ला — ई

साफ़् — आई = स — फा — ई

इसी प्रकार । ह्अ–ह्अह । साँचे में जैसे चतुर् से चतुराई, तरुण् से तरुणाई ।

। ह्आ–ह्अह । साँचे मे, जैसे, ठाकुर् से ठकुराई, पाहुन् से पहुनाई ।

६. ३. १. २. १४ । आ–ह्अह । साँचा

इस साँचे में 'आवट्', आहत्', 'आयत्' आदि पर-प्रत्यय आते है ।

—आयत् जैसे लोक से लोकायत्,

पाँच से पंचायत् अधिकतम आवृत्ति वाला शब्द है ।

ठाकुर से ठकुरायत्

६. ३. १ २. १५ । आ — ह्आ । साँचा :

यह साँचा बहुत व्यापक है, इसमे आती, आना, आनी, आपा, आरा, आरी, आला, ईना, ईला, ऊटा, एरा, एली, एला, ओड़ा, ओला, ओही, औटा, औड़ा, औला, औरी आदि प्रत्यय आते हैं ।

--आना :

ह्अह+आना, जैसे, घराना, बचाना।
ह्अहह+आना, जैसे जुर्माना, दस्ताना।
ह्अ– ह्अह+आना, जैसे नजराना, सिर्हाना

इसी प्रकार याराना, सालाना, मेहताना, राजपूताना आदि मे यही प्रत्यय है।

–आपा :

अहा–ह्अ+आपा, जैसे पु–जा–पा, बु-ढा–पा स्वरों की
ह्आ–ह्आ+आपा, जैसे मु–टा–पा ह्रस्वता द्रष्टव्य है।

–ईला

ह्अहह+ईला, जैसे खर्-ची-ला, तर्-जी-ला, बर्-फ़ी-ला,
ह्आह+ईला, जैसे जो-शी-ला,
ह्अ-ह्अह+ईला, जैसे जह-री-ला

–ऐला

ह्आह+ऐला, जैसे सौ–ते–ला

–एली

ह्अह+ऐली, जैसे न-वे-ली
ह्आह+ऐली, जैसे ह-थे-ली

–ओला :

ह्आह+ओला, जैसे ख-टो-ला

–ओही

ह्आह+ओही, जैसे ब-टो ही

–औटा

ह्आ-ह्अह+औटा, जैसे कज्-रौ-टा

–औड़ा

ह्आह+औड़ा, जैसे ह-थौ-ड़ा, प-कौ-ड़ा प्रथम स्वर ह्रस्व हो गया है

–औती

ह्आह+औती, जैसे ब-पौ-ती ,, ,,

६. ३. १. २. १६। ह्अ-ह्आ। साँचा

इस साँचे में कडा, नुमा, हटी, आदि प्रत्यय हैं।

–नुमा : कु-तब्-नु-मा, राह्-नु-मा आदि शब्द विशेष प्रचलित हैं।

६. ३. १. २. १७ । ह्आ-ह्आ । साँचा

इसमे गीरी, चारा, ज़ादा, आदि प्रत्यय विशेष प्रचलित हैं।

–गीरी कु-ली-गी-री, ने-ता-गी-री, बा-बू-गी-री, नोट : ग् का ई ह्रस्व भी हो जाता है।

–चारा : भा-ई-चा-रा

–ज़ादा : ह-राम् ज़ादा विशेष प्रचलित है।



अध्याय ७

शब्दसीमा

७. ० शब्द्

शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में विद्वान् एक मत नहीं हैं, फिर भी सामान्यतः { शब्द } + घञ् प्रत्यय = शब्द इसकी व्युत्पत्ति मानी जाती है जिसका अर्थ है शब्द या ध्वनि करना। शब्द के समानार्थक अँग्रेजी शब्द 'word' डच woord, जर्मन wort के मूल मे लैटिन verbum और ग्रीक eiro का शाब्दिक अर्थ भी 'बोलना' है।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से शब्द क्या है ? इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार किया गया है। भारतीय वैयाकरणो तथा दार्शनिको ने 'शब्द' पर पर्याप्त विवेचन किया है। काव्यशास्त्रियो ने भी शब्द पर 'काव्यशास्त्र' की दृष्टि से विचार किया है। महाभाष्यकार पतंजलि के अनुसार शब्द कान से प्राप्य, बुद्धि से ग्राह्य तथा प्रयोग से स्फुरित होनेवाली आकाशव्यापी ध्वनि है[1]।

पतंजलि की दृष्टि से शब्द की विशिष्टता घोषित करनेवाले ये चार विशेषण हैं :

१ उच्चरित, २. श्रव्य, ३. बुद्धिग्राह्य ४. अर्थबोधक

एक प्रकार से शब्द वह ध्वनि है जिससे व्यवहार या लोक में पदार्थ की प्रतीति हो[2]।

इसी परिभाषा को हम और अधिक वैज्ञानिक स्वरूप देकर कह सकते हैं कि शब्द वह एक ध्वनि या ध्वनि समूह है जिससे अर्थबोध[3] होता है।

एक ध्वनि,	जैसे	आ
दो ,,	जैसे	अब्
तीन ,,	जैसे	काल्

---

१. 'श्रोत्रोपलब्धिर्बुद्धिनिर्ग्राह्यः प्रयोगेणाभिज्वलितः आकाशदेशः शब्दः।

२. 'प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनि. शब्दः।'

३. मिलाइए—एक या अधिक अक्षरो से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। गुरु-हिंदी व्याकरण, नि० ८७।

नोट :—यहाँ अक्षर वर्णों के लिये प्रयुक्त किया गया है।—(लेखक)

इसी प्रकार शब्द में अनेक ध्वनियाँ हो सकती हैं, पर सबसे अधिक आवश्यक यह है कि उसके प्रारंभ व अंत मे मौन स्थिति हो[1]।

रूप विज्ञान की दृष्टि से शब्द 'लघुतम मुक्त रूप' है। भाषण में यदि वाक्य या वाक्यांश अधिकतम इकाई है और ध्वनि या अक्षर उसकी लघुतम इकाई है, तो शब्द मध्यावस्था में माना जाएगा जो एक ओर लघुतम इकाई अक्षर से संबद्ध है तो दूसरी ओर वाक्य से।

व्याकरण दर्शन में शब्द सदा उस ध्वनि के लिये आता है जिसके उच्चारण से किसी विशेष अर्थ का ज्ञान होता है। भर्तृहरि ने ऐसे शब्दों के लिये 'उपादान' शब्द का प्रयोग किया है।

प्राचीन शास्त्रों में दूसरे अर्थ में शब्द की महिमा का वर्णन मिलता है। शब्द ही ब्रह्म है।[2] शब्द मे ऐसी शक्ति है जो इस सारे विश्व को जकड़े हुए है।[3] शब्द रूपी ज्योति इस संसार में न चमकती तो ये तीनों भुवन अंधेरे ही रहते।[4] शब्द आत्म-रूप-तत्व की प्राप्ति अर्थ द्वारा ही करता है। शब्द यदि न हो तो अर्थ प्रकाशित कैसे हो? व्यवहार के क्षेत्र में भी शब्द के बिना काम नहीं चलता।[5]

पाश्चात्य विचारकों ने भी 'शब्द' पर मनन करते हुए अनेक परिभाषाएँ दी हैं:

वाक्य में प्रयुक्त रूपों के भी खंड हो सकते हैं। वे खंड-रूप जो स्वतंत्र अर्थवान् रूप में बोले जाते हैं मुक्त रूप कहलाते हैं जो खंडरूप स्वतंत्र अर्थ-

१. डा० विश्वनाथ प्रसाद 'दो मौनस्थितियों के बीच की ध्वनियों के समूह को शब्द' कहते हैं।

ए० आर० केलकर—द फ़ोनोलजी एंड मार्फोलोजी अव् मराठी।

फोनोलोजिक वर्ड इज द स्ट्रेच अव सेगमेंटल फोनीम्ज़ विद नो क्लोज़ जंक्चर्ज़ विदइन एंड बाउंडेड बाइ नान-क्लोज़ जंक्चर्ज़ एंड ऑर अटरेंस बाउंड्री।

२. 'वाग्वै सम्राट् परम ब्रह्म' बृहदारण्यक।

३. 'शब्देष्वाश्रिता शक्तिर्विश्वस्यास्य निबंधनी।' भर्तृहरि।

४. इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।। दण्डी

नोट—२, ३ तथा ४ उद्धरण डा० बाबूराम सक्सेना कृत 'अर्थविज्ञान १९५१ से उद्धृत हैं।

५. आत्मरूपं यथा ज्ञाने ज्ञेयरूपं च दृश्यते। अर्थरूपं तथा शब्दे स्वरूपं च प्रकाशते।—वाक्यपदीय १–५०

डा० शिवनाथ-अर्थतत्व की भूमिका, सं० २०१८, पृ० १८ से उद्धृत।

रूप मे नहीं बोले जाते हैं 'आबद्ध रूप' कहलाते हैं। 'अविभाजित मुक्त रूप ही शब्द है[1]।'

'लघुतम भाषण इकाई ही शब्द है[2]" पामर

'एक ध्वनि या ध्वनियो का संयोजन ही शब्द है जिससे एक विचार या अनेक विचार व्यक्त होते हो[3]।'

'भाषण या भाषा की सार्थक लघुतम इकाई ही शब्द है[4]।"–उल्मैन

'किसी निश्चित व्याकरणिक प्रयोग के लिये निश्चित ध्वनियो का संयोजन ही शब्द है जिससे निश्चित अर्थ की प्राप्ति होती है[5]।" –मेये

'वाक्य में प्रयुक्त लघुतम स्वतंत्र इकाई ही शब्द है।'[6]

––राबर्टसन

शब्द किसी विशिष्ट भाषा को वह व्याकरणिक लघुतम इकाई है जो रिक्त स्थानों से पृथक् हो[7]। —पाइक

'मुक्त रूप, जो वाक्याश नहीं है, शब्द है। शब्द वह मुक्त रूप है जो छोटे से छोटे मुक्त रूपो से मिलकर भी न बने। संक्षेप मे शब्द लघुतम मुक्त रूप है।[8]—ब्लूमफील्ड

उपर्युक्त परिभाषाओ से कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :

भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई (अर्थ के स्तर पर) शब्द हैं–

१—शब्द 'अर्थ' के स्तर पर लघुतम इकाई है।

अर्थात्—शब्द सार्थक होता है, निरर्थक नही।

—शब्द लघुतम होता है, यौगिक, योगरूढि नही।

—अर्थ के स्तर पर लघुतम है और ध्वनि के स्तर पर नहीं।

---

१. ब्लाख् एड ट्रेगर–एन आउटलाइन अव् लिंग्विस्टिक एनेलेसिस, सन् १९४२, पृ० ५४।

२. पामर, एल० आर०–आई० एम० लिंग्विस्टिक्स, पृ० ७९।

३. आक्सफर्ड डिक्शनरी।

४. स्मालेस्ट सिग्नीफिकेंट यूनिट अव् स्पीच ऐड लैंग्वेज।

५. ए वर्ड इज द रिजल्ट अव् द एसोसियेशन ऑव् ए गिविन मीनिंग विद ए गिविन काम्बीनेशन अव् साउड्ज़, केपेबिल अव् ए गिविन ग्रामैटिकल यूज़।

६. –द स्मॉलेस्ट इंडिपेंडेंट यूनिट विदइन द सेंटेन्सेज़।'

७. पाइक, के० एल०–फोनेमिक्स, १९५४, पृष्ठ १५९।

८. ब्लूमफील्ड, एल०-लैंग्वेज, १९५६, पृ० १७८।

२—शब्द स्वतन्त्र होता है।

अर्थात्—स्वावलंबी होता है—प्रयोग व अर्थ दोना दृष्टियो से। -

—इसमें आबद्ध रूप नही लिये जा सकते क्योंकि उनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

डा० उदय नारायण तिवारी[1] के मत से 'शब्द वे भाषाशास्त्रीय रूप हैं जिनका वितरण एवं अर्थ पूर्णतया स्वतंत्र रूप में होता है।

७. १ शब्दभेद

वैयाकरणों, दार्शनिको एवं भाषा वैज्ञानिकों ने अपने अपने दृष्टि- कोण से शब्द के भेद किये हैं। प्राचीन मनीषियो द्वारा किये गये शब्द के भेदों मे दर्शन की सर्वत्र छाया है।

महाभाष्यकार पतंजलि ने[2] ('ऋलृक् सूत्र के भाष्य में) यह कहा था—वाग्व्यवहार में, भाषा में शब्दो का जो प्रयोग किया जाता है वह यही समझकर किया जाता है कि शब्द के चार प्रकार के अर्थ होते हैं, जातिरूप (गौः), गुणरूप (शुक्लः), क्रियारूप (चलः) और सज्ञा (द्रव्य) रूप (डित्थः)।

भारतीय तथा पाश्चात्य वैयाकरणों ने अनेक प्रकार से शब्द भेद किए हैं। भाषा के ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से अर्थ के आधार पर भी अनेक भेद किए जा सकते हैं। यहाँ पर हमारे अध्ययन में बनावट अर्थात् रूपरचना की दृष्टि से शब्द के भेद लाभप्रद सिद्ध होगे।

७. १. १ मौलिक, रूढ़ि या अयौगिक

वे सार्थक शब्द जिनका विभाजन न किया जा सके, जैसे हाथ्, माल्, काम्, घोड़ा आदि।

७. १. २ यौगिक

वे सार्थक शब्द जिनको मौलिक या रूढ़ि शब्दों में प्रत्यय (पूर्व, मध्य या पर) जोड़कर बनाया जाय। जैसे

अ-थाह्, अन्-बन्	—पूर्व-प्रत्यय युक्त
नाम् वर्, सत्य्-ता	—पर-प्रत्यय युक्त
अन्होनी	—पूर्व तथा पर प्रत्यय युक्त

---

१ डा० उदय नारायण तिवारी—भाषाशास्त्र की रूपरेखा, १९६३, पृ० ५१।

२, पतंजलि और भर्तृहरि ने दार्शनिक दृष्टि से शब्द का बड़ा व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया है, हमारे क्षेत्र से इतर होने के कारण इस विषय को यहीं छोड़ते हैं। शब्द की दार्शनिक व्याख्या के लिये द्रष्टव्य है।
डा० रामसुरेश त्रिपाठी—शब्द : एकत्ववाद और नानात्ववाद -ना० प्र० पत्रिका, मालवीय शती विशेषांक, पृ० २२२ २३८।

७. १. ३. योगरूढ़ि—यौगिक शब्द ही जब विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होता-होता रूढ़ि हो जाय तो योगरूढि कहलाता है जैसे, जलज।

७. १. ४ समास समास[1] (समस्त) यौगिक ही होते हैं पर जहाँ शुद्ध यौगिक मे प्रत्यय (पूर्व, मध्य, पर) ही जुड़ता है, वहाँ समास में दो स्वतत्र शब्दो का योग होता है, जैसे—

घोड़ा + शाला = घुड़साल

पुनरुक्ति शब्द, जैसे, जन-जन, देश-देश; अनुकरणमूलक जैसे-चमचम; अनुवादमूलक, जैसे, साग-सब्जी, पाव-रोटी; प्रतिध्वनि-शब्द, जैसे काम-वाम, संश्लिष्ट शब्द जैसे रेल-गाड़ी, डाकखाना आदि वस्तुतः समास शब्द ही हैं। इनको पृथक् से रखने मे कोई औचित्य नही।

७. १. ५ रचना की दृष्टि से शब्द (मौलिक तथा यौगिक) की रचना निम्नलिखित प्रकार से हो सकती है :

१–मुक्त रूप	राग्, राम्, धान्
२–मुक्त रूप + आबद्ध रूप	छोटा + पन् = छुट्पन्
	दास् + ता = दास्ता
	घोड़ा + ओ = घोड़ो
३–आबद्ध रूप + मुक्त रूप	स + हर्ष = सहर्ष
	सु + पुत्र = सुपुत्र
४–मुक्त रूप + मुक्त रूप	काम + धंधा = काम-धधा
	दीप + शलाका = दीप-शलाका (दियासलाई)
५–आबद्ध रूप + आबद्ध रूप	तार + तम्य = तारतम्य
	अं० पर + सीव = परसीव

---

१. समस्यते अनेकम् पदमिति समासः–सिद्धांत कौमुदी

ब्लूमफ़ील्ड-कंपाउंड वर्डज़ हैव टु (ऑर मोर) फ्री फ़ार्म्ज़ एमंग देयर इमीडियेट कन्स्टिट्यूएंट्स।

क्लाख ऐंड ट्रेगर—इफ़ ऐट लीस्ट वन अव् द इमीडियेट कन्स्टिट्यूएंट्स अव ए वर्ड इज ए बाउंड फार्म, द वर्ड इज कम्पलेक्स।

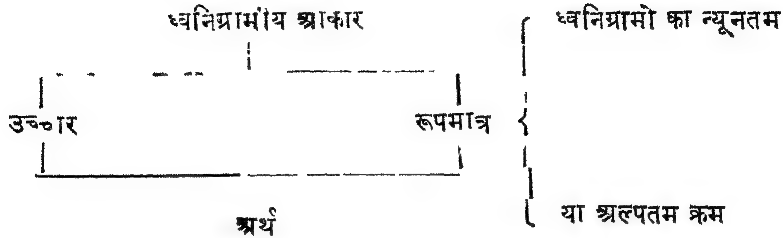
यस्पर्सन, ओ०—ए कंपाउंड मे परहेप्स बी प्रोवीज़नली डिफाइंड एज ए कम्बीनेशन अव् टू आर मोर वर्ड्ज़ सो एज़ टू फंक्शन एज ए वर्ड यूनिट।

पाइक, के० एल०–ए ग्रामैटिकल क्लोज निट-यूनिट अव् टू फ्री फार्म्ज़ फंक्शनिंग लाइक ए सिंगिल फ्री फ़ार्म।

नोट : आबद्ध रूप शब्द नहीं कहे जा सकते।

७ २ रूपमात्र

७. २. १ ध्वनिग्रामों का वह संयोग जिसका आकार तथा अर्थ होता है।[1]



ध्वनिग्रामों के न्यूनतम अर्थ सहित आवर्तन को पद कहते हैं। पद भाषीय उच्चारों के ऐसे अंश हैं जिनमें समान ध्वनिग्रामों का समान क्रम तथा समान न्यूनतम अर्थ होता है।[2]

रूपमात्र (पद-ग्रामों) के संबंध में पाश्चात्य भाषाविदों के विचार इस प्रकार हैं :

ब्लाख : कोई भी भाषीय रूप, चाहे वह मुक्त अथवा आबद्ध हो तथा जिसे पुनः न्यूनतम अर्थवान रूप में खंडित न किया जा सके।[3]

ग्लीसन—पदग्राम न्यूनतम उपयुक्त व्याकरणीय अर्थवान रूप है।[4]

हॉकेट–किसी भाषा के उच्चार में पदग्राम न्यूनतम स्वतः अर्थवान तत्व होते हैं।[5]

पाइक–भाषिक संगठन की न्यूनतम अर्थयुक्त इकाई है।[6]

हैरिस—उच्चारण के वे अंश जो एक दूसरे से पूर्ण रूप से स्वाधीन होते हैं किंतु जो समान या अनुरूप वितरण के रूप में आते हैं, पदग्रामीय खंड हैं।

---

१. डा० उदय नारायण तिवारी–भाषा शास्त्र की रूपरेखा, सन् १९६३, पृ० १४७।

२. डा० महावीर शरण जैन–कुछ प्रमुख पारिभाषिक शब्दों का परिचय, हिन्दुस्तानी, सन् १९६२, पृ० १०९।

३. एनी फार्म, व्हेदर फ्री आर बाउंड, ह्विच कैननोट बी डिवाइडेड इंटू स्मॉलर मीनिंगफुल पार्ट्स इज़ ए मॉर्फीम।

४. द मार्फ़ीम इज़ द स्मालेस्ट यूनिट ह्विच इज़ ग्रमैटिकली पर्टीनेंट।

५. मार्फ़ीम्ज़ आर द स्मॉलेस्ट इंडिविज्यली मीनिंगफुल एलीमेंट्स इन् द अटरेंसेज़ अव् ए लैंग्वेज़।

६. स्मालेस्ट मीनिंगफुल यूनिट ऑव् लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर।

पदग्राम ऐसे खडों के वे समूह हैं जो स्वतत्रतापूर्वक एक दूसरे को स्थानापन्न करते हैं या परिपूरक वितरण में विद्यमान रहते हैं।

हैरिस महोदय अर्थ की सत्ता को बिल्कुल स्वीकार नही करते हैं।

७. २ २ 'रूपमात्र'' का विभाजन नीडा ने इस प्रकार किया है।

क—रूप-मात्र जो अर्थ की दृष्टि से साम्य रखते हैं और साथ ही जिनमे ध्वन्यात्मक साम्य भी होता है :—

जानकार्, पेशकार्, सलाहकार्—कार् = करनेवाला

लड़कपन्, बालपन्, बचपन् — पन् = भाववाचक संज्ञा

ख—रूपमात्र जो अर्थ की दृष्टि से साम्य रखते हैं पर उनमे ध्वन्यात्मक साम्य नही होता है :—

अ–टल, अचल, अनबन, अनपढ

अ— } निषेधात्मक उपसर्ग
अन– }

ग—रूपमात्र जो अर्थ की दृष्टि से साम्य रखते है और उनमे ध्वन्यात्मक साम्य नही है पर उनमें परिपूरक बंटन है :—

बहुवचन विभक्ति प्रत्यय

हिंदी मे कर्ता बहुवचन (ए—एँ ओं)

कर्म (तिर्यक) बहुवचन (ओ)

घ—रूपमात्र शून्य भी हो सकता है।

ङ—समध्वन्यात्मक रूपमात्र भी हो सकते हैं जो भिन्नार्थक हो :—

अँग्रेजी आगत शब्द	हिंदी शब्द
बार्	बार्
बिल्	बिल्
चाक्	चाक्
चीज्	चीज्
पंच्	पंच्

च—पद-मात्र का मुक्त प्रयोग भी संभव है और यह मुक्त प्रयोग ही शब्द बन जाता है-जैसे-

राज्, राम्, राग्, रात्

छ—पदों का मुक्त वितरण भी हो सकता है —

संस्कृत—	कोश्	—कोष्
ब्रजभाषा–	सड़क्—	सरक्
हिंदी—	रणधीर्	रनधीर्

७. २ शब्द तथा रूपमात्र (पदग्राम)

रूपमात्र (पदग्राम) भाषा की न्यूनतम अर्थवान इकाई है। इसका निर्माण किसी भाषा के एक या एक से अधिक ध्वनिग्रामो को एक विशेषक्रम मे रखने से होता है, किंतु शब्द वह व्याकरणिक रूप है जिसका निर्माण एक या एक से अधिक पद ग्रामो को एक विशेषक्रम मे रखने से होता है। पदग्राम मे एक या एक से अधिक ध्वनिग्रामो का विशिष्टक्रम रहता है, किंतु शब्द में एक या एक से अधिक पद ग्रामों का क्रम रहता है। एक शब्द मे कम से कम एक या एक से अधिक पदग्राम हो सकते है, किंतु एक पदग्राम एक से अधिक शब्द का नही हो सकता।[1]

		पदग्रामो की संख्या	शब्दो की संख्या
राग्	=	१	१
दास्ता	=	२	१
उनीदा	=	३	१
बेरोज्गारी	=	४	१

अब कुछ उदाहरणो से ध्वनिग्राम, अक्षर, रूपमात्र और शब्द का पारस्परिक संबंध और स्पष्ट होगा।

उदाहरण	ध्वनिग्राम सख्या	अक्षर सख्या	रूपमात्रसख्या	शब्द सख्या
आ	१	१	१	१
आग्	२	१	१	१
आता	३	२	२	१
बाप्	३	१	१	१

१. डा० उदयनारायण तिवारी–भाषा शास्त्र की रूपरेखा, सन् १९६३ पृ० १५२–१५३।

मिलाइये। इस सबंध में डा० महावीर शरण जैन के विचार–

शब्द भी भाषा का एक अर्थवान तत्व ही है। किंतु वह पद से सर्वथा भिन्न इकाई है। वैसे कभी कभी पद और शब्द अभिन्न भी हो जाते हैं। यहाँ स्मरणीय यह है कि संस्कृत व्याकरणों में प्रयुक्त पद एव आधुनिक भाषाशास्त्रीय 'माफ्' के पर्याय पद में भी अंतर है। संस्कृत-व्याकरणों के अनुसार जब शब्द को वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता प्रदान कर दी जाती है तब वह पद कहलाता है अर्थात् विभक्ति सहित शब्द पद है। किंतु सस्कृत के इस पद के स्वरूप को अधुनातम भाषा शास्त्र में 'विभक्ति मय' के नाम से अभिहित करते हैं।

उदाहरण	ध्वनिग्राम संख्या	अक्षर संख्या	रूपमात्र संख्या	शब्द संख्या
आद्मी	४	२	१	१
आद्मियों	६	३	२	१
आज्कल्	५	२	२	२ समस्तपद

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ संभव है कि ध्वनिग्राम, अक्षर, रूप मात्र तथा शब्द की संख्या एक सी बनी रहे वहाँ यह भी संभव है कि ध्वनिग्रामों की संख्या ६, अक्षर संख्या ३, रूपमात्र संख्या २ और शब्द संख्या एक ही रह जाय।

७. ४ शब्द-सीमा

जिस प्रकार 'अक्षर' क्या है और किस शब्द में कितने अक्षर हैं कहना सरल है पर अक्षर-सीमा का निर्धारण जटिल है; उसी प्रकार शब्द क्या है और किस वाक्य मे शब्द कितने हैं बताना सरल है, पर उच्चरित वाक्य मे शब्द की सीमा निर्धारित करना जटिल है।

ध्वनियो का संयोजन कहाँ तक एक शब्द[1] बनाता है और कहाँ तक दो, इसका निश्चितरूपेण उत्तर देना सरल कार्य नहीं है।

सामान्यतः लिखित रूप में तो यह सिद्धात चलता है कि रिक्त स्थानो के मध्य मुद्रित या लिखित एक शब्द है। पर एकरूपता के अभाव मे यह भी संभव नहीं, जैसे—

हिंदी मे परसर्गों को सटाकर और हटाकर लिखने की प्रथा है।

अंग्रेजी में[2] (इंगलैंड) Cannot एक शब्द है, पर अमेरिकन अंग्रेजी Can not दो शब्द है।

इस प्रकार लिखित रूप कोई आधार नहीं है। हाँ, हम एक सर्वमान्य सिद्धात यह बना सकते हैं कि मुक्त सक्रमण[3] दो शब्दो के मध्य होता है।

सबंधवाचक परसर्ग का, की, के कभी कभी दो-दो, तीन-तीन शब्दों के साथ जुटकर आ जाता है, तब फिर समस्या उठती है कि कहाँ तक एक शब्द माना जाय—

राजा राम का

यही स्थिति अंग्रेजी मे भी है:

The king of England's Power

उपर्युक्त उदाहरणो मे सबधवाचक परसर्ग बहुत दूर तक प्रभाव डाल रहा है।

---

१. यस्पर्सन, ओ०—फ़िलासफ़ी अव् ग्रामर, १९५८, पृ० ४१ तथा ४२।

२. वही, पृ० ४१।

३. संक्रमण (जंक्चर) पर आगे विशद विवेचन किया जाएगा।

शब्द व्याकरणिक इकाई के साथ ही ध्वन्यात्मक इकाई है। अगर पूरा वाक्य अविरल ध्वनियों का संयोजन मात्र हो तो केवल ध्वन्यात्मक आधार पर शब्द सीमा खोजना कठिन होगा, उदाहरणार्थ निम्नलिखित शब्द लिये जा सकते हैं—

इस् कूल पर — इस्कूल पर
पी लिया — पीलिया

अंग्रेजी मे an aim—a name
a maze—amaze
a sister– assist her
in sight -incite

इस प्रकार संक्रमण के ज्ञान के बिना केवल ध्वन्यात्मक मापदण्ड भी व्यर्थ रहता है।

७. ५ हिंदी शब्द-सीमा के आधार

शब्द सीमा को दो आधार पर निश्चित कर सकते हैं :

१—ध्वनि प्रक्रियात्मक[1]।

२—वाक्यमूलक।

किसी एक आधार पर शब्द–सीमा स्थिर करना प्रायः असफल हो सकता है, अतएव दोनो आधारो का आश्रय लेकर आवश्यकतानुसार अर्थ तथा ध्वनि के सहारे सीमाकन किया जा सकता है।

७. ५. १ ध्वनिप्रक्रियात्मक आधार

शब्द–सीमा और अक्षर–सीमा

१—शब्द की सीमा के लिए ध्वनि–प्रक्रियात्मक आधार जानने के लिए शब्द के आक्षरिक स्वरूप पर विचार करना आवश्यक है। इस दृष्टि से एकाक्षरिक

---

१ नीडा ने अपनी मार्फोलोजी शीर्षक पुस्तक में ४. ७.२ में निम्नलिखित ध्वनि प्रक्रियात्मक आधार माने हैं :–

(अ) अकर्सेज् अव् ऑपिन क्लोजड जंक्चज्
(आ) डिस्ट्रीब्यूशन अव् फोनीम्ज् विद्--इन जंक्चर्ज लिमिट्स।
(इ) डिस्ट्रीब्यूशन अव् एलोफोन्ज् विद्--इन जक्चर्ज लिमिट्स।
(ई) स्ट्रेस पैटर्न
(उ) पॉटेंशियल वर्सेज् नान पॉटेंशियल पाज्
(ऊ) पैटर्न्ज् अव् फोनोलोजीकल चेंज—लॉस अव् वॉवल्ज्

—अल्टरनेटिव अन्वायसिंग एँड रिडक्शन
—वोकेलिक हारमनी

शब्दो में तो शब्द और अक्षर की आदि स्थिति तथा अंत्य स्थिति एक ही है, केवल नाम का भेद है किंतु एकाक्षरिक शब्दो की अक्षर-सीमा और शब्द-सीमा में कोई भेद नहीं है।

७. ५. २—द्व्यक्षरात्मक शब्दो में प्रथम अक्षर की आदि स्थितियो का जो विशद विवेचन किया गया है, वह ही शब्द की आदि स्थिति है, हॉ शब्द की अंत्य सीमा के लिए द्वितीय अक्षर का अंत्य स्वरूप शब्द-सीमा बनायेगा।

७. ५. ३—त्र्यक्षरात्मक शब्दो मे प्रथम अक्षर का आदि रूप शब्द का आदि स्वरूप घोषित करता है और अतिम अक्षर का अत्य स्वरूप शब्द का अंत्य स्वरूप बनाता है। हॉ, त्र्यक्षरात्मक शब्दो मे उपात्य अक्षर का शब्द की सीमा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

७. ५. ४—इसी प्रकार चतुरक्षरात्मक शब्दो मे प्रथम तथा अन्तिम अक्षर ही शब्द-सीमा में उपयोगी हैं, शेष नही।

७. ५. ५—हिंदी अक्षर के आदि मे सभी स्वर आ सकते हैं। इसी आधार पर शब्द की आदि सीमा पर सभी स्वर मिल सकते हैं। अक्षर के अंत मे केवल दीर्घ स्वर आते हैं और ह्रस्व स्वरात अक्षर व्यंजनान्त हो जाते है अतएव शब्द की अत्य सीमा भी अधिकाशतः व्यंजनात या दीर्घ स्वरांत ही होगी। अपवाद रूप कुछ शब्द जैसे 'न', 'कि' ऐसे हैं जिनमे केवल एक व्यंजन होने के कारण आधार स्वरूप ह्रस्व स्वर का लोप नही होता।

७. ५. ६—अध्याय द्वितीय में (२. ३. ५) यह स्पष्ट किया जा चुका है कि कौन-कौन से व्यंजन अक्षर के प्रारभ में आ सकते हैं और कौन कौन से अंत में। ये ही व्यंजन शब्द की सीमा निर्धारित करते हैं।

नोट : क-यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यदि कहीं ।ड। अथवा ।ढ। व्यंजन है तो स्पष्ट रूप से वहाँ शब्द की आदि सीमा ही होगी और जहॉ ।ड़। या ।ढ। होगा, तो निश्चित रूप से वहॉ शब्द की मध्य तथा अंत्य सीमा होगी। अँग्रेजी आगत शब्द अपवाद स्वरूप पृथक् रहेगे, जैसे, तारघर में प्रयुक्त शब्द 'कोड'।

ख—इसी प्रकार। ण्। तथा।ड्।, व्यंजनो द्वारा निश्चित रूप से शब्द की अंत्य सीमा ही घोषित होती है।

७. ५. ७—मध्य स्थिति मे स्वर संयोगो का चार्ट (२. १. ४) दिया जा चुका है। इन सीमित स्वर संयोगो से इतर जब कोई स्वर संयोग हो तो वह निश्चित रूप से शब्द सीमा घोषित करता है। वही २, १. ४ के अंत मे 'अ' स्वर के

२६

साथ दसो स्वरो से संयोग की स्थिति स्पष्ट करके शब्द-सीमा दिखाई गई है, उदाहरणार्थ—

अ + अ	का संयोग शब्द सीमा है	न + अब
अ + इ	—	न + इधर
अ + उ	—	न + उल्टा
अ + ऐ	—	न + ऐश
अ + ओ	—	न + ओला
अ + औ	--	न + औरत

केवल अ—आ, अ—ई, अ—ऊ, अ—ए की स्थिति मे अन्य सिद्धातो से यह पता लगाना होगा कि यह अक्षर सीमा है कि शब्द सीमा।

७. ५. ८—इसी प्रकार मध्य स्थिति मे व्यंजन संयोगो की संख्या (३. ४. १) चार्ट मे दी गई है। इनसे इतर सभी व्यजन सयोग शब्द-सीमा घोषित करते हैं, जैसे—

साफ् + कर्
फ़्—क् का सयोग संभव नही
अतएव यहाँ शब्द-सीमा ही है।
साथ + चलो
थ्—च् का संयोग सभव नहीं
अतएव यहाँ शब्द सीमा ही है।

वे स्थितियाँ जहाँ अक्षर-सीमा तथा शब्द-सीमा दोनो सभव हैं।

अन्न	धान् + नहीं
सम्मान	कम् + मन
कम्पन	कम् + पानी
मन्दा	मन् + दो + मन
मन्च	मन् + चाहे
कटक	कन् + टोप

७. ५. ९—बलाघात पर २. ४ मे विचार किया गया है। बलाघात भी अक्षरसीमा के साथ शब्द-सीमा निश्चित करने में सहायता देता है। लेकिन बलाघात हिंदी शब्द सीमा को बिल्कुल निश्चित नहीं कर सकता।

७. ५. १०—शब्द लघुतम सार्थक इकाई होने के कारण अविभाज्य है अतएव शब्दों की सार्थकता भी शब्द-सीमा के निर्धारण में बहुत योग देती है।

७. ५. ११—अनुनासिकता हिंदी शब्द सीमा के निर्धारण मे बहुत सहायता प्रदान करती है। शब्द की आदि सीमा पर अनुनासिकता आँसू, ईंट, ऊँट आदि शब्दो को छोड़कर नही हो सकती।

हिंदी बहुवचन (६. १) में अधिकतर ओं प्रत्यय लगता है अतएव {—ओं} शब्द की अन्त्य सीमा निर्धारित करने में लाभप्रद सिद्ध होगा। मूल शब्द कुछ ही हैं जिनका अन्त्य रूप —ओं युक्त है जैसे—परसों, सरसों आदि।

७. ६ अक्षर-सीमा और शब्द-सीमा

शब्द-सीमा हमेशा अक्षर-सीमा भी होगी, जैसे

आ + गया

पर ठीक इसके विपरीत अक्षर-सीमा शब्द-सीमा हो भी सकती है और नहीं भी, जैसे—

न + आ, 'न' अक्षर-सीमा व शब्द-सीमा दोनों है

आ—वाज्, 'आ' अक्षर-सीमा है पर शब्द-सीमा नहीं है।

शब्द-सीमा भी कहीं-कहीं अक्षर-सीमा का निर्धारण करने में सहायता देती है। अगर कहीं ध्वनियों का अनुक्रम।अइअ। इस प्रकार है तो हिंदी का परंपरागत वर्तनी तथा शब्द की सार्थकता शब्द-सीमा निर्धारण में योग दे रही है। अतएव संक्रमण के कारण एक जगह स्वर के बाद सीमा है तो दूसरी जगह व्यंजन के बाद; जैसे—

।अइअ।	ओ + व	इधर आ	।अ + इअ।
।अइअ।	अव + आ	चलें	।अइ + अ।

आगे संक्रमण के साथ शब्द-सीमा पर पुनः विचार किया जायगा।

७.६.१ शब्द-सीमा और पश्चाश्रित प्रत्यय

पदों तथा शब्दों के पश्चात् ही पश्चाश्रित प्रत्ययों[1] का प्रयोग होता है अतएव ये शब्द-सीमा निर्धारित करते हैं।



७.६.१ १—परसर्गों का प्रयोग तो संज्ञा, सर्वनाम के साथ बाद में होता है, हिंदी में सामान्यतः ये पृथक् लिखे जाते हैं और शब्द-सीमा का निर्धारण करते हैं, जैसे—

राम की पुस्तक

फलतः—राम के बाद शब्द-सीमा

और पुस्तक के पहले शब्दसीमा

---

१. नीडा ने भी 'मार्फ़ोलॉजी' में (४. ७. ६.) 'प्रैक्टिकल लिमिट्स अव द वर्ड' में विचार किया है।

७. ६. १. २—निपात

निपात वाक्य में निश्चित होने वाले वे अंश हैं जो किसी प्रकार की वाक्यात्मक विधि अथवा व्याकरणिक रूढ़ि को अभिव्यक्त करते हैं। इनका प्रयोग स्वतंत्र नहीं होता, पर वाक्य के मध्य प्रयुक्त होने पर सार्थक होते हैं और शब्द-सीमा का निर्धारण करते हैं, जैसे

तो भर, भी, ही।

तो तुमको ही आना है।

इसमें 'तो', 'तुमको' की आदि सीमा और 'ही' तुमको की अंत्य सीमा निर्धारित कर रहा है और तुमको में भी 'को' 'तुम' शब्द की सीमा निर्धारित कर रहा है।

७. ७ समस्त शब्द

समास या समस्त शब्दों में दो स्वतंत्र शब्द समीप में आकर एक नवीन शब्द की रचना करते हैं, मध्य में कोई रिक्त स्थान नहीं होता। वस्तुतः समास 'शब्दावली' की सीमा दोनों शब्दों के यौगिक रूप के अंत में होती है।

स्वतंत्र शब्द	समास शब्द
घोड़ा + गाड़ी	+ घोड़ा–गाड़ी +
घर + घुसा	+ घर–घुसा +

राम ने वहाँ कथा + श्रवण की। वहाँ + कथा–श्रवण + चल रहा है। कुछ समस्त पद तो अपने सर्वथा नवीन रूप को लेकर आते हैं, फलस्वरूप जहाँ उसमें एक अक्षर का ह्रास होता है वहाँ निश्चित रूप से एक शब्द (प्रथम) की सीमा का स्वतः निर्धारण भी हो जाता है,

जैसे—फूल् + तेल् = फुलेल्

नाक् + कटा = नक्टा

अंग् + पोछा = अँगोछा

समस्त शब्द और अक्षर—परिवर्तन

७. ७. १. १ जहाँ दोनों शब्दों के जुड़ने पर भी कोई अक्षर परिवर्तन नहीं होता :–

माँ—बाप्

शान्—शौकत्

भाई—बहिन्

जीवन्—रक्षा

घर्—बाहर

पोस्ट्—आफिस्

७. ७. १ २ जहाँ प्रथम शब्द का अन्त्य दीर्घ स्वरात विवृत अक्षर व्यंजनान्त होकर सवृताक्षर बन जाता है, फलस्वरूप एक अक्षर का ह्रास भी हो जाता है :

घोड़ा + शाला = घुड़् — शाल्
आधा + पका = अध् — पका
आधा + सेर = अध् — सेर यही 'आस्सेर' सधि के साथ।
छोटा + भैया = छुट् — भैया
काला + मुँह = कल् — मुँहा अंत में + आ प्रत्यय लग गया है।
मीठा + बोल = मिठ् — बोल् + आ = मिठबोला
खट्टा + मीठा = खट् — मिट्ठा
पानी + चक्की = पन् — चक्की

७. ७. १. ३ जहाँ प्रथम शब्द अपने मध्य दीर्घ स्वर के साथ व्यजनात होने के कारण संवृत्ताक्षर मे ही बना रहता है पर स्वर ह्रस्व हो जाता है—

हाथ् + कड़ी = हथ् – कड़ी
काठ + पुतली = कठ् – पुतली
गाँठ + बंधन = गठ् – बंधन्
भीख + मंगा = भिख् – मगा
आम + चूर (न) = अम् – चूर् अंत्य 'न' का लोप

७. ७. १. ४ जहाँ द्वितीय शब्द द्वयाक्षरिक से एकाक्षरिक रह जाता है :

मोती + चूर (न–आ) = मोती – चूर
चिड़ी + मार (ना) = चिड़ी – मार
जेब + काट (ना) = जेब – कट्

७. ७. १. ५ जहाँ समस्त शब्द बनने पर मध्य में किसी स्वर या व्यंजन के आगम से अक्षर संख्या बढ जाती है :

स्वर – अ गट + गट = गटागट[1]
स्वर – इ यंत्र + करण = यन्त्रीकरण
मशीन + करण = मशीनीकरण
स्वर – ओ हाथ + हाथ = हाथोहाथ्
कान + कान = कानोकान्

---

१. 'ध्वन्यात्मक शब्दावली'—डा० कैलाशचन्द्र भाटिया, हिंदुस्तानी, वर्ष १९६१ ई०

व्यंजन —म्—लट्ठा + लट्ठा = लट्ठमलट्ठा
खुला + खुला = खुल्लमखुल्ला अन्य
धक्का + धक्का = धक्कमधक्का ध्वन्यात्मक परिवर्तन भी हुए हैं

७. ७. १. ६ अक्षर लोप भी हो जाता है
देखना – भालना = देख्भाल्
खाकर् – पीकर् = खा – पीकर्

७. ७. १. ७ कुछ अन्य रोचक समस्त शब्दावली भी द्रष्टव्य है जिनमे अक्षरों की रचना एक साँचे क अनुसार ढलती जाती है।

	शब्द प्रथम स्वर	शब्द द्वितीय स्वर
टीम् - टाम् टीप्—टाप्ई		आ
धूम्-धाम् पूछ्ताछ्	ऊ	आ
भाग्ना—भूग्ना	आ	ऊ
टाल्ना—टूल्ना		
भागा—भूगा		
काटा—कूटी		
गर्मा-गर्मी	आ	ई
मुक्कामुक्की, लठालठी		
देख्रेख्	ए	ए
सूझ्बूझ् भूल्चूक्	ऊ	ऊ
रोक्थाम्	ओ	आ
भाग्दौड़्	आ	औ
चूस्नाचास्ना, कूटना-काट्ना	ऊ	आ
छीनाछीनी	आ	ई

यहाँ मैने उन सहस्रो समस्त शब्दो को छोड़ दिया है जिनमे कोई अक्षर परिवर्तन नहीं होता अतएव वे शब्द एक प्रकार से हमारे अध्ययन क्षेत्र मे नही आते।

७. ८ पद-सीमा तथा अक्षर सीमा

पद सीमा और अक्षर-सीमा का व्यापक संबंध (६. १) दिखाया जा चुका है। विभिन्न पदों में प्रत्ययो के जुड़ने से अक्षर-सीमा कहाँ और कैसे बदलती

जाती हैं, इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। फिर भी कुछ विशिष्ट उदाहरण इस प्रकार हैं–

(१) अक्षर-सीमा और पद-सीमा एक सी रहती है :–

दास्+ता = दास्–ता
स्त्री+त्व् = स्त्री–त्व
अ +चल् = अ – चल
कात्+ना = कात्–ना

(२) पदसीमा से अक्षर-सीमा हट जाती है—

ठन्+अक् = ठ – नक्
पाठ्+अक् = पा—ठक्
बैठ्+अक् = बै—ठक्
फोक्+अट = फो—कट्

(३) पद-सीमा से अक्षर सीमा ही भिन्न नहीं होती वरन् ध्वन्यात्मक अंतर भी हो जाता है—

पाग् + अड् = पग् गड़
भूख् + अड् = भुक्—कड़्

(४) एक प्रत्यय जुड़ने से पद-सीमा ही नही बदलती किंतु दो अक्षरों की वृद्धि भी हो जाती है—

पुश्त्+ऐनी = पुश् - तै नी

(५) एक प्रत्यय जुड़ने से भी एक अक्षर बढता है और दो प्रत्ययों से भी एक ही अक्षर की वृद्धि होती है पर आक्षरिक सॉचा बदलता जाता है :—

फोक् =हआह
फोक्+ अट् =हआ—हअह
फोक्+अट्+ई=हआह—हआ

(६) बहुवचन विभक्ति जुड़ने से सॉचा मूलतः बदल जाता है

बालक्+ओं=बाल्—कों

७. ६ सगम (संक्रमण[1]) और शब्द—सीमा

बोलने में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि आती जाती है। कुछ ध्वनियाँ बिल्कुल एक दूसरे के समीप आती हैं, कुछ ध्वनियों के मध्य स्थान कुछ

१. अँग्रेजी शब्द जक्चर के लिए हिंदी में अनेक शब्द चल रहे हैं। सर्वप्रथम इस सबंध में लेखक ने देहरादून में भाषा-विज्ञान के ग्रीष्मकालीन सत्र में डा० भोलानाथ तिवारी से वार्तालाप किया था और हिंदी में इसके उदाहरण देखे जाने लगे। इस क्षेत्र में उदाहरणों की ढूँढ में भाई रोशन लाल सुरीरवाला

ने विशेष सहायता दी। 'जंक्चर' के लिए विभिन्न विद्वान् शब्द प्रयोग मे ला रहे हैं :

संधि—प्रो० गोलोक बिहारी धल

विवृति—डा० उदय नारायण तिवारी

योजक
मौनयोजक } डा० भोलानाथ तिवारी

सक्रमण—डा० विश्वनाथ प्रसाद

सगम—इसके लिए मैंने स्वयं सबसे पहले 'संगम' शब्द चलाया जिसका विद्वन्मंडली में विशेष आदर हुआ। इस शब्द को डा० उदय नारायण तिवारी ने भी विशेष पसंद किया और २०-७-१९६१ के पत्र द्वारा मुझे सूचित किया, 'हाँ, जंक्चर के लिए संगम शब्द मुझे भी पसद है। भविष्य मे उसे प्रयुक्त करने का प्रयत्न करूँगा।' डा० भोलानाथ तिवारी ने तो 'भाषा-विज्ञान' के १९६१ के संस्करण मे 'संगम' का ही प्रयोग किया। इधर डा० अम्बा प्रसाद 'सुमन' ने भी अपनी डी० लिट्० की थीसिस में इसका ही प्रयोग किया।

संधि—उपर्युक्त शब्दों में 'सधि' शब्द तो संस्कृत हिंदी में पूर्ववत् दूसरे अर्थ में प्रचलित है—जहाँ पर दो ध्वनियों का परस्पर मिलन हो और किसी पूर्व अथवा पर ध्वनि अथवा दोनों ध्वनियों में किंचित् अथवा आमूलचूल परिवर्तन हो जाय। बोलचाल मे यह प्रक्रिया स्वाभाविक है और कालांतर में वैयाकरण इसके कुछ नियम बना लेते हैं। अँग्रेजी में इस प्रक्रिया के निमित इस छोटे से शब्द के स्थान पर 'मार्फो फोनेमिक चेंज' जैसा लम्बा चौड़ा शब्द प्रयुक्त होता है और यही कारण है कि हमारे छोटे एवं अर्थगर्भित शब्द को पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने भी मान्यता दे दी है, जिनमें उल्लेखनीय हैं ब्लूमफ़ील्ड पाइक, हैरिस आदि। हिंदी में प्रो० घल ने संभवत. संधि शब्द को इसलिए चलाया कि ऐलन महोदय ने 'फ़ोनेटिक्स इन एशियंट इंडिया' में संधि के लिए 'जंकशन' शब्द प्रयुक्त किया है, जिसका उन्होंने स्वयं अभी हाल में प्रकाशित पुस्तक में स्पष्टीकरण दिया है और अब 'जकशन' जैसे भ्रामक शब्द का परित्याग कर आपने 'संधि' शब्द ही प्रयुक्त किया है। आपके विचार 'संधि' (१९६२) में द्रष्टव्य हैं :—

द ब्राड सिग्निफ़िकेंस ऑव् द टर्म जंकशन, एंड जंक्चर इज़ सफ़ीशियेंटली सेल्फ़ एवीडेंट बट देअर टेक्नीकल यूसेज इन लिंग्विस्टिक लिटरेचर इज़ लाइबिल टु कसीडरेबिल एंड आफिन अननोटीफाइड वेरिएशन फ्राम वन स्कूल ऑर ऑथर टु अनोदर एंड दिस इंडेटरमिनेसी इज़ एक्सटेंडेड टु 'संधि' थ्रू इट्स कामन इक्वेशन विद जंकशन। द कॉन्सीक्वेंट डेंजर आफ मिस-

१. सिरका : [सिर् + का] तथा [सिर्का]

स् इ र् + क् आ   स् इ र् क् आ

२. रोली : [रो + ली] तथा [रोली]

र् ओ + ल् ई   र् ओ ल् ई

३. छलकी [छल + की] तथा [छलकी]

छ अ ल् + क् ई   छ् अ ल् क् ई

समय के लिये रिक्त रहता है। एक प्रकार मे वाक्य के अंत में विराम, वाक्यांशों के मध्य अल्प विराम, शब्दो के मध्य अल्पतर विराम और शब्दो के मध्य भी अक्षरो के बीच अल्पतम विराम रहता है, वस्तुतः यह विराम की अवस्था ही संक्रमण है।

जब दो पद या शब्द समीप आते हैं तो पहले पद या शब्द का अंत्य भाग और द्वितीय पद या शब्द का आदि भाग जुड जाता है। यह मिलन की अवस्था ही संगम स्थिति है। यह संगमावस्था निम्नलिखित दो स्थितियो मे रह सकती है :

१—संधि स्थिति
२—संक्रमण स्थिति

संधि स्थिति—इस स्थिति में मिलनावस्था में प्राप्त ध्वनियो में परिवर्तन होता है, जैसे—मार + डाला = माड्डाला।

संक्रमण स्थिति—इस स्थति में दो ध्वनियो का शब्द, पद या अक्षर सीमा पर मिलन होता, पर कोई ध्वन्यात्मक परिवर्तन नही होता—

जैसे— मार + के = मार के

संगम (संक्रमण) सीमा-बिन्दु भी कहा जा सकता है, इसके दो रूप प्राप्त होते हैं :-

---

मिसअण्डरस्टेंडिग मे बी मिनिमाइज्ड इफ वन बिगन्ज बाइ मेकिंग एक्सप्लीसिटसर्टेन अन्डरलाइंग कॅन्सेपन्ज़ विच कन्ट्रीब्यूट अव् द मीनिंग अव् सन्धि इन दिस वर्क। डब्ल्यू० एस० एलन—संधि, १९६२।

विवृत्ति तथा योजक शब्द भी हिंदी मे पूर्ववत् दूसरे अर्थों में व्यवहृत होते हैं।

संक्रमण—यह शब्द अवश्य सार्थक है। अभी हाल मे 'जंक्चर' शब्द के प्रथम प्रथम प्रचारक प्रो० ट्रेगर का एक लेख 'सम थोट्स अव् जंकचर 'स्टडीज् इन लिंग्विस्टिक्स (१९६२) में प्रकाशित हुआ है जिसमे उन्होंने अपने इस चलाये हुए शब्द का इतिहास बताते हुए स्वीकार किया है:—

"इट वुड सीम गुड टाइम टु डिस्कार्ड द ट्रेडीशनल टर्म जक्चर एंड सब्स्टिट्यूट 'ट्रांजीशन' फार इट।"

इस दृष्टि से मै भी संक्रमण शब्द की सार्थकता और उपयोगिता मानता हुआ इसका भी व्यवहार कर रहा हूँ।

अ—ध्वन्यात्मक—वह स्थल जहाँ पर ध्वन्यात्मक इकाइयाँ मिलती हैं अथवा प्रारंभ या अंत में आती हैं,

नल्की = एक शब्द

नल्—की +

—यही आतरिक संक्रमण है।

आ—व्याकरणिक—वह स्थल जहाँ पर व्याकरणिक इकाइयाँ मिलती हैं :-

नल् + की = दो शब्द

नल् + की = दोनो व्याकरणिक रूप हैं।

यही वाह्य मुक्त संक्रमण है।

आंतरिक[1] संक्रमण		बाह्य मुक्त[2] संक्रमण	
तुम्हारे[3]	= म् – ह् के मध्य एक शब्द में	तुम् + हारे	दो शब्द के मध्य सीमा पर
पाली	= आ—ल के मध्य एक शब्द में	पा + ली	शब्द – सीमा पर
पीलिया	= ई —ल् के मध्य एक शब्द में	पी + लिया	शब्द - सीमा पर
सिर्का	= र्—क् के मध्य एक शब्द मे	सिर् + का	शब्द – सीमा पर

संगम (संक्रमण[4])

वाह्य मुक्त - काली + मिर्च् वाक्यांश

आन्तरिक मुक्त - काली — मिर्च् समास

---

१. आन्तरिक संक्रमण भी युक्त (close) और मुक्त (open) दो प्रकार का हो सकता है। युक्त संक्रमण मे कोई चिह्न नहीं लगाया जाता, यह एक शब्द मे दो अक्षरो के मध्य ही होता है। मुक्त संक्रमण मे हाइफन का प्रयोग भी किया जाता है।

२. वाह्य मुक्त संक्रमण को रिक्त स्थान द्वारा दिखाया जाता है और भाषा-विद् धन चिह्न से अंकित करते हैं।

ब्लाख तथा ट्रेगर–एन आउट लाइन ऑव् लिंग्विस्टिक एनेलिसस १९४२ पृ० ४७।

३. 'तु-म्हारे' उच्चारण मे स्थिति बदल गयी है।

४. संगम (Juncture) पर पाश्चात्य भाषा शास्त्रियों ने उल्लेखनीय कार्य किया है, शास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य है :-

हैरिस—स्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स, पृ० ७९-८९।

नीडा—मार्फोलोजी, स्ट्रक्चरल जंक्चर्।

७. ९. १. सगम (संक्रमण) और वाक्य सीमा

सीमातिक विराम[1] भी संगम का ही एक रूप है। इसके दो भेद किये जा सकते हैं :

१—पूर्ण विराम या सीमातिक : इसके लिये सामान्यतः पूर्ण विराम का चिह्न (।) या प्रश्नवाचक चिह्न (?) या आश्चर्यसूचक चिह्न (!) प्रयुक्त होते हैं। इसके तीन भेद हैं :-

(१) सामान्य भाव[2] चलते + हैं। +

(२) प्रश्न वाचक[3] + क्या ? + + कौन ?+

(३) आश्चर्य + अच्छा ! +

२—अल्प विराम या कामा संगम : यह वाक्यांश के मध्य अल्प विराम की अवस्था का द्योतक है और इसके लिये कामा या अल्प विराम प्रयोग किया जाता है जैसे—

आओ चलें,

रोको मत, आने दो।

रोको, मत आने दो।

सगम (संक्रमण) और समयांकन

७. ९. २ सगम में संक्रमण की स्थिति में दो शब्द या पद समीप आकर भिन्न-भिन्न सीमाओं के आधार पर दो भिन्न सार्थक पद या शब्द बना देते हैं।

हॉगन—द सिलेबिल् इन् लिंग्विस्टिक्स, एफ० आर० जे० १९५६, पृ० २१५।

हेफ्नर—जनरल फोनेटिक्स, सन् १९५२, पृ० २००।

ट्रेगर—सम थोट्स आन् जक्चर—स्टडीज इन लिंग्विस्टिक्स, १९६२ पृ० ११-१२।

मिकोहन—इन्टरल जक्चर इन जापानी, वही १९६२।

हिल—इन्ट्रोडक्सन टू लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्ज़, १९५८, पृ० ८७।

१. डा० भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, १९६१ पृ० ३५२।

२. इसी को डा० उदयनारायण तिवारी ने 'अवरोही विवृत्ति' कहा है।

३. इसी को डा० उदय नारायण तिवारी ने 'आरोही विवृत्ति' कहा है। जहाँ पर दो वाक्यों को किसी संयोजक द्वारा मिलाया जाता है वहाँ संयोजक के पूर्व 'निलंबित विवृत्ति' पाई जाती है।

—भाषा शास्त्र की रूपरेखा, पृ० १२७, १९६३ ई०।

वस्तुत देखा जाय तो एक पद और दूसरे पद की सीमा पर कुछ समय[१] तक मौन की स्थिति रहती है। वाक्य-सीमा पर हम अधिक देर मौन रहते हैं, वाक्यांश पर उससे कम और शब्द सीमा पर अल्प मौन रहते हैं। यह मौनावस्था ही शब्द की सीमा स्थिर करती है और आन्तरिक युक्त तथा बाह्य मुक्त संगमावस्था में संक्रमण काल ही सीमाएँ बनाता है। यदि हम काइमोग्राफ पर अपने उच्चारणों का रेखांकन (चित्र) करते हैं तो यह समय-भेद स्पष्टतः परिलक्षित होता है। यहाँ कुछ शब्द के काइमोग्राफिक चित्र दिये जा रहे हैं। प्रथम चित्र[२] संगमावस्था मे शब्द सीमा का है और साथ मे दूसरा अक्षर-सीमा का है।

उदाहरण—

१. सिर् + का	सिर्का
२ रो + ली	रोली
३. छल् + की	छल्की

सगमावस्था और बलाघात

७. ६. ३ सगमावस्था में प्राप्त उदाहरणों और अक्षर-सीमा युक्त उदाहरणों मे ध्वन्यात्मक साम्य होते हुए भी बलाघात की दृष्टि से व्यतिरेकी भेद होता है।

'सिर्का	आन्तरिक सीमा युक्त एक शब्द
'सिर् + ' का	शब्द सीमा युक्त दो शब्द
'लौटरी	सज्ञा शब्द (एक)
'लौट् + 'री	शब्द सीमा युक्त दो शब्द
'काली–'मिर्च	समस्त शब्द
'काली + 'मिर्च	दो पृथक् पृथक् शब्द

इस प्रकार एक शब्द मे एक ही प्रधान बलाघात होगा और दो शब्दों मे दो स्थान पर बलाघात होगा। ध्वन्यात्मक साम्य होते हुए भी जो सबसे बड़ा

---

१. ट्रान्ज़ीशन फिनोमना इन्वोल्व टाइमिंग, एंड वेअर देअर इज मोर दैन वन कांइड आफ टाइमिंग इन्वाल्वड इन द ट्रांज़ीशन फ्राम ए सेगमेंटल फ़ोनीम टु व्हाट फ़ालोज़ इट, इट इज नेसेसरी टु सेट अप ट्रान्ज़ीशन फ़ोनीम। ट्रेगर, जी० ऐल०—सम थाट्स आन जक्चर, एस० आई० एल० १६६२, पृ० ११-१२.।

२. सतर्क रहने के कारण इसमे शब्द सीमा पर समय कुछ अधिक है यह संक्रमण काल (चिह्न + से अंकित) पाँच सेंटी सैकंड्स से भी कम तक रह सकता है।
हिल, ए० ए०—इन्ट्रोडक्शन टु लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्ज़, १९५८, पृ० २४

तत्त्व संगमावस्था में अक्षर-सीमा और शब्द-सीमा में भेद स्थापित कर रहा है वह बलाघात है।

सगमावस्था और हाइफन का प्रयोग

७.६.४ समस्त शब्दावली में हाइफन[1] का प्रयोग शब्द-सीमा ही निर्धारित नही करता वरन् वह आतरिक युक्त सक्रमण भी घोषित करता है और शब्द सीमा पर वाह्य मुक्त संक्रमण से व्यतिरेकी सबंध स्थापित करता है उदाहरणार्थ

'मूँग + 'फली	=	दो भिन्न-भिन्न पदार्थ
'मूँग – फली	=	एक समस्त शब्द 'मूँगफली'
'गुलाब् + 'जामुन्	=	फूल तथा फल विशेष
'गुलाब् – जामुन्	=	समस्त शब्द, एक मिठाई विशेष
'जल् + 'पान्	=	पानी-पीना दो शब्द
'जल – पान्	=	एक समस्त शब्द—नाश्ता
'लाल् + 'पीली	=	दो पृथक् पृथक् रंग
'लाल् – पीला (होना)	=	गुस्से होना (वाक्याश मे)

इस उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि सगमावस्था का अक्षर-विवेचन तथा शब्द-सीमाकन मे विशेष योग होता है। सगमावस्था की विविध अवस्थाएँ

ट्रेगर महोदय ने और भी कई कारण बताये हैं :—

१. ए ट्रांज़ीशन फ़ानीम इज इस्टेब्लिश्ड वेअर एवर देअर आर फोनेटिक मैनर्ज़ आव ट्रांज़ीशन .फ्राम वन टु अनोदर सच दैट डिफरेंसेज़ इन द टाइमिंग, स्ट्रेचिंग रिलीज, पिच कुाउ टूर्ज़, इटेंसिटी, स्कोप एंड द लाइक अव ए सिक्वेंस अव सेगमेंटल ऐंड सुप्रासेगमेंटल फोनीम्ज़ कंट्रास्ट विद अदर अकरेंसेज़ अव् फ़ोनेटिकली सिमिलर सेग्मेंटल ऐंड सुप्रासेग्मेंटल फ़ोनीम्ज़।

१. हाइफ़न के प्रयोग पर ये विचार द्रष्टव्य है :—द बेसिक परपस अव ए कंपाउंड वर्ड इज टु एक्सप्रेस एन अइडिया दैट इज़ एनटायरली डिफरेंट मीनिंग ऑर ग्रामैटिकल फंक्शन फ्राम दैट एक्सप्रेस्ड बाई द अनकनेक्टड कपोनेंट वर्ड्ज़ (रेड कोट, ए गारमेंट, रेडकोट-ए सोलजर) द बेसिक सिक्वेंस अव लेटर्ज एंड दस फेसिलिटेट अंडरस्टैंडिंग (ब्रास-स्मिथ नाट ब्रासस्मिथ)।
बाल, ए० एम०–द कंपाउडिंग एंड हाइफ़नेशन्ज़ अव् इंगलिश वर्डज १९५१, पृ० ३।

संज्ञा	विशेषण	क्रिया + वाचक पद
मुड़ासा + = एक सिर पर पहनने का वस्त्र		मुड़ा + सा
	खुलासा + = स्पष्ट	खुला + सा

नाम अथवा विशेषण-संज्ञा की तरह प्रयुक्त	संयुक्त क्रियाएँ
पीलिया + = रोग विशेष	पी + लिया
होली + = त्यौहार विशेष	हो + ली
रोली + = एक लाल रंग का पदार्थ	रो + ली
खाली + = 'रिक्त'	खा + ली
पीली + = 'पीत रग का'	पी + ली
पोलो + = एक खेल विशेष	पो + लो
पोली + = खाली	पो + ली
खाजा + = खाने का एक पदार्थ	खा + जा
रोजा + = रोजा का विकृत रूप	रो + जा
पीपा + = छोटा कनस्तर	पी + पा
खोपड़ी + = सिर	खो + पड़ी

सज्ञा	भिन्न-भिन्न क्रिया रूप	क्रिया + संज्ञा
लोमा + = एक पदार्थ		लो + माँ
माला + = एक पदार्थ		मा + ला
दिल्लगी + = मजाक		दिल् + लगी
सर्ला + = सरल का		सर् + ला
	सो + डाला	सोडा + ला
	बता + साले	बतासा + ले

गंज्ञा	क्रिया विशेषण + क्रिया
नाहटा + = एक व्यक्ति विशेष	ना + हटा

सज्ञा + क्रिया		क्रिया + क्रिया
लाटा + ला		ला + टाला
लाला + ला	ला + लाला	

संज्ञा	ध्वन्यात्मक क्रिया
सीसी = तरल पदाथ रखने के लिए कॉच की बनी हुई वस्तु	सी + सी

संज्ञा	क्रिया	भिन्न क्रिया का भतकालिक रूप
तोला + = एक वस्तु विशेष	तोला	तो + ला
तब्ला + = एक वाद्य		तब् + ला
संज्ञा		अव्यय + संबोधन
हीरे + = 'हीरा' का बहुवचन रूप		ही + रे[1]
नाम संज्ञा		क्रिया + संबोधन
हट्री + = एक खिलौना		हट् + री
आरी + = एक औज़ार		आ + री
लाट्री (अंग्रेजी शब्द) = भाग्यफल		लौट् + री
संज्ञा		संज्ञा + संबोधन
नागरी + = चतुर औरत		नाग् + री
विशेषण + संज्ञा		भिन्न विशेषण तथा संज्ञा
नव् + तमाल्		नवत् + माल्
सुनारी + = सुनार की पत्नी सुनारिन का दूसरा रूप ।		सु + नारी

---

१. निराला ने प्रयोग किया है : पास ही रे, हीरे की खान
खोजता कहाँ और नादान ।।
गीतिका, गीत-२५ ।

अध्याय ८

शब्द तथा अक्षर की आवृत्ति

अध्याय ८

शब्द तथा अक्षर की आवृत्ति

८.० हिंदी भाषा में अभी तक आवृत्तिपरक अध्ययन का अभाव[1] है। हिंदी शब्दो तथा अक्षरो की आवृत्ति अपने मे पूर्ण विषय है, जिस पर पृथक् से कार्य होना चाहिए। यह एक राष्ट्रीय महत्त्व का विषय है जिसका संपादन शीघ्र ही होना चाहिए।

इस अध्याय में शब्दो की आवृत्ति के लिए मैने केंद्रीय सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित हिंदी की 'बेसिक शब्दावली' पुस्तिका मे प्रयुक्त शब्दावली को आधार बनाया है। अधिकतम आवृत्ति के साँचो का प्रतिशत भी साथ मे है। एक प्रतिशत से कम के साँचो का प्रतिशत नही दिया गया है।

---

१. इस क्षेत्र में गिना चुना ही कार्य हुआ है :

वर्णों की आवृत्ति पर—१ डा० धीरेंद्र वर्मा का एक महत्त्वपूर्ण लेख 'हिंदी वर्णों का प्रयोग', द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ सं० १९९०, पृ० ४२६ !

२. टाइपराइटर तथा टेलीप्रिंटर की कमेटी की रिपोर्ट १९५८-५९ परिशिष्ट १४ तथा एच०।

शब्दों की आवृत्ति पर—अभी तक कोई उल्लेखनीय कार्य नही हुआ है। केवल प्रेमचंद साहित्य में प्रयुक्त अंग्रेजो की आगत शब्दावली का आवृत्तिपरक अध्ययन मैने अपनी पी-एच० डी० की थीसिस 'हिंदी में प्रयुक्त अंग्रेजी आगत शब्दों का भाषा तात्त्विक अध्ययन' में प्रस्तुत किया है।

इधर हिंदी की बेसिक (आधारभूत) शब्दावली पर कई कार्य सम्पन्न हुए है जिनमे पूना (दकन कालेज) तथा आगरा (केन्द्रीय हिंदी संस्थान) के कार्य लिये जा सकते हैं। लेखक ने स्वयं इस दिशा में कार्य किया और आवृत्ति के आधार पर हिंदी की बेसिक शब्दावली (२००० शब्द) प्रस्तुत की है।

डा० कैलाशचंद्र भाटिया-हिंदी की बेसिक शब्दावली, सन्१९६८ अलीगढ़ मु० विश्वविद्यालय, अलीगढ़

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जिस साँचे मे केवल एक ही शब्द है वहाँ उस शब्द को साँचे के सम्मुख लिख भी दिया गया है जिससे यह स्पष्ट हो सके कि वह साँचा भी अपनी उस अधिकतम आवृत्ति के शब्द के कारण कम महत्त्वपूर्ण नहीं, उदाहरणार्थ, आँगन, आजकल, आसपास, आबादी, क्या, क्यो, मुँह, स्त्री, मँहगा[१] आदि लिये जा सकते हैं।

इस अध्याय के द्वितीय भाग में अक्षरो का आवृत्तिपरक अध्ययन दिया जा रहा है इस अध्ययन मे से एकाक्षरिक शब्दो का आवृत्तिपरक अध्ययन वस्तुतः शब्दो के अध्ययन मे भी हू-ब-हू लिया जा सकता है। हिंदी मे एकाक्षरिक शब्दो[२] की आवृत्ति अधिकतम है फिर भी अन्य भाषाओ की तुलना मे यह संख्या पर्याप्त नही।

८. १ शब्दों का आवृतिपरक अध्ययन :

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मत्रालय, भारत सरकार, देहली के तत्त्वावधान मे तैयार की गई २०.० शब्दो की बेसिक शब्दावली का आक्षरिक साँचो के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। वर्गीकृत शब्दावली को साँचो की आवृत्ति के आधार पर नियोजित किया गया है। इस शब्दावली के आधार पर यह देखा गया है कि अधिकतम आवृत्ति। इआ-हआ। साँचे की है। यहाँ अधिकतम आवृत्ति से तात्पर्य है कि भिन्न भिन्न शब्द केवल २००० शब्दो के आधार पर हैं, एक ही शब्द के अनेक बार के प्रयोग के आधार पर नहीं। इस दृष्टि से अध्ययन दूसरे भाग मे किया गया है। अधिकतम आवृत्ति से निम्नतम आवृत्ति के साँचो को निम्नलिखित प्रकार से रखा जा सकता है :

शाब्दिक	साँचा	शब्द संख्या	प्रतिशत
	इआ-हआ	१९७	९.८
	इअइ-हअ	१९१	९.५

---

१. इस मँहगाई के युग में अधिकतम आवृत्ति इस शब्द की ही होनी चाहिए।

२. कोनिग महोदय ने जबलपुर मे ४००० शब्दो के आधार पर अधिकतम आवृत्ति एकाक्षरिक शब्दो की निकाली थी (४६ प्रतिशत), मिलाइये अन्य भाषाओं की एकाक्षरिक शब्दावली से

अंग्रेजी	१२६	१०७	७९ प्रतिशत
			नोट : थार्नडाइक के आधार पर प्रतिशत ६२.६
फ्रेंच	६९	६५	९० प्रशित
रूसी	२०३	८२	४१ प्रतिशत

बी० शिबयेव-एक्सट्रीम्ज़ इन लैंग्वेज फार्म्ज़, १९५६।

साँचा	शब्द संख्या	प्रतिशत
हआह	१५६	७.८
हअह	७१	३.५
हअ-हआह	७०	३.५
हअ-हआ	६४	३.२
हआ-हअह	६४	३.२
हअ-हअ-हआ	५६	३.०
हअह-हअह	५८	३.०
हअ-हअह	५५	२.७
हआह-हआ	४७	२.३
हअहह	४६	२.३
हआँह	३३	१.७
हअह-हआह	३३	१.७
हआ-हआह	२५	१.२
हअ-हअह-हआ	२१	१.०
हअह-हआ-हआ	२०	१.०
हओह-हआ	१६	
अह-हआह	१६	
अह-हआ	१६	
हआँ हआ	१५	
हआ	१५	
आ-हआ	१४	
आह	१४	
हअह-अअ	१३	
हआहह	१३	
हहआह	१२	
हआ-हआह-हआ	१२	
हआह-हआ	११	
अह-हअह	११	
हअ-हआ-आ	१०	
अ-हआह	१०	
हअह-हअ-हआ	८	
हअ-हअह-हअह	८	

साँचा	शब्द संख्या
हअ हआ-हअह	८
हआ-आ	८
अ-हअह	८
आ-हअह	८
हअ-हअह	८
हअ-हअहह	७
हहअ-हआ	७
अ-हआ-हआ	७
हआँ	६
हअ-हअ	६
हऑ-हअह	६
हआह-हअह	६
हअ हआह-हआ	६
हअ हऑ	५
अह-हआ-हआ	५
अहह	४
ऑह	४
अ हआ	४
आ-हआह	४
हहआ-हअह	४
हआ-हअ	४
हऑ-हआह	४
हअ-आ	४
हअ-हअ-आ	४
हआ-हआ-हआ	४
हअ-हआ-हआह	४
आँ-हआ	३
आह-हआ	३
हआ-हहआ	३
हअह-हहआ	३
हहआह	३
हअहह-हआ	३

साँचा	शब्द संख्या	
हआ-हआँ	३	
हआह-हआह	३	
हअँह-हआ	३	
हआ-अह	३	
अह-हआ-हआह	३	
हआ-हअह-हआ	३	
हऑ-हआ-हआह	३	
अह	२	
आ-हअहह	२	
अह-हहआह	२	
अ-हआ-हअह	२	
अ-हआह हआ	२	
अ-हअह-हआह	२	
अह-हअह-हअह	२	
अह-हआ-हअह	२	
हआहहह	२	
हआह-अआ	२	
हअह-हअ	२	
हअह-हअहह	२	
हहआ-हआह	२	
हअ-आँ	२	
हआह-हअ	२	
हअह-हआ-हअह	२	
हआह-हआ-हआ	२	
हअह हआ-आ	२	
हअँ-हआह-हआ	२	
हआ-हअ-हअह	२	
हआ-हअ हआ	२	
हअह-हहआह	२	
हअ-हअ-हअ	२	
हअ	१	कि
आँ-हअह	१	आँगन

साँचा	शब्द संख्या	शब्द
अ-हहअह	१	अमृत
अँह-हआ	१	उँग्ली
आह-हअह	२	आज्कल्
आह-हआह	१	आस्पास्
आ-हहआ	१	आशा
अ-हअ-आ	१	अगुआ
अ-हआ-आ	१	अगाऊ
अह-हअह	१	अद्रक्
अह-हआह	१	अनुवाद् (उ फुसफुसाहट मात्र है)
आ-हआ हआ	१	आबादी
अँ-हआ-हआ	१	अँधेरा
अह-हआह-हआ	१	अट्ठान्वे
आ-हआह-आह	१	आशीर्वाद
अ-हअह-हअ	१	अटत्तर्
अह-हहआ हआ	१	इक्यासी
अह-हहआ-हअह	१	इक्यावन्
हहआ	१	क्या
हहआँ	१	क्यों
हअँह	१	मुँह्
हहअह	१	व्रत्
हहहआ	१	स्त्री
हअहह हअह	१	संग्ठन्
हआ-हअहह	१	सैकंड्
हअहह-हआह	१	मर्त्बान्
हआहह-हआ	१	यात्रा
हअह हहअह	१	पंद्रह्
हअह-हआह	१	जंजीर्
हहअह-हआ	१	श्रद्धा
हहअ-हआह	१	प्रणाम
हहआँ-हअ	१	क्योंकि
हआँह-हआ	१	पैँत्रा
हआँ-हअ	१	चूँकि

साँचा	शब्द संख्या	शब्द
हऑह-हआ	१	घोंस्ला
हआँह-हऑ	१	पाँच्वाँ
हअह-हआँ	१	परसों
हआ-आँ	१	रोआँ
हआ-हआँ-हअ	१	हालाँकि
हआँ-हअ-हआ	१	बाँसुरी
हअ-हअँ-हआ	१	मँहगा
हअ-हअ-हअ	१	समिति
हआ-हआ-आ	१	चौपाई
हअ-हअ-हआह	१	बनियान्
हआ-हआ-हआह	१	साहूकार
हअ-हअँह हआ	१	पहुँच्ना
हअ-हअ-हअह-हअह-हअह	१	दुपहर्
हआ-हअह-हअह	१	चौहत्तर
हअ-हअह हआह	१	पहल्वान्
हआ-हअह-हआह	१	रोशन्दान्
हआह-हआ-आ	१	कार्रवाई
हअह-हआ-आह	१	सत्ताईस
हअह-हआह-हआ	१	फट्कारना
हहआह-हअ-हआ	१	प्रार्थना
हअह-हअह-हआ	१	पगडंडी
हअह-हआह-हआ	१	विद्यार्थी
हअ-हअ-हहआ-हआ	१	गुरुद्वारा
हअ-हअ-हआ हआ	१	सकुचाना
हअह-हअ-हआ-हआ	१	फड़फड़ाना, इसी मे कुछ अन्य शब्द भिनभिनाना, हिनहिनाना मुस्कराना, सरसराना आदि भी आ सकते हैं।

८. २. अक्षरों की आवृत्ति

८. २. ० अक्षरो की आवृत्ति पर अभी तक कोई उल्लेखनीय कार्य (प्रकाशित रूप मे) नहीं हुआ है। यह आवृत्तिपरक अध्ययन भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। विदेशो मे इस दिशा मे भी प्रशंसनीय कार्य हुए हैं। बिना इस कार्य के हिंदी मे शीघ्रलिपि पर कोई वैज्ञानिक कार्य नहीं किया जा सकता।

चीन के आक्रमण होते ही राष्ट्रीय संकट में प्रधान मंत्री प० नेहरू ने जो राष्ट्र के नाम संदेश दिया था उस (भाषण) को ही मैने इस अध्ययन का आधार बनाया है।

अधिकतम आवृत्ति। हआ। साँचे की है जिसमें, ही, थे, था, भी, सा, तो, वे, मे, मै, जा, दे, ले, दी, है, जो, ही, भी का, की, के, को, से, वो, या आदि शब्दावली आती है।

इस साँचे की आदि स्थिति तथा अंत्य स्थिति में आवृत्ति इस प्रकार है

। हआ। साँचा	आदि स्थिति	अन्त्य स्थिति
	५७८	६१४
प्रतिशत[३]	३३	३५

अवधी[४] में भी 'हआ' साँचे की ही अधिकतम आवृत्ति ४६ प्रतिशत है।

८. २. १ एकाक्षरिक साँचे :

साँचा	संख्या
हआ	३३५
हअह	१३३
आह	३३
हआँ	७६

---

१. गोडफ्रे डेवी—रिलेटिव फ्रीक्वेंसी अव् इंगलिश स्पीच् साउंड, १९२३। इस पुस्तक में शब्दों, अक्षरों और ध्वनियो का आवृत्तिपरक अध्ययन किया गया है।

२. हिंदी शीघ्रलिपि पर कुछ कार्य अवश्य हुआ है पर वह पिटमैन इंस्टीट्यूट की तुलना में नगण्य है।

३. मिलाइये : अँग्रेजी में सिलेबिल की प्रतिशत : हअह —३३.५
अह —२०.३
हअ —२१.८

४. डा० बाबूराम सक्सेना—एवेल्यूशन अव् अवधी, सन् १९३७, पृष्ठ ८६।

हग्राह	७५
हग्रहह	४३
हग्र	४१
ग्रह	३५
हग्रांह	४
ग्रा	१
हग्राहह	१
हग्राहहह	१
हहग्रा	१
हहग्राह	१

८. २. २ द्व्याक्षरिक साँचे :

हग्रह-हग्रा	१०८
हग्रा-हग्रा	७५
हग्र-हग्रा	७३
हग्र-हग्राँ	७२
ग्रह-हग्रा	५९
हग्रा-हग्रह	३६
हग्र-हग्रह	२९
हग्राह-हग्रा	२७
हग्रा-ग्रा	२१
हग्र-ग्रा	२०
हग्र-हग्राह	१५
हग्रा-हग्राँ	१५
ग्रा-हग्रा	१४
हग्रह-हग्रह	१४
हग्रह-हग्राह	१२
ग्रा-हग्राह	६
हहग्राँ-हग्र	८
ग्र-हग्रा	७
ग्राह-हग्रा	७
हग्रह-हग्राँ	७
हग्रह-हग्र	७
ग्र-हग्रह	६

साँचा	संख्या
हअाह-हअाह	६
हअ-आ	५
अह-हआ	४
हआ-अह	४
हआॅ-हआ	४
आ-आ	३
अह-हअह	३
अह-हआह	३
हअ-हअहह	३
हआ-हअ	३
हआ-हआह	३
हआह-हआहह	३
अ-हआह	२
आ-हआह	२
आह-हअह	२
हअह हअ	२
हआ-आ	२
हआ-हअहह	२
हआह-हअह	२
हहअ-हआ	२
अहह-हआह	१
आ-हआँ	१
आँ-हआ	१
हआ-आॅ	१
हआ-हअहहह	१
हआँ-हआँ	१
हआह-हआँ	१

८. २. ३. त्र्यक्षरात्मक साँचे

हअ-हआ-हआ	७१
हअ-हआ हअह	१४
हअ-हआ-आ	१२
आ-हआ-हआ	११

हअ हअइ हअह	६
हआ-हअ-हऑ	५
हअइ हअह-हआइ	५
हआह-हआ-हअह	५
अइ-हअ-हआइ	४
अ-हआ-हआ	४
हअ हआ-हऑ	४
हअह-हआ हआ	४
हआ-हअ अ	३
हआ-हअ-हआ	३
हआ-हआ-हआ	३
अइ-हआँ-हआ	२
हअ-हअह--हअहइ	२
हआ-ऑ-हआ	२
हआ-हआ-हआइ	२
हअ-हऑ-हआ	२
हआह-हआ-हऑ	२
हअ-हअ-हऑ	२
अ-हअ-हआइ	१
अ-हआइ-हऑ	१
अइ-हअ-हआ	१
अइ-हआ-हऑ	१
अइ-हअह-हआ	१
हऑ-हअ-आ	१
हअ-हऑ-हआ	१
हअ-हआइ-हआ	१
हअ-हअइह-हअहइ	१
हॲ-हआ-हआ	१
हआ-हऑ-हअ	१
हआ-हऑ-हआ	१
हअह-हआ-आँ	१
हअह-हआ-हऑ	१
हआ-हअह-हअह	१
हअ-हआ-हआइ	१

हअह-हअह-हआ	१
हअह हआ-आ-।	१
हअह हअ-हआ-।	१
हअह-हऑ-हआ	१
हअह-हआ हआ	१
हआह-हआ-हअह	१
हअहह-हअह हआह	१
हहअ-हआ-हआह	१

८. २. ४ चतुरक्षरात्मक साँचे

हअ-हआ-ऑ-हआ	२
हअ-हआ अह-हआ	१
हअ हआ-हअ हआह	१
हअ-हअह हआ-आ	१
हअ हअह-हआ-हऑ	१
हआ हअ-हआ-हअह	१
हआ-हआ-हअ हआँ	१

८. २. ५ इस अध्ययन के आधार पर नेहरू जी की भाषण-गति का मापाकन इस प्रकार किया जा सकता है:—

१. अक्षरों की आवृत्ति[1]

	प्रति मिनट	प्रति सैकंड
	१०६	२

---

१. मिलाइए—प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट के भाषण की आवृत्ति से :

१ मिनट मे १०५ अक्षर

१ सैकंड मे २.५ अक्षर

प्रेसीडेंट ट्रूमैन के ६ अगस्त १६४५ के भाषण की आवृत्ति से

१ मिनट मे १६३ अक्षर

१ सैकंड में ३.६

धल-ध्वनि-विज्ञान, १६५८, पृष्ठ २१६ ।

तथा

डेनियल जोंस महोदय ने एक मिनट मे ३०० अक्षर तथा एक सैकंड में ५ अक्षर का औसत स्टैंडर्ड माना है। एन आउटलाइन अव् इंगलिश फ़ोनेटिक्स, नियम ४३ ।

२. प्रति अक्षर ध्वनियों का औसत[२]

३. ६५ एक अक्षर में

---

२. अँग्रेजी में प्रति अक्षर तीन ध्वनियों का औसत निकला है।

पाइक— फोनेटिक्स, सन् १९५८, पृष्ठ २०।

नोट: जापान में छिबा महोदय ने हिंदुस्तानी के १३ वाक्यों के आधार पर यंत्रों की सहायता से कुछ निष्कर्ष निकाले है। वे इस प्रकार हैं:—

१. एक अक्षर में ध्वनिग्रामों की संख्या - औसत २·३५

२. दो ध्वनियो तथा तीन ध्वनियो वाले अक्षरों में अनुपात ६५:३५

३. एक अक्षर के लिए औसतन समय ०·१८७ सी० एस०

४. प्रत्येक ध्वनिग्राम का समय-औसत ०·८० सी० एस०

Tsutomu Chiba--Study of Accent, Japan, 1935.

अध्याय ६

उपसंहार

६.० संपूर्ण अध्ययन पर सामूहिक रूप मे दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत अध्ययन मे जहाँ एक ओर अक्षर तथा शब्द की सीमा—सबंधी सैद्धातिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है, वहाँ दूसरी ओर हिंदी से पर्याप्त उदाहरण देकर सिद्धातो एवं नियमो की पुष्टि की गई है। समस्त अध्ययन दो भागो मे विभाजित है :—

१. अक्षर–सीमा

२. शब्द–सीमा

प्रथम तथा द्वितीय अध्याय अक्षर तथा शब्द की सीमा के सामान्य सिद्धातो के लिए पृष्ठभूमि स्वरूप हैं।

तृतीय अध्याय मे अक्षर सीमा के सामान्य तथा विशेष सिद्धातों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है, चौथे मे इन सिद्धातो के आधार पर हिंदी के आक्षरिक साँचे प्रस्तुत किये गये हैं। पाँचवें अध्याय मे विदेशी आगत शब्दावली का आक्षरिक विवेचन है।

सातवें अध्याय मे शब्द सीमा का सैद्धातिक विवेचन किया गया है। संक्रमण (संगमावस्था) के परिवेश मे हिंदी की शब्द सीमाएँ प्रस्तुत की गई हैं। इसी आधार पर इस अध्याय में पद सीमा पर भी विचार विवेचन करते हुए शब्द सीमा से भेद स्पष्ट किया गया है। छठे अध्याय मे मिश्र शब्दावली का आक्षरिक विवेचन है। चौथे तथा पाँचवें अध्याय मे विवेचित एकाक्षरिक शब्दावली शब्द सीमा भी घोषित कर रही हैं।

आठवें अध्याय मे शब्दों तथा अक्षरो का आवृत्तिपरक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

८.१ 'अक्षर-सीमा' एक अत्यंत विवादास्पद विषय है। पहले तो यह कार्य ही बहुत ही दुष्कर है, फिर हिंदी का क्षेत्र बहुत विशाल है, फलतः उच्चारण में पर्याप्त विविधता मिलती है, जब मैने अध्ययन का सूत्रपात किया और अपनी अक्षर सीमाकित चिटों को गुरुजनो और मित्रो के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत किया तो अनेक बार भयंकर मतभेद प्रकट हुए। कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि मैंने बर्रे के छत्ते में हाथ डाल दिया है, पर धीरे-धीरे सिद्धात स्पष्ट होकर निश्चित होते गये और तब सपूर्ण कार्य यंत्रवत् होता गया।

आरंभ मे आशा यह थी कि प्रयोगशाला मे यत्र अक्षरो की सीमा निर्धारण मे सहायक होगे किंतु अनुभव कुछ दूसरा ही रहा। यंत्र अक्षर-सीमा बनाने वाले तत्वो का विश्लेषण कर सकते हैं तथा मुखर ध्वनि को स्पष्ट कर सकते हैं, पर एक अक्षर कहाँ समाप्त हो रहा हैं और दूसरा अक्षर कहाँ से प्रारंभ, यह बताने मे असमर्थ होते हैं। इसी आधार पर कुछ व्यक्तियो ने अक्षर के अस्तित्व को ही अस्वीकार करना प्रारभ कर दिया था जिसकी चर्चा हेफ़नर महोदय ने 'जनरल फ़ोनेटिक्स' पृष्ठ ७३ मे की है। "यत्र अक्षर-सीमा स्पष्ट करने मे असमर्थ हैं, और उसका अस्तित्व ही नहीं है", ऐसा जो लोग मानने लगे उनको यस्पर्सन ने (लेहरबुख् डेर फोनेटिक, पृष्ठ १०३) करारा उत्तर दिया कि यह बात तो कुछ ऐसी ही रही कि यदि दो चोटियो के मध्य की घाटी को हम ठीक ठीक दो भागो मे विभाजित करने मे असमर्थ हैं तो स्पष्ट चोटियो के अस्तित्व को भी अस्वीकार कर दें। तत्पश्चात् स्टेट्सन महोदय ने इस क्षेत्र मे महत्वपूर्ण शोध प्रस्तुत कर क्रांति उपस्थित कर दी। परिणामतः विद्वानो के मध्य पुनः अक्षर तथा शब्द सीमा पर विचारो का आदान-प्रदान प्रारभ हुआ।

हमारे यहाँ भी ऋषियो ने उच्चारण पर विशेष बल दिया था और अपनी श्रवण-शक्ति के आधार पर ही अक्षर-विभाजन का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया था। अक्षर-विभाजन का यह कार्य इतना संतोषजनक था कि वेद मंत्रो का आधार ही यह बना, अशुद्ध अक्षर के उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाता था। प्रसन्नता का विषय है कि दोनों (प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो) द्वारा किये गये अध्ययन एक दूसरे के परिपूरक सिद्ध हुए हैं। इधर अभी अभी ५ जून १९६३ के पत्र द्वारा मेरे मित्र श्री राम प्रकाश दीक्षित ने टेक्सास विश्वविद्यालय (यू०एस०ए०) अमेरिका से सूचित किया कि उन्होंने मेरे अनुरोध पर स्पैक्टोग्राफ़ की सहायता से 'अक्षर' की सीमांकन संबंधी कार्य किया है। उस अध्ययन के फलो की मैं प्रतीक्षा मे हूँ। शीघ्र ही ऐसी आशा है कि 'स्पैक्टोग्राफ़' का प्रयोग क० मुं० हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय में भी किया जा सकेगा। जब तक स्पैक्टोग्राफ़[1] के परिणाम हमको ज्ञात नही होते 'काइमोग्राफ' के परिणामो से ही संतोष करना पड़ेगा।

फिर भी यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि कुछ शब्दो का अक्षर-विभाजन विवादास्पद है। आवश्यकता इस बात की है कि इन विवादास्पद शब्दों

१. इधर मैने स्वयं भौतिक शास्त्र के रिसर्च स्कालर श्री श्यामसुंदर की सहायता से पिलानी के टेक्नोलोजी के विश्वविद्यालय में प्राप्त स्पैक्टोग्राम पर अक्षरांत अ' की स्थिति पर प्रयोग किये हैं, जिनके आधार पर निष्कर्ष 'हिंदुस्तानी' पत्रिका में प्रकाशित हो रहे हैं।

की, परिनिष्ठित उच्चारण के आधार पर, अक्षर-सीमा का निश्चय कर लिया जाय और उन सीमाओं का कोशों में संकेत भी हो। 'ध्वनि-अनुरूप लेखन' की आवश्यकता पर श्री राजेंद्र द्विवेदी ने तथा 'कोशों में उच्चारण-संकेतों की आवश्यकता' पर डा० हरदेव बाहरी ने 'भाषा' के नवंबर १९६१ के अंक में बल दिया है। इस महत्त्व को स्वीकार करते हुए डॉ० बाबूराम सक्सेना ने यह आशंका प्रकट की है। 'देवनागरी लिपि अक्षरात्मक है, ध्वन्यात्मक नहीं, किंतु उसको अब हम बदलकर ध्वन्यात्मक नहीं कर सकते।'

विवादास्पद शब्दों की अक्षर-सीमा-निर्धारण का कार्य केंद्रीय सरकार के संरक्षण में किसी संस्था को करना चाहिए। इस अध्ययन का शास्त्रीय पक्ष तथा उसका व्यावहारिक पक्ष भी उसमें अवश्य कुछ न कुछ योगदान देगा। कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जिनमें पर्याप्त सोच-विचार की आवश्यकता है, उदाहरणार्थ एक शब्द 'ज्योत्स्ना' ले सकते हैं। भाई रमेशचंद्र मेहरोत्रा ने इसका विभाजन 'ज्योत्-स्ना' करते हुए तर्क दिया है कि हिंदी की आदि स्थिति में 'स्न' का गुच्छ स्वीकृत है, जैसे स्नान, स्निग्ध, स्नेह। मैंने इसका विभाजन 'ज्योत्स्-ना' किया है और तर्क दिया है कि हिंदी की अंत्य स्थिति में 'त्स' का गुच्छ स्वीकृत है, जैसे, वत्स्।

इस अध्ययन को दो भागों में बाँटा जा सकता है :

अ—सैद्धांतिक आ—व्यावहारिक।

सैद्धांतिक पक्ष जहाँ भाषाविदों को अक्षर-सीमा तथा शब्द सीमा निर्धारण में सहायक होगा वहाँ व्यावहारिक पक्ष से निम्नलिखित क्षेत्रों में सहायता मिल सकती है :

अ—अहिंदी भाषा-भाषियों के लिए (हिंदी का शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए)।

आ—विदेशों में हिंदी का प्रचार तथा प्रसार करने के लिये तथा विदेशियों को शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए।

इ—शीघ्रलिपि में।

ई—टंकन में—पंक्ति के अंत में शब्द कहाँ और किस प्रकार तोड़ना चाहिए और हाइफ़न का प्रयोग कैसे करना चाहिए।

उ—प्रेस में—प्रत्येक पंक्ति के अंत में शब्द कहाँ और कैसे तोड़ना चाहिए। पत्रों में अनेक बार इस प्रकार का विभाजन देखा गया है।

विफ्—लता
भोज—नालय
रा—गमन जैसे हास्यास्पद टुकड़े मिलते हैं।

तारों में कभी कभी इतना भ्रष्ट रूप हो जाता है कि अर्थ का अनर्थ हो जाता है अजमेर गये, घर पर लिखकर आया 'आज मर गये'। इसमें तो रोमन लिपि का भी प्रताप है। तेजी से तारों में नागरी का प्रयोग बढ रहा है। अगर सतर्कता से काम नहीं लिया गया ता इससे भी भयंकर रूप सामने आ सकते हैं। और व्यर्थ मे ही नागरी के विरोध मे वातावरण बन सकता है।

उच्चारण का महत्त्व भी कम नहीं है। यदि मनुष्य मे शब्दो के ठीक ठीक उच्चारण की क्षमता नही है तो वह पशु ही है। पाणिनि-शिक्षा (२५) मे इसका अत्यधिक महत्त्व प्रतिपादित किया गया ह।

इंगलैड मे परिनिष्ठित उच्चारण को सुरक्षित रखने के लिये सबसे अधिक ध्यान बी० बी० सी० तथा पब्लिक स्कूलो मे काम करने वाले व्यक्तियो क उच्चारण पर रखा जाता है। खेद है कि पाणिनि क देश की सरकार इस दिशा में उदासीन है। मेरा सुझाव है कि आकाशवाणी मे व्यक्तियों की नियुक्तियों में इस बात को ध्यान मे रखना चाहिए। कभी-कभी इतने भ्रष्ट उच्चारण सुनाई देते हैं कि अर्थ का अनर्थ हो जाता है। क्या हम आशा करें कि भविष्य मे सरकार हिंदी के शुद्ध उच्चारण की ओर अधिक सक्रिय होगी।

९. २ हिंदी के ध्वनि प्रक्रियात्मक अध्ययन पर अभी तक कोई व्यवस्थित तथा अधुनातन यन्त्रों की सहायता से किया गया कार्य सामने नहीं आया है यद्यपि मेरे कुछ मित्र देश-विदेश मे इसी विषय पर कार्य कर रहे हैं। जब तक उन लोगों के कार्य समक्ष आते ह यह काय अपने में महत्त्वपूर्ण है। इसमें मेरी निजी शोध स्वर-संयोग, व्यजन-गुच्छों को आदि, मध्य तथा अन्त्य स्थितियाँ, अन्त्य स्थिति में 'अ' का लोप, घोष-अघोष, महाप्राण ध्वनियो तथा स्वरों का मात्राकन तथा बलाघात की विभिन्न स्थितियाँ है।

९. ३ चौथे अध्याय मे आक्षरिक साँचे प्रस्तुत हैं जिनमें एकाक्षरिक साँचों को पूर्ण बनाने की कोशिश की गई है (व्यंजन तथा स्वरों के संभव संयोग)। यद्यपि मैं पूर्णता का दावा नहीं करता हूँ और इतने विशाल भू-भाग में बोली जाने-वाली हिंदी भाषा, जिसमे प्रतिक्षण सैकड़ों शब्द गढ़े जा रहे हो, तथा अन्य भाषाओं से खपाए जा रहे हो, के संबंध में किया भी कैसे जा सकता है तो भी एकाक्षरी शब्दावली किसी भाषा का मूलाधार होती है। इस दृष्टि से ये एकाक्षरिक साँचे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। हिंदी मे इनका प्रतिशत ४९ है जो विश्व की अन्य विकासशील भाषाओं की तुलना में बहुत कम है (अँग्रेजी—७९ प्रतिशत, फ्रेंच—९० प्रतिशत, रूसी— ७१ प्रतिशत)। हमारे साँचो में सैकड़ों स्थान रिक्त पड़े हुए हैं, आज

आवश्यकता इस बात की है कि नए शब्द इन रिक्त स्थानों में ही भरे जाँय तो एक ओर सरलता से खप सकेंगे तथा दूसरी ओर हिंदी की ध्वन्यात्मक तथा ध्वनिग्रामीय व्यवस्था में गड़बड़ी न होगी।

विदेशी शब्दावली के लिये 'आक्षरिक साँचे, बहुत महत्वपूर्ण हैं। अगर साँचा पूर्ववत् किसी भाषा में है और स्थान रिक्त पड़ा हुआ है तो विदेशी शब्द इतनी आसानी से चल पड़ता है कि किन्ही क्षेत्रो मे अपना ही समझ लिया जाता है, उदाहरणार्थ—

। हअ-हआ । साँचा हमारे यहाँ है जिसमें प्रथम व्यंजन यदि क् और द्वितीय व्यंजन ल् के साथ संभावित संयोग और हिंदी में प्रयुक्त सार्थक शब्दो को लिया जाय तो पता चलता है हिंदी में 'कला' तथा 'कली' दो ही शब्द चलते हैं इसमें (साँचे मे) अभी १७–१८ स्थान रिक्त पडे हुए है 'कुली', किला', 'किले' दूसरी भाषाओ के शब्द इसमें आसानी से खप गये और आज ये आगत शब्द हमारे हैं, पराए नही । हमने देखा कि नए बाँटों के प्रयोग में 'किलो' चलने लगा । 'किलो, इतनी आसानी से क्यों चलने लगा ? इस पर कभी विचार किया गया ? ग्राम का तद्भव 'गाँव' अधिकतम आवृत्ति पर न चल रहा होता तो सरकार द्वारा चलाया गया शब्द 'ग्राम' झमेले मे पड़ जाता, अब तो अच्छा यह है कि जिन क्षेत्रो में तत्सम शब्द 'ग्राम' चल रहा है वहाँ से भी उसका प्रयोग समाप्त कर दिया जाय जिससे भविष्य मे किसी प्रकार का भ्रम न हो। कुछ स्थानों पर दिक्कत हो सकती हैं, जैसे सेवाग्राम वहाँ प्रसंग से अर्थ निश्चित होगा।

९. ४ मिश्र शब्दावली से संबद्ध जो अध्ययन प्रस्तुत किया गया है उसका महत्व भी कम नहीं। मैंने तो अध्यनार्थ हिंदी की समस्त धातुओं को आक्षरिक साँचो मे विभक्त किया है और उनमे विभिन्न आक्षरिक साँचो के प्रत्यय जुड़ने से क्या नवीन आक्षरिक साँचे बनते हैं इसका पूर्ण अध्ययन किया है, इस अध्ययन का कुछ भाग ही इस अध्याय मे नमूने के तौर पर लिया गया है। समस्त भाग जान-बूझकर इसमें नहीं दिया गया।

९. ५ शब्द सीमा वाला अध्ययन अपनी दिशा में सर्वथा नया है । 'शब्द' के अर्थ और दार्शनिक पक्ष पर तो हमारे यहाँ वैयाकरणों तथा दार्शनिकों ने पर्याप्त विचार किया है। ध्वन्यात्मक आधार पर शब्दों की सीमा-निर्धारण का कार्य बहुत कम किया है। इस अध्याय में ही 'संक्रमण' (संगमावस्था) पर भी विचार किया गया है। यह तो पश्चिम मे विशेष प्रचलित शब्द 'जंक्चर' (प्रथम प्रयोगकर्ता-ट्रैगर) के पर्याय के रूप में चलाया गया है।

परिशिष्ट १.१

अक्षर की परिभाषाएँ

Bloomfield, L. Since syllabification is a matter of the relative loudness of phonemes, it can be re-enforced or opposed by adjustments of stress.

Language. 1956, Page 125

Firth, J. R. Let us regard the syllable as a pulse or beat and a word or piece as a sort of bar length or grouping of pulses.

Sounds and Prosodies, T. P. S. 1948, PP 128-152

Gleason, H. A. A syllable nucleus will be defined as a vowel, or a vowel and a following semivowel.

An Introduction to Desciiptive Linguistics, 1955, Page 28

Hala, B. The Syllable is a separate act of phonation enabled by the transition from the stricture (closure or narrowing) of speech organs to the aperture (release of passage for Voice) Autour du Probleme de la Syllabe, Phonetica, 1960, Page 159-168.

Haugen, Einar The syllable be defined as the smallest unit of recurrent phonemic sequences.

The Syllable in Linguistic Description, F. R. J., Page 216.

Heffner, R-M. S. The essence of a syllabic is that it shall be gennemically the element of major sonority in its syllable, or genetically the chief carrier of the emitted breath pulse of the syllable.

General Phonetics, 1952, Page 76, Section 4.01.

Jakobson, R. The distinctive features are aligned into simultaneous bundles called phonemes, they are concatenated into sequences the elementary pattern underlying any grouping of phoneme is syllable.

Fundamentals of Language, 1956, Page 20

Jones, D, Each sound which constitute a peak of prominence is said to be syllable and the word or phrase is said to contain as many syllables as there are peaks of prominence

An Outline of English Phonetics, Page 55.

Mario Pei, The Syllable is spoken as well as a written unit. It contains of a group of sounds, usually a Vowel preceded or followed (or both) by one or more consonants.

Language for Everybody, 1958, Page 102.

O'Connor, J. D. Minimal pattern of phoneme-combination with a Vowel unit as nucleus preceded and followed by a consonant unit or permitted consonant combination.

Vowel, Consonant and Syllable, Word, 1953 PP. 103-122.

Pike, K. L. Phonemic syllable will be constituted of a single phonetic syllable with some rearrangement of the grouping in accordance with structural pressures.

Phonemics, page 246.

Saussure, F.D. A sound that makes a vocalic impression in vocalic peak. Vocalic peaks have also been called sonants, and all other sounds in same syllable con-sonants,............Sonants and consonants, designate functions within syllables.

Course in General Linguistics, 1960, Page 57-58.

Stetson, R. H. The syllable is one in the sense that it consists essentially of a single chest-pulse, usually made audible by a Vowel, which may be started or stopped by a chest movement.

Motor Phonetics, 1951.

Sturtevant, E. H. During a sentence the intensity constantly varies in a series of waves of uneven height. These waves are the syllables.

The Nature of Language, Page 21.

Thrax : The syllable is the linking of Vowels and consonants or several vowels with consonants, as in gar, bous,

Art of Grammar.

परिशिष्ट १. २

उदयनारायण तिवारी : अक्षर शब्द के अंतर्गत उन ध्वनिसमूहों की छोटी छोटी इकाई को कहते हैं जिनका उच्चारण एक सा हो, तथा जिन्हें विभक्त करके बोलने पर उसका को अर्थ न प्रकट हो।

भाषाशास्त्र की रूपरेखा, पृ० १२६

बाबूराम सक्सेना संयुक्त ध्वनियों के छोटे से छोटे समूह को अक्षर कहते हैं औ अक्षर की ध्वनियों का एक साथ (अति सन्निकटता) ? उच्चारण होता है। प्राचीन-भाषा-विज्ञों का विचार था ि स्वर ही अक्षर बनाने मे समर्थ होता है और जितने व्यंजन उसके साथ लिपटे हों उनको साथ लेकर वह अक्षर कहलाता है।

सामान्य भाषाविज्ञान, पंचम स०, पृ० ७१

भोलानाथ तिवारी : एक या अधिक ध्वनियों (या वर्णों) की उच्चारण की दृष्टि से ऐसी अव्यवहित इकाई, जिसका उच्चारण एक झटके में किया जा सके, अक्षर है।

भाषा-विज्ञान, सन् १९६१, पृ० ३५४

सिद्धेश्वर वर्मा : 'अक्षर का विशेष गुणधर्म इसकी प्रतीति (प्रामिनेंस) है

परिशिष्ट १. ३

अथर्ववेद प्रातिशाख्य : स्वरोऽक्षरम्। ९३।

ऋग्वेद प्रातिशाख्य : सव्यञ्जनः सानुस्वार : शुद्धो वापि स्वरोऽक्षरम्। ८, ३२।

वाजसनेयी प्रातिशाख्य : स्वरोऽक्षरम्। १, ९९।



परिशिष्ट २. १

सहायक सामग्री

Allen, W. S 1. Phonetics in Ancient India, Oxford Press, 1953.
2. Sandhi—Mouton & Co,' S-Gravenhage-1962.

Ball, A. M –The Compounding & Hyphenation of English words, Funk & Wagnalls Co. New York–1951.

Bhatia, K. C.-Consonant Sequences in Hindi, Indian Linguistics Saxena Vol.

Dineen, F. P.—An Introduction to General Linguistics. Holt Rinehart & Winston, 1967.

Bloomfield, L–Language, Henry Holt & co. New York–1956.

Firth, J. R.—Sounds and Prosodies–Transactions of the Philological Society–1948.

Gleason, H.A.-An Introduction to Descriptive Linguistics. Holt, Rinehart and Winston New York—1961.

Godfrey Dewey—Relative Frequency of English Speech sound—1923.

Hala, B —Phonetica · 7, 1961.

Harris, Z. S —Structural Linguistics—University of Chicago Press, 1956

Haugen, Einar—1. The Syllable in Linguistic Description, For Roman Jakobson, 1956
2. Syllabification in Kutenai, I. J. A. L. July 1956.

Heffner, R-M. S —General Phonetics-University of Wisconsin Press, Madison, 1952.

Hill, A. A.—Introduction to Linguistic Structures, Harcourt, Brace & world Inc, New York 1958.

Hockett, C. F.—A Manual of Phonology, Waverly Press, Baltimore 1955.

Jespersen, O —Philosophy of Grammar—George Allen & Unwin Ltd. London, 1924, Ed. 1958.

Jakobson, R.—Fundamentals of Language, 1956.

Jones, D.—An Outline of English Phonetics, W. Heffer & Sons Ltd. Cambridge 1956.
Phoneme, 1950.

Kelk ar, R. —Phonology and Morphology of Marathi, Thesis unpublished Sept. 1958.

Liddell & Scotts—Greek English Lexicon Oxford.

Malmberg Bertil—Phonetics, Dover. INC., New York, 1963.

Masud Hussain—A Phonetic and Phonological Study of the Word in Urdu, Urdu Depts., M. U. Aligarh.

Miller —Language & Communication, 1951.

Moulton, W. G.—Syllable Nuclei and Final Consonant in German, F R J. 1956.

Nyquist, Alvar—A Note on the Syllable, Le Maitre phonetique, July Dec. 1962.

O' Conner, J. D. & Trim—Vowel, Consonant and Syllable, Word, 1953.

Pike, K. L —Phonetics, The Usity. of Michigan Press, 1951.

Pike, K L. -Phonemics, the Usity. of Michigan, 1954.

Ramesh Chandra Malhotra—Hindi Syllabic Stuucture—Indian Linguistics, Turner Volume

Sapir, E. — Language, Harcourt Brace & Co. New York, 1949

Saussure, F. D.—Course in General Linguistics—Peter Owen Ltd., London, 1960.

Saxena, B R.—Evolution of Awadhi, 1937.

Sharma, Aryendra—Basic Grammar of Hindi, Ministry of Education Govt, of India, 1958.

Shibyev, V.—Extremes in Language Forms, T. L. C. D., 1956

Siddheshwar Verma—Critical Studies in the Phonetic Observations of Indian Grammasians, 1929.

—Etymologies of Yaka, 1953

Stetson, R. H.-Motor Phonetics, Ameistemdem North Hollond Publishing Co., 1951.

Swadesh, Morris–On the Analysis of English Syllable–Language Vol. 23.

Tstuomu Chiba—Study of Accent, Japan, 1935.

Trager, G. L.—Some Thoughts on Juncture—Usity. of Buffalo Studies in Linguistics—Vol. 16, No. 1, 1962.

परिशिष्ट

२. २ सहायक सामग्री

१. अथर्ववेद प्रातिशाख्य—सं० ह्विटने, जर्नल आव् अमेरिकन ओरियंटल सोसाइटी, ८वाँ भाग।

२. ऋग्वेद प्रातिशाख्य—सं० मंगलदेव शास्त्री, सन् १९११।

३, उदयनारायण तिवारी—भाषाशास्त्र की रूपरेखा सन् १९६३, भारती भंडार, प्रयाग।

४. उदयनारायण तिवारी—हिंदी के ध्वनिग्राम, हिंदुस्तानी, इलाहाबाद।

५. कामताप्रसाद गुरु—हिंदी व्याकरण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, सन् १९५८।

६. कैलाशचद्र भाटिया—अक्षरांत 'अ' (स्पैक्टोग्राफ़िक चित्रो पर आधारित) हिंदुस्तानी (यंत्रस्थ)।

हिंदी की बेसिक शब्दावली, मु० विश्वविद्यालय, अलीगढ, १९६८।

हिंदी में अँग्रेजी आगत शब्दो का भाषा तात्त्विक अध्ययन, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, १९६७।

७. गोलोक बिहारी घल—ध्वनि विज्ञान, प्रेम बुकडिपो, आगरा, सन् १९५८।

८. तैतरीय प्रातिशाख्य—सं० वी० वी० आर० शर्मा, सन् १९३०।

९. धीरेंद्र वर्मा—हिंदी भाषा का इतिहास, हिदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद्, सन् १९४९।

हिंदी वर्णों का प्रयोग, द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, सं० १९९०, पृ० ४२६।

१०, पतंजलि—व्याकरण महाभाष्य, डेक्कन एज्युकेशन सोसायटी, पुणेँ, शकाब्द. १८८१।

११. पाणिनीय शिक्षा, सं० मनमोहन घोष, कलकत्ता विश्वविद्यालय, सन् १९३८

१२. बच्चूलाल अवस्थी—'ऋ' और 'रि', भाषा, जून, १९६२।

१३. बाबूराम सक्सेना—परिवर्तनशील हिंदी, साहित्य संदेश, भाषाविज्ञान, विशेषाक १९५७।

१४. बाबूराम सक्सेना—सामान्य भाषा-विज्ञान, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, पंचम सं०।

१५. भोलानाथ तिवारी—भाषा विज्ञान, किताब महल, सन् १९६१।

१६. भोलानाथ तिवारी—शब्द : परिचय और वर्गीकरण; समेलन पत्रिका, भाग, ४८, अंक १ ।

१७. महावीरशरण जैन–कुछ प्रमुख पारिभाषिक शब्दो का परिचय, हिंदुस्तानी ।

१८. मुरारीलाल उप्रेति - हिंदी प्रत्यय विचार, थीसिस, कं० मु० हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय ।

१९. रमेशचद्र जैन– हिंदी समास रचना का अध्ययन, थीसिस, कं० मु० हिंदी तथा भाषा विज्ञान, विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय ।

२० रमेशचंद्र मेहरोत्रा—हिंदी मे बलाघात और स्वर लहर, राजर्षि अभिनंदन ग्रंथ, १९६० ।

२१ रमेशचंद्र मेहरोत्रा—हिंदी संज्ञा के दस या ग्यारह रूप, भाषा, जून १९६२ ।

२२. राजेंद्र द्विवेदी—ध्वनि अनुरूप लेखन, भाषा, नवंबर १९६१ ।

२३. रामसुरेश त्रिपाठी—शब्द : एकत्ववाद और नानात्ववाद, ना० प्र० पत्रिका, मालवीय शती विशेषाक ।

२४. वाजसनेयी प्रातिशाख्य—स० वी० वी० शर्मा, मद्रास विश्वविद्यालय, सन् १९३४।

२५, शिवनाथ—अर्थतत्त्व की भूमिका, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, सं० २०१८

२६. श्यामसुंदर दास—भाषा रहस्य, स० १९९२ ।

२७. सभापति का भाषण—हिंदी साहित्य संमेलन, नवम अधिवेशन, बंबई ।

२८. सिद्धेश्वर वर्मा—अक्षर, भाषा, जनवरी १९६३ ।

२९. हजारीप्रसाद द्विवेदी—कवि के रेआयती अधिकार, विचार और वितर्क सं० २००२ ।

३०. हरदेव बाहरी—हिंदी कोशो में उच्चारण संकेतो की आवश्यकता, भाषा, नवंबर १९६१ ।

३१. विश्वनाथ प्रसाद—'य' और 'व' का रागात्मक निरूपण, भारतीय साहित्य, अंक २, १९५६ ।

३२. विश्वनाथ प्रसाद—'यकार' और 'वकार' के रागात्मक रूप, भारतीय साहित्य, अंक २, १९५७ ।

३३. हिंदी का परिनिष्ठित स्वरूप, भारतीय साहित्य, अक्टूबर १९५७ ।

अनुक्रमणिका

विषयक्रम

लेखक-क्रम